नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 320, नई दिल्ली, सोमवार 19 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

03 अंक ज्योतिष, ग्रह और क्रिस्टल का गूढ़ संबंध
06 आधुनिकता का मृगतृष्णा: आज की युवा पीढ़ी और कैंसर को दिया जा रहा मौन निमंत्रण
08 करमजीत सिंह रिंटू ने भवानी नगर में विकास कार्यों के उद्घाटन करके निर्माण करवाएं

डीटीसी के अवसान की ओर दिल्ली?

जनता पूछे – बस सेवा या बस कहानी!

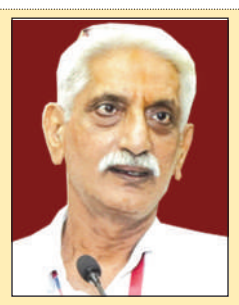

लेखक:- संजय कुमार बाठला
परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

संपादकीय परिचय:- दिल्ली का सार्वजनिक परिवहन हमेशा से राष्ट्रीय राजधानी की जीवनरेखा रहा है। दिल्ली परिवहननिगम (डीटीसी) न केवल शहर की गति का प्रतीक रहा, बल्कि पर्यावरण-मित्र और सस्ती बस सेवा का भरोसा भी था।

हालाँकि, हाल के वर्षों में निगम की घटती भूमिका और कर्मचारियों के अन्य विभागों में स्थानांतरण ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि कहीं सरकार स्वयं इस ऐतिहासिक संस्था को धीरे-धीरे समाप्त तो नहीं कर रही।

प्रस्तुत लेख में संजय कुमार बाठला ने इसी चिंताजनक प्रवृत्ति पर विस्तार से चर्चा की है — **क्या यह प्रशासनिक पुनर्गठन है या सार्वजनिक परिवहन को कमजोर करने की योजना?**

* "**जनहित में सवाल:** क्या दिल्ली की बस सेवा सत्ता की राजनीति की चपेट में?
* ""**डीटीसी पर संकट:** दिल्ली का सार्वजनिक परिवहन दिशाहीन होता जा रहा है।
* ""**राजधानी की सवारी सेवा खतरे में** — सरकारों की चुप्पी पर जनता की पुकार।
* ""**दिल्ली की सड़कें फिर निजीकरण की ओर?** डीटीसी के भविष्य पर गहराया संशय।
* ""**सार्वजनिक परिवहन या राजनीतिक प्रबंधन?** दिल्ली में डीटीसी की किस्मत अधर में।"

दिल्ली की सड़कों पर चलने वाली बसें कभी राजधानी की पहचान हुआ करती थीं। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने वर्षों तक लाखों यात्रियों को सस्ती और सुरक्षित यात्रा की सुविधा दी। लेकिन अब यह संस्था अस्तित्व के संकट से गुजर रही है।

हाल के सरकारी आदेशों और नीतिगत फैसलों से ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे-धीरे डीटीसी का ढांचा कमजोर किया जा रहा है।

शीला दीक्षित सरकार के समय नई सीएनजी बसों के साथ डीटीसी ने पर्यावरण मित्र परिवहन मॉडल पेश किया था। मगर आम आदमी पार्टी के शासनकाल में बसों की नई खरीद लगभग ठप पड़ गई। इसका सीधा असर निगम की परिचालन और राजस्व स्थिति पर पड़ा।

अब, भाजपा-नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार पर भी यह आरोप लग रहे हैं कि वह इसी नीति को जारी रखते हुए निगम की संपत्तियों के पुनः उपयोग की दिशा में आगे बढ़ रही है।

हाल ही में जारी आदेश में डीटीसी के 340 कर्मचारियों को राजस्व विभाग में स्थानांतरित किया गया है। यह कदम इस आशंका को और बल देता है कि निगम के परिचालनिक ढांचे को व्यवस्थित रूप से कमजोर किया जा रहा है।

सवाल यह उठता है कि जब डीटीसी की सबसे बड़ी आय स्रोत – बस सेवा – को ही प्रभावित किया जा रहा है, तो निगम टिकेगा कैसे?

सरकार चाहे किसी भी दल की हो, सार्वजनिक परिवहन को घाटे का सौदा मानना जनता के हित में नहीं है। बस सेवा कोई व्यावसायिक उद्यम नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व है। यदि डीटीसी जैसी संस्थाएं खत्म होती हैं तो दिल्ली में निजी वाहनों की संख्या और प्रदूषण दोनों बढ़ेंगे, जबकि जनता की सुविधा और सुरक्षा घटेगी।

पिछले दो दशकों की नीति याद करें — ब्लू लाइन बस सेवा को सुरक्षा कारणों से बंद किया गया था, क्योंकि निजी संचालक अनुशासन और रखरखाव के मानक पूरे नहीं कर पा रहे थे। अब वही मॉडल यदि दोबारा लागू होता है, तो यह इतिहास से सबक न लेने जैसा होगा।

डीटीसी की संपत्तियां आज भी सबसे अधिक मूल्यवान हैं, जिन पर दिल्ली सरकार सीधा कब्जा नहीं कर सकती। लेकिन यदि निगम को 'घाटे में चलने वाला' घोषित कर दिया जाए, तो उसकी भूमि और परिसंपत्तियों के पुनर्विकास का रास्ता खुल जाएगा। यही स्थिति अब धीरे-धीरे बनती दिखाई दे रही है।

दिल्ली के नागरिक हमेशा से एक ऐसी बस सेवा के हकदार रहे हैं जो सुरक्षित, समयानुसार और सुलभ हो। यदि सरकारें सार्वजनिक परिवहन को नीतिगत प्राथमिकता से बाहर रखती हैं तो यह केवल एक निगम का अंत नहीं, बल्कि जनहित की उस भावना की अवहेलना होगी जिसने कभी डीटीसी को दिल्ली की पहचान बनाया था।

अब समय है कि सरकार साफ़ करे — क्या दिल्ली की सड़कें फिर से जनता की सवारी से भरेंगी या फिर निजी वाहनों और प्रदूषण के धुएं में जनता की उम्मीदें खो जाएंगी?

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

डिजिटल इंडिया में विधवाएं और बुज़ुर्गों की ऑफलाइन उम्मीदें

डिजिटल इंडिया युग में पेंशन प्रक्रिया जब से 'ऑनलाइन' घोषित हुई, तब से इंतजार में बुज़ुर्ग और विधवाएं 'ऑफलाइन' उम्मीदें लेकर बुज़ुर्ग और विधवाएं बैठे हैं पेंशन के इंतज़ार मे

संजय कुमार बाठला, मुख्य संपादक, सामाजिक मुद्दों के विश्लेषक

दिल्ली के सरकारी दफ्तरों की खिड़कियों के बाहर पेंशन फाइल लिए जो बुज़ुर्ग, और विधवाएं खड़े नजर आते थे वह अब साइबर कैफे की कतारों में खड़े नजर आते हैं।

* अब उन्हें पहले की तरह धूप नहीं जलाती, पर हा सर्वर डाउन जरूर हो जाता है।

* अब पहले की तरह फाइल गायब होने की चिंता नहीं रही पर अब "आनलाइन फॉर्म भर कर सक्सेसफुली" के स्क्रीनशॉट का इंतजार बढ़ गया बदल — पर नतीजा तकरीबन वही है, उन्हें इंतज़ार पहले भी था, और अब भी है।

जबसे दिल्ली में "जनकल्याण" के नारे डिजिटल स्क्रीन पर चमकने लगे हैं, तबसे पेंशन भी तकनीकी दौर में 'क्लिक' हो गई है — क्लिक कीजिए, अप्लाई कीजिए, गलती से अप्लाई हो गई तो फिर सिस्टम के जवाब का इंतज़ार कीजिए।

दिल्ली सरकार की रणनीति देखिए बिना किसी पूर्व सूचना के आनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू करवाते हैं रात के दस बजे और रात तीन बजे ही कर दिया जाता हैं बंद।

यह गणित दिल्ली सरकार के अतिरिक्त सिर्फ वही समझ सकता है जो नींद के बजाय सर्वर के साथ जागता हो।

दिल्ली सरकार की रणनीति देखिए एक विधानसभा क्षेत्र के लिए आवेदनों की सीमा दो सौ सीमित जब की आवेदन कर्ता हजारों, किस गणितज्ञ ने तय की सीमा और क्यों यह रहस्य अब भी कायम है।

सच में ऐसा लगता है जैसे पीएम घोषणाएं और दिल्ली सरकार द्वारा चालित/घोषित जनकल्याण योजना जनकल्याण के प्रति नहीं, अपितु कोई सीमित 'कोटा' स्कीम की घोषणा हो।

सबसे बड़ा आश्चर्य यह कि सरकार के पास हर नागरिक का आधार और उम्र का विवरण है और उसके बाद भी जानबूझ कर बुज़ुर्गों और विधवाओं को वेबसाइट पर खुद को साबित करने की मजबूरी बना रही है।

यह सवाल अब सीधा और स्पष्ट है — योजना आई जरूर, पर पहुँची कितनों तक?

तकनीकी साक्षरता की कमी के कारण लाखों बुज़ुर्ग और विधवाएं या तो एजेंटों पर निर्भर हैं, या उन साइबर कैफे के मालिकों पर जो तकनीकी सेवा के नाम पर पेंशन की ताक़त का नया बाज़ार चला रहे हैं।

* तकनीक सुविधा का माध्यम बननी चाहिए थी, बाधा का नहीं।

* सरकार चाहे तो आधार-डेटा के आधार पर स्वतः पात्रता तय कर पेंशन जारी कर सकती है।

हर ज़िले में एक 'सहायता केंद्र' या मोबाइल वैन भी बुज़ुर्गों और विधवाओं के लिए बड़ा सहारा साबित हो सकते हैं। यह सिर्फ सुविधा नहीं — सम्मान की पुनर्स्थापना होगी।

जनहित में बस यही कहना है — अगर पेंशन फिलहाल नहीं पहुँची है तो कम से कम "आपका आवेदन प्रक्रिया में है" का एसएमएस भेज दीजिए। ताकि इन बुज़ुर्गों और विधवाओं को यह महसूस हो सके कि डिजिटल इंडिया ने उन्हें भुलाया नहीं है, बस इंतज़ार की लिमिट थोड़ी बढ़ा दी है।

दिल्ली में वरिष्ठ नागरिक और विधवा पेंशन के लाखों आवेदन अब भी लंबित।

* विधानसभा क्षेत्रवार सीमित कोटा आवंटन से असमान वितरण की आशंका।

* आवेदन पोर्टल के समय और सर्वर क्षमता पर कई शिकायतें दर्ज।

* डिजिटल साक्षरता की कमी के चलते बुज़ुर्ग और विधवाएं अब भी बिचौलियों पर निर्भर।

जिस ऐप से रोजाना सब्ज़ी और दूध मंगाते हैं, उसी ने दिल्ली में एक बुज़ुर्ग महिला की जान बचा ली।

पिंकी कुंडू

सुबह करीब 8 बजे, शिवम की दादी घर में अचानक गिर पड़ीं। होश नहीं था, बस दिल धड़क रहा था। तुरंत 112 पर कॉल किया गया, लेकिन एंबुलेंस आने में देरी हो रही थी।

इसी बीच शिवम को याद आया कि उन्होंने हाल ही में ब्लिंकिट ऐप पर एंबुलेंस इन 6 मिनिट फीचर देखा था।

बिना समय गंवाए ऐप खोला, रिक्वेस्ट डाली।

1 मिनट के अंदर कन्फर्मेशन कॉल आ गया और सिर्फ 4–6 मिनट में एंबुलेंस घर के दरवाज़े पर थी।

एंबुलेंस में मौजूद दो नर्सों ने तुरंत बीपी और शुगर चेक की। दादी की ब्लड शुगर 40 तक गिर चुकी थी। फौरन ड्रिप दी गई और करीब 10 मिनट में होश लौट आया। इसके बाद उन्हें सुरक्षित अस्पताल पहुँचाया गया।

सब ठीक होने के बाद शिवम ने फीस पूछी उन्हें लगा यह पेड सर्विस होगी लेकिन जवाब चौंकाने वाला था। ब्लिंकिट की तरफ से ये सर्विस मुफ्त है। ये शिवम ने अपने अनुभव में साझा किया।

बहुत से लोगों को इस सर्विस के बारे में पता भी नहीं होगा।

बुराड़ी क्षेत्र के नागरिकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सूचना

परिवहन विशेष न्यूज

बुराड़ी का राशन कार्यालय बंद कर दिया गया है, जिसके कारण अब क्षेत्रवासियों को राशन से संबंधित किसी भी समस्या या शिकायत के लिए गुलाबी बाग जाना पड़ेगा। यह निर्णय आम जनता के लिए अत्यधिक असुविधाजनक एवं जनविरोधी है।

दिल्ली सरकार के इसी तुगलकी और जनविरोधी निर्णय के विरोध में 19 जनवरी को सुबह 11 बजे कौशिक एन्क्लेव पेट्रोल पंप के सामने स्थित राशन कार्यालय पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

इस विरोध प्रदर्शन में क्षेत्र की सभी RWA, सामाजिक संस्थाओं एवं आम नागरिकों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर जनहित में आवाज़ बुलंद करने की अपील की जाती है।

अपील:- आइए, एकजुट होकर इस जनविरोधी फैसले का विरोध करें।

बुराड़ी का राशन कार्यालय बंद

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार: "साइबर स्लीपर सेल्स: संप्रभुता पर मौन घेराबंदी"

पिंकी कुंडू

भारत का साइबर युद्धक्षेत्र अब केवल धोखाधड़ी तक सीमित नहीं रहा — यह अब घुसपैठ का युद्धक्षेत्र बन चुका है।

जांचों ने एक खतरनाक गठजोड़ उजागर किया है: चीनी अपराध सिंडिकेट्स और पाकिस्तान-आधारित साइबर ऑपरेटर्स मिलकर भारत के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में गहराई तक साइबर स्लीपर सेल्स स्थापित कर रहे हैं।

ये केवल धोखेबाज़ नहीं हैं—ये डिजिटल विध्वंसक हैं, जिनका लक्ष्य राष्ट्रीय सुरक्षा को अस्थिर करना, जनविश्वास को कमजोर करना और महत्वपूर्ण अवसंरचना को पंगु बनाना है।

साइबर स्लीपर सेल्स क्या हैं? छिपे हुए डिजिटल ऑपरेटिव्स — मानव या बॉट — जिन्हें निष्क्रिय अवस्था में रखा जाता है और आदेश मिलने पर सक्रिय किया जाता है। सक्रिय होने पर ये हमला करते हैं:

1. डेटा चोरी (Data Exfiltration) – संवेदनशील सरकारी और वित्तीय जानकारी चुराना
2. अवसंरचना को नुकसान (Infrastructure Sabotage) – ग्रिड, दूरसंचार, परिवहन, बैंकिंग को बाधित करना
3. आतंकी फंडिंग (Terror Funding) – वॉलेट्स और क्रिप्टो के माध्यम से धन प्रवाह करना
4. दुष्प्रचार अभियान (Disinformation Campaigns) – झूठी खबरें फैलाकर समाज को विभाजित करना
5. भर्ती और कट्टरपंथीकरण (Recruitment & Radicalization) – युवाओं को चरमपंथी नेटवर्क में फँसाना

निष्क्रिय अवस्था (Dormant Phase)

1. सामान्य उपयोगकर्ताओं की तरह दिखते हैं।
2. सोशल मीडिया अकाउंट्स, ऐप्स, वॉलेट्स के रूप में संचालित होते हैं।
3. चुपचाप डेटा इकट्ठा करते हैं और नेटवर्क में अपनी पकड़ बनाए रखते हैं।

सक्रिय अवस्था (Activation Phase)

1. गोपनीय डेटा लीक करना।
2. अवसंरचना को पंगु बनाना।
3. सीमा-पार धन का प्रवाह करना।
4. जनमत को प्रभावित करना।
5. ऑनलाइन भर्ती और कट्टरपंथीकरण करना।

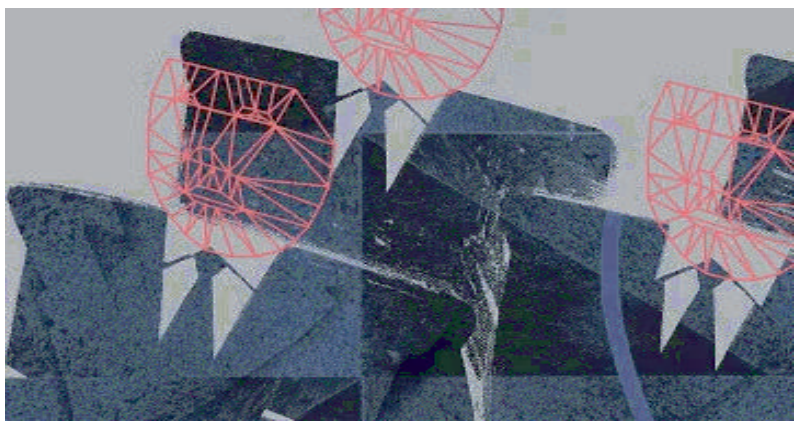

ये कैसे काम करते हैं?

1. फेक ऐप्स और मैलवेयर – निर्दोष दिखने वाले डाउनलोड से डिवाइस पर कब्ज़ा करना
2. फर्जी आईडी और सिम कार्ड – गुमनाम डिजिटल पहचान बनाना
3. क्रिप्टो और वॉलेट्स – धन शोधन और आतंकी फंडिंग को छिपाना
4. सोशल इंजीनियरिंग – उपयोगकर्ताओं को धोखे से संवेदनशील जानकारी देने पर मजबूर करना

खतरा क्यों गंभीर है?

1. वर्षों तक अदृश्य रहते हैं, आदेश पर सक्रिय होते हैं।
2. सीमा-पार नेटवर्क होने से ट्रैक करना कठिन।
3. यह केवल अपराध नहीं—संप्रभुता पर सीधा हमला है।

साइबर घुसपैठ का नया प्लेबुक साइबर स्लीपर सेल्स हमारे युग के डिजिटल घुसपैठिए हैं। छिपे हुए, धैर्यवान, घातक—ये डेटा, धन और विश्वास पर हमला करते हैं। इन्हें निष्क्रिय करना भारत की साइबर सुरक्षा का केंद्रीय हिस्सा है।

भर्ती और सक्रियण

1. मैलवेयर से भरे म्यूजिक/गेमिंग ऐप्स
2. नकली आईडी वाले सिम कार्ड
3. डेटा चोरी के लिए लोन और निवेश ऐप्स

फंडिंग और मनी लॉन्ड्रिंग

1. वॉलेट्स और क्रिप्टो एक्सचेंज
2. म्यूल नेटवर्क्स और फर्जी खाते
3. परतदार लेन-देन से धन का स्रोत छिपाना

जासूसी और तोड़फोड़

1. दूरसंचार, ऊर्जा, परिवहन, कानून प्रवर्तन प्रणालियों की जाँच
2. शत्रु राज्यों से जुड़े APT का उपयोग
3. एआई-चालित प्रचार से असंतोष फैलाना

नागरिकों के लिए

1. संदिग्ध ऐप्स डाउनलोड न करें।
2. साइबर अपराध की रिपोर्ट करें: www.cybercrime.gov.in।
3. डिजिटल स्वच्छता अपनाएँ: मजबूत पासवर्ड, 2FA, अनुमतियों की जाँच।
4. जागरूकता अभियानों के माध्यम से सतर्क रहें।

नीतिनिर्माताओं के लिए

1. क्रिप्टो प्लेटफॉर्म्स पर KYC लागू करें।
2. फॉरेंसिक लैब्स और जांचकर्ताओं के प्रशिक्षण में निवेश करें।
3. स्कूलों और सार्वजनिक सेवा में साइबर साक्षरता को शामिल करें।

दांव:

1. साइबर युद्ध के युग में संप्रभुता अब यह केवल धोखाधड़ी कॉल्स की बात नहीं है—यह डिजिटल संप्रभुता, संस्थागत अखंडता और राष्ट्रीय लचीलापन की बात है।
2. साइबर स्लीपर सेल्स एक हाइब्रिड खतरा हैं—जासूसी, अपराध और मनोवैज्ञानिक युद्ध का मिश्रण।
3. भारत की रक्षा केवल फायरवॉल्स से नहीं, बल्कि जागरूकता, समन्वय और नवाचार से होगी।

अंतिम संदेश

1. साइबर सुरक्षा कोई विभाग नहीं—यह एक सिद्धांत (Doctrine) है।
2. हर अधिकारी। हर नागरिक। हर संस्था।
3. सभी मिलकर हम भारत की डिजिटल ढाल हैं।

आइए, सतर्कता को विजय में बदलें।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

आज के आर्टिकल में बात करते हैं बच्चों की मेंटल हेल्थ के लिए पेरेंट्स को क्या पेरेंटिंग टिप्स अपनाना चाहिए।

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

अपने कुछ विचार साझा करने जा रही है जब रिश्ते खत्म होते हैं, तो अक्सर बच्चों की दुनिया हिल जाती है — उनकी मासूमीयत, उनकी भावनाएँ, उनका भरोसा। पर एक अलग बात है जो दर्द को उम्मीद में बदल सकती है: को-पैरेंटिंग।

तलाक का मतलब यह नहीं कि आप पिता या माता की भूमिका छोड़ दें। बल्कि — यह वक्त है समझदारी दिखाने का, अहंकार नहीं बल्कि प्यार और जिम्मेदारी दिखाने का।

पहली बात: बच्चों के सामने कभी भी एक-खोरी परिवार न दिखाएँ। चाहे आप अलग हों — उन्हें दिखाएँ कि आप दोनों अब भी उनके माता-पिता हैं। आपका प्यार, आपकी देखभाल, आपकी मौजूदगी दोनों तरफ बरकरार रहेगी।

दूसरी बात: घरों में नियम और रूटीन समान रखें। खाने-सोने का समय, स्कूल-वर्क, टीवी/गैजेट टाइम — जब बच्चों की दिनचर्या स्थिर होगी, तो उन्हें सुरक्षा महसूस होगी; उन्हें लगेगा कि उनकी दुनिया अभी भी सुरक्षित है।

तीसरी बात: बच्चे से खुलकर बात करें — उनके डर, कन्फ्यूजन, सवालों को सुनें। किसी भी परिस्थिति में उन्हें मत दें यह अहसास कि "तुम्हारे खुलने का डर मत करो" — क्योंकि उनकी आवाज़ और भावनाएँ मायने रखती हैं।

चौथी बात: कभी भी दूसरे पैरेंट की बुराई या शिकायत बच्चे के सामने न करें। इससे बच्चे फंसे हुए महसूस करते हैं — "किसे चुनूँ?" — और उनकी मासूमीयत टूट जाती है। प्यार और सम्मान से बात करें।

पाँचवी बात: जब मिल सकें — क्वालिटी टाइम बिताएँ। खेल, पढ़ाई, बातें, सपोर्ट — दिखाएँ कि उन्हें अब भी प्यार और देखभाल बराबर मिल रही है।

डिवोर्स हो सकता है — पर वो दिन उनके लिए डर का नहीं, समझदारी और कोमल स्पोर्ट का समय हो सकता है। आपका बच्चा — अपनी खुशियाँ, उसकी मासूम हँसी, उसका भरोसा — आपकी जिम्मेदारी है।

अगर आप सच में उस दर्द को खुशी में बदलना चाहते हैं — शुरुआत आज से करें।

अगर आप मानते हैं कि बच्चे को किसी एक पैरेंट की ज़रूरत नहीं — दोनों की ज़रूरत है1

अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइटः

www.counsellingwali.com या हमसे संपर्क कीजिए

9 716739398 समाधान लीजिए।

सूरन कंदा के चमत्कारी फ़ायदे

जड़ से होने वाली बीमारियों, अपच, ब्लीडिंग के घरेलू आयुर्वेदिक नुस्खे

पिंकी कुंडू

हमारी आयुर्वेदिक परंपरा में सूरन कंदा का बहुत खास महत्व है। "सूरन खाओ, तो पेट खराब नहीं होगा!" क्योंकि सूरन सिर्फ़ एक सब्ज़ी नहीं बल्कि औषधीय गुणों से भरपूर एक नैचुरल प्रोडक्ट है।

आजकल के अनियमित खान-पान से होने वाली समस्याओं को हल करने में सूरन बहुत असरदार है

* जड़ की बीमारियाँ
* अपच
* शौच करते समय खून आना

सूरन क्या है? पोषण गुण

* सूरन (हाथी के पैर जैसा मीठा आलू) एक कंद वाली सब्ज़ी है जो मिट्टी में उगती है। इसमें मुख्य रूप से ये चीज़ें होती हैं -
* विटामिन C
* विटामिन B6
* फाइबर
* पोटैशियम
* कैल्शियम
* आयरन

सुरन

* पाचन को बेहतर बनाता है
* सूजन कम करता है
* आंतों से टॉक्सिन निकालता है
* गैस, कब्ज़, एसिडिटी से राहत देता है

बवासीर और ब्लीडिंग के लिए सूरन का इस्तेमाल एनस के पास एक दर्दनाक गांठ, जो एक सूजी हुई नस होती है, बवासीर का एक कारण है। सूरन इसके लिए बहुत सही है।

घरेलू नुस्खे

* सूरन को छोटे चौकोर टुकड़ों में काट लें
* पैन में थोड़ा सा शुद्ध घी डालें

* टुकड़ों को हल्का सुनहरा भूरा होने तक तलें।
* सुबह और शाम सेवन करें

फायदे -

सूजन कम करता है
खून बहना रोकने में मदद करता है
मल त्याग को आसान बनाता है
शरीर हल्का महसूस होता है

पाचन सुधारने के लिए सूरन

* अपच
* गैस
* पेट फूलना
* लंगड़ापन

हेल्दी फाइबर और एंजाइम

* आंतों की सेहत सुधारता है
* टॉक्सिन निकालता है
* भूख बढ़ाता है — इसे हफ्ते में 2-3 बार लें

आयुर्वेदिक तरीका आयुर्वेद के अनुसार, सूरन –

* वात-पित्त-कफ को बैलेंस करता है
* खून को साफ करता है
* मूल बीमारियों को कम करता है
* लिवर और पाचन को बेहतर बनाता

नेचुरल हेल्थ की ओर एक कदम केमिकल दवाओं के बजाय रोज़ाना नेचर ने एक बोल्ड सॉल्यूशन निकाला है।

सूरन जैसी सिंपल सब्ज़ी
* लंबे समय तक सेहत
* शरिया के हिसाब से नैचुरल इलाज

छोटा सा हल अगर मूल रोग, बदहज़मी या शौच के कारण खून आ रहा हो, तो

* सोने के टुकड़े
* घी में हल्का फ्राई करें
* सुबह और शाम को खाएं
* कुछ ही दिनों में आपको फ़र्क महसूस होगा।

हेल्थ ही असली दौलत है, शुगर-फ्री इंडिया की ओर एक कदम आगे।

पैसे से कभी भी स्वास्थ्य और खुशियां नहीं मिलती, आइए फ़िर से चलें प्रकृति की ओर

पिंकी कुंडू

सोनाली बेंद्रे - कैंसर
अजय देवगन - लिट्राल अपिकोंडिलिटिस
(कंधे की गंभीर बीमारी)
इरफान खान - कैंसर
मनीषा कोइराला - कैंसर
युवराज सिंह - कैंसर
सैफ अली खान - हृदय घात
रितिक रोशन - ब्रेन क्लोट
अनुराग बासु - खून का कैंसर
मुमताज - ब्रेस्ट कैंसर
शाहरुख खान - 8 सर्जरी
(घुटना, कोहनी, कंधा आदि)
ताहिरा कश्यप (आयुष्मान खुराना की पत्नी) - कैंसर
राकेश रोशन - गले का कैंसर
लीसा राय - कैंसर
राजेश खन्ना - कैंसर,
विनोद खन्ना - कैंसर
नरगिस - कैंसर
फिरोज खान - कैंसर
टोम अल्टर - कैंसर...

* यह वो लोग हैं या थे- जिनके पास पैसे की कोई कमी नहीं है / थी!
* खाना हमेशा डाइटीशियन की सलाह से खाते है।
* दूध भी ऐसी गाय या भैंस का पीते हैं जो AC में रहती है और बिसलेरी का पानी पीती है।
* जिम भी जाते है।
* रेगुलर शरीर के सारे टेस्ट करवाते है।

* सबके पास अपने हाई क्वालिफाइड डॉक्टर है।

अब सवाल उठता है आखिर

अपने शरीर की इतनी देखभाल के बावजूद भी इन्हें इतनी गंभीर बीमारी अचानक कैसे हो गई। जवाब बड़ा छोटा सा है

* क्योंकि यह सभी प्राक्रतिक चीजों का इस्तेमाल बहुत कम करते है या मान लो बिल्कुल भी नहीं करते। जैसा हमें प्रकृति ने दिया है, उसे उसी रूप में ग्रहण करो वो कभी नुकसान नहीं देगा।
* कितनी भी फ्रूटी पी लो, वो शरीर को आम के गुण नहीं दे सकती।
* अगर हम इस धरती को प्रदूषित ना करते तो धरती से निकला पानी बोतल बन्द पानी से लाख गुण अच्छा था।

उदाहरण स्वरूप कोई बच्चा जो बचपन से पैसे के बल पर जन्म से ऐसे स्थान पर रहा है जहां एक भी कीटाणु नहीं हो सकता उसे बड़ा होने से बाद सामान्य जगह पर रहने के लिए छोड़ दो, वो बच्चा एक सामान्य सा बुखार भी नहीं झेल पाएगा!

क्यों?:- क्योंकि उसके शरीर का तंत्रिका तंत्र कीटाणुओ से लड़ने के लिए विकसित ही नही हो पाया।

बड़ी बड़ी कंपनियों ने अपने प्रोडक्ट बेचने के लिए लोगो को इतना डरा रखा है,

मानो एक दिन साबुन से नहीं नहाओगे तो तुम्हे कीटाणु घेर लेंगे और शाम तक पक्का मर जाओगे।

* समझ नहीं आता हम इतना पढ़ लिखकर भी कहां जी रहे है।
* एक दूसरे से हाथ मिलाने के बाद लोग सेनिटाइजर लगाते हुए देखते हैं हम।

इंसान सोच रहा है- पैसों के दम पर हम जिंदगी जियेंगे।

आपने कभी गौर किया है-- पिज़्ज़ा बर्गर वाले शहर के लोगों की एक बुखार में धरती घूमने लगती है और वहीं दूध दही छाछ के शौकीन गांव के बुजुर्ग लोगों का वही बुखार बिना दवाई के ठीक हो जाता है। वजह बड़ी साफ है

* क्योंकि उनकी डॉक्टर प्रकृति है।
* क्योंकि वे पहले से ही सादा खाना खाते आए है।

इसलिए आपसे अनुरोध है

* प्राकृतिक चीजों को अपनाओ!
* विज्ञान के द्वारा लैब में तैयार हर एक वस्तु शरीर के लिए नुकसानदायक है!

याद रखे पैसे से कभी भी स्वास्थ्य और खुशियां नहीं मिलती।।

आइए फ़िर से_ चलें प्रकृति की ओर

पुदीने की पत्तियां: पारंपरिक उपयोग और सामान्य फायदे

गर्मियों में आसानी से मिलने वाला पुदीना अपनी खुशबू, स्वाद और ताजगी के लिए जाना जाता है। पारंपरिक रूप से पुदीने का उपयोग शरीर को ठंडक देने, ताजगी बनाए रखने और दैनिक स्वास्थ्य व सौंदर्य रूटीन में सहायक के रूप में किया जाता रहा है। पुदीने की पत्तियों में मौजूद प्राकृतिक गुण सामान्य स्वास्थ्य सपोर्ट और स्किन केयर में उपयोगी माने जाते हैं।

आइए जानते हैं पुदीने के कुछ पारंपरिक और सामान्य उपयोग, जिन्हें संतुलित आहार और स्वस्थ जीवनशैली के साथ अपनाया जा सकता है।

पुदीने के पोषक तत्व:- पुदीने में कम कैलोरी होती है और इसमें फाइबर, विटामिन A, आयरन, मैंगनीज और फोलेट जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट शरीर को ऑक्सीडेटिव तनाव से बचाने में सहायक माने जाते हैं।

1. पाचन को सपोर्ट:- पुदीना पाचन प्रक्रिया को सपोर्ट करने में सहायक हो सकता है। पारंपरिक रूप से पुदीने की चाय या पानी का सेवन भोजन के बाद किया जाता है, जिससे पाचन से जुड़ी असहजता कम महसूस हो सकती है।

2. वजन संतुलन में सहायक:- पुदीने का उपयोग चटनी या ड्रिंक के रूप में किया जाता है। यह मेटाबॉलिज्म को सपोर्ट करने और संतुलित डाइट के साथ वजन प्रबंधन में सहायक हो सकता है।

3. श्वसन स्वास्थ्य में सहायक:- पुदीना पारंपरिक रूप से सांस से जुड़ी असहजता में सहायक माना जाता है। पुदीने की सुगंध और काढ़ा सामान्य श्वसन आराम के लिए उपयोग किया जाता है।

4. महिलाओं के स्वास्थ्य सपोर्ट के लिए:- पारंपरिक आयुर्वेदिक उपयोग में पुदीने को महिलाओं के मासिक चक्र से जुड़ी सामान्य असहजता में सहायक माना गया है। इसका सेवन व्यक्तिगत स्थिति के अनुसार किया जाता है।

5. ब्लड प्रेशर संतुलन में सहायक:- संतुलित आहार के साथ पुदीने का उपयोग सामान्य हृदय स्वास्थ्य सपोर्ट के लिए किया जाता है। यह रोजमर्रा की जीवनशैली में एक सहायक तत्व हो सकता है।

6. गर्मी और लू से बचाव में सहायक:- गर्मियों में पुदीने का सेवन शरीर को ठंडक देने में मदद कर सकता है। पारंपरिक रूप से पुदीने की चटनी या पेय का उपयोग किया जाता है।

7. हाइड्रेशन सपोर्ट:- पुदीने का पानी या शरबत शरीर को ताजगी देने और तरल संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकता है, खासकर गर्म मौसम में।

8. स्किन केयर में उपयोग:- पुदीने का पेस्ट या रस स्किन केयर रूटीन में इस्तेमाल किया जाता है। यह त्वचा को साफ रखने और ऑयल बैलेंस में मदद कर सकता है।

9. ऑयली स्किन के लिए:- पुदीना, दही और ओटमील से बना फेस पैक ऑयली स्किन में अतिरिक्त तेल को संतुलित करने में सहायक हो सकता है।

10. बालों की देखभाल में सहायक:- पुदीने के पानी से बाल धोने का उपयोग पारंपरिक रूप से स्कैल्प को साफ रखने और बालों की सामान्य देखभाल के लिए किया जाता है।

11. स्किन टोन और झाइयों के लिए:- पुदीने का रस या पेस्ट प्राकृतिक फेस पैक में इस्तेमाल किया जाता है, जो त्वचा की साफ-सफाई और ग्लो सपोर्ट में सहायक माना जाता है।

दाल का पानी पीने से सेहत को मिल सकते हैं ये सामान्य लाभ

1. प्राकृतिक पोषक तत्वों का स्रोत दाल का पानी प्राकृतिक रूप से कुछ ऐसे पोषक तत्वों से भरपूर होता है, जो शरीर के सामान्य स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक हो सकते हैं। इसे संतुलित आहार के एक हिस्से के रूप में लिया जा सकता है।

2. वजन संतुलन में सहायक दाल के पानी में मौजूद प्रोटीन तृप्ति की भावना देने में मदद कर सकता है, जिससे अनावश्यक खाने की इच्छा कम हो सकती है। यह वजन प्रबंधन के लिए एक सहायक विकल्प हो सकता है।

3. पाचन को सपोर्ट करने में मदद दाल का पानी हल्का और आसानी से पचने वाला माना जाता है। इसमें मौजूद पोषक तत्व पाचन तंत्र के सामान्य कार्य में सहयोग कर सकते हैं और अपच जैसी समस्याओं में सहायक हो सकते हैं।

4. शारीरिक ऊर्जा के लिए उपयोगी दाल के पानी में पाए जाने वाले अमीनो एसिड और अन्य तत्व शरीर की सामान्य ऊर्जा और कार्यक्षमता को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

5. हृदय स्वास्थ्य को सपोर्ट दाल का पानी संतुलित जीवनशैली के साथ लेने पर हृदय स्वास्थ्य को सपोर्ट करने में सहायक हो सकता है। यह संपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल का एक हिस्सा बन सकता है।

6. विटामिन और मिनरल्स की उपलब्धता दाल के पानी में आयरन, मैग्नीशियम, फोलिक एसिड और विटामिन बी कॉम्प्लेक्स जैसे तत्व पाए जा सकते हैं, जो शरीर की दैनिक पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करते हैं।

बुज़ुर्गों को प्रयोगशाला मत बनाए, थोड़ा रुक कर दिल से सोचिए

पिंकी कुंडू

आज हमारे समाज में एक बेहद दर्दनाक चलन चुपचाप जड़ें जमा चुका है। घर के बुज़ुर्ग बीमार होते नहीं और हम घबरा कर एंबुलेंस बुलाते हैं, जेब देखकर अस्पताल चुनते हैं,—3 स्टार, 5 स्टार और बिना एक पल सोचे, उन्हें आईसीयूं के

ठंडे दरवाज़ों के पीछे छोड़ आते हैं।

फिर कांपती आवाज़ में कहते हैं — "डॉक्टर साहब, पैसे की चिंता मत कीजिए बस इन्हें बचा लीजिए।"

यहीं से कहानी बदल जाती है आपकी लाचारी, आपकी ममता, आपकी उम्मीद — सब कुछ पढ़ लिया जाता है।

फिर शुरू होती है जांचों की बारिश, हर दिन एक से अनेक नई रिपोर्टें, हर दिन नई दवाइयां, हर दिन बीमारी का नया नाम।

और आप दिल को समझाते हैं — "इलाज बहुत अच्छा चल रहा है।"

लेकिन सच क्या है? 80 साल का कमजोर शरीर, हाथों में सुइयों का जाल,

सीने से लगी मशीनें, और आंखों में एक सवाल — "क्या मैं अपने लोगों को एक बार देख पाऊंगा?"

करवट भी नहीं बदल सकते, दर्द कह नहीं सकते और आईसीयूं के नियम कहते हैं — "मरीज से मिलना मना है।"

जिस शरीर ने आपको गोद में खिलाया, जिसने आपकी पहली जीत पर आशीर्वाद दिया, आज वही शरीर एक प्रयोगशाला बन चुका है।

नई दवाइयों के ट्रायल, नई मशीनों की कसौटी — और बीच में एक बूढ़ा इंसान, जो सिर्फ शांति चाहता है।

ज़रा सोचिए आप किसे बचाने की कोशिश कर रहे हैं — शरीर को या अपने डर को?

हमारे धर्म, हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि मृत्यु कोई अपराध नहीं।

अपराध है— किसी को तड़पाकर, अकेला छोड़ मरने देना।

इसीलिए गांवों में आज भी, जब बुज़ुर्ग अंतिम पड़ाव पर होते हैं तो उन्हें घर में रखा जाता है जहां अपनों की आवाज़ होती है, बच्चों की हंसी होती है, जहां अपने लोग आसपास होते हैं। अगर आखिरी समय में कुछ खाने का मन हो, तो तुरंत दिया जाता है — भले ही एक कौर ही क्यों न हो। क्योंकि वह कौर पेट के लिए नहीं, आत्मा की तसल्ली के लिए होता है।

शांत मन, तृप्त मन— यही वह अवस्था है,

जिसमें आत्मा बिना डर, बिना पीड़ा आगे बढ़ती है।

अब बताइए— क्या आईसीयूं में यह संभव है?

* क्या सुइयों से छलनी शरीर से आत्मा मुस्कुराकर निकलती है?
* क्या मशीनों की बीप-बीप के बीच मन को शांति मिलती है?

वहां इच्छा नहीं पूछी जाती, वहां आदेश दिए जाते हैं। वहां वो इंसान नहीं, मात्र एक केस नंबर होता है।

आपका नाम केस नंबर 43 या फिर

फाइल नंबर 43 हो जाता है। यह बात अस्पतालों के खिलाफ नहीं है, यह उस बेरहम व्यवस्था के खिलाफ है, जो जीवन को आंकड़ों में और मृत्यु को बिल में बदल देती है।

चाहे आप किसी भी धर्म के हों — हिंदू, मुस्लिम, जैन, ईसाई या सिख — बुज़ुर्ग को बोझ मत समझिए। उन्हें देवलोक जाने वाला यात्री समझिए।

अगर सेवा घर पर संभव नहीं है, तो नर्स रखिए, दवाइयां रखिए, सुविधाएं जुटाइए — लेकिन उन्हें अपनों से दूर मत कीजिए।

क्योंकि अंत में याद रखिए— मृत्यु सबको आनी है, लेकिन सम्मान के साथ विदाई सिर्फ भाग्यशाली लोगों को मिलती है।

एक बार रुकिए सोचिए विचारीये, क्योंकि शायद कल, उस बिस्तर पर हम भी हो सकते हैं।

मुझे पता है कि बहुत लोग मुझसे सवाल करेंगे तो क्या हम अपने मां-बाप को उसी हाल में छोड़ दें, हॉस्पिटल ही ना ले जाए. तेरे मां-बाप के साथ ऐसा हो तो तू क्या करेगा?

जवाबः नहीं भाई, मैं उन्हें तड़पते छोड़ूंगा नहीं, मैं उन्हें तड़पने नहीं दूंगा, मैं इलाज जरूर कराऊंगा लेकिन ऐसा इलाज नहीं जो हर दिन नई सुई, नई मशीन और रोज नई पीड़ा दे।

अगर डॉक्टर साफ कह दें कि अब ठीक होने की संभावना नहीं और आईसीयूं सिर्फ सांसें खींच रहा है — तो मैं उन्हें मशीनों के बीच कैद नहीं रखूंगा। मैं उन्हें घर लाऊंगा। उनके पास बैठूंगा, उनका हाथ थामूंगा, उनसे बातें करूंगा, उनकी आखिरी इच्छाएं पूरी करूंगा।

दर्द होगा तो दर्द की दवा दूंगा, कमजोरी होगी तो पूरा सहारा दूंगा, सेवा के लिए नर्स भी रखूंगा — लेकिन उन्हें अकेले आईसीयूं में मात्र कोई एक "केस नंबर" बनाकर नहीं छोड़ूंगा।

क्योंकि मां-बाप को बचाना सिर्फ शरीर बचाना नहीं मां-बाप को बचाना होता है उनकी गरिमा, उनका सम्मान और उनकी शांति बचाना।

कभी-कभी, सबसे बड़ा प्रेम मौत से लड़ना नहीं, बल्कि दर्द से लड़ना होता है और अगर अपने मां-बाप को सम्मान के साथ विदा करना पाप है — तो मैं वो पाप पूरे होश में करना स्वीकार करूंगा।

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंक ज्योतिष, ग्रह और क्रिस्टल का गूढ़ संबंधः- ग्रहों के उपाय के रूप में क्रिस्टल का महत्व

डॉ. पूजाप्रसून एन
गोल्ड मेडलिस्ट
09599101326, 07303855446

भूमिकाः- अंक ज्योतिष केवल अंकों की गणना की विधि नहीं है, बल्कि यह कंपन विज्ञान पर आधारित एक गूढ़ विद्या है। १ से ९ तक के प्रत्येक अंक का संबंध किसी न किसी ग्रह से होता है और प्रत्येक ग्रह अपनी विशिष्ट ऊर्जा तरंगें मानव जीवन को प्रभावित करता है।

क्रिस्टल पृथ्वी की गर्भ में लाखों वर्षों में निर्मित होने वाली प्राकृतिक ऊर्जा संरचनाएँ हैं। इनमें स्थिर, शुद्ध और प्रभावशाली कंपन विद्यमान होते हैं। जब किसी व्यक्ति के जीवन में कोई ग्रह कमजोर, अशांत या असंतुलित हो जाता है, तब क्रिस्टल उस ग्रह की ऊर्जा को संतुलित करने का कार्य करते हैं। इसी कारण क्रिस्टल को ग्रहों के कोमल एवं सुरक्षित उपाय माना जाता है।

क्रिस्टल क्या हैं:- क्रिस्टल ऐसे प्राकृतिक खनिज हैं जिनकी आंतरिक संरचना सुव्यवस्थित और ज्यामितीय होती है। यही सुव्यवस्था उन्हें अन्य पत्थरों से अलग बनाती है।

क्रिस्टल में ऊर्जा को अवशोषित करने, संरक्षित करने और प्रसारित करने की अद्भुत क्षमता होती है। जब कोई व्यक्ति क्रिस्टल के संपर्क में आता है, तो उसकी व्यक्तिगत ऊर्जा उस क्रिस्टल की स्थिर ऊर्जा के साथ तालमेल बनाती है, जिससे मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर पर संतुलन स्थापित होता है।

क्रिस्टल ग्रहों के उपाय क्यों माने जाते हैं:- क्रिस्टल को ग्रहों के उपाय के रूप में स्वीकार करने के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं— हर मनुष्य के भीतर ऊर्जा प्रवाहित होती रहती है। जीवन की तनावपूर्ण परिस्थितियाँ, नकारात्मक भावनाएँ और असंतुलित विचार इस ऊर्जा प्रवाह को बाधित कर देते हैं। क्रिस्टल इस बाधा को दूर करने में सहायक होते हैं।

* क्रिस्टल नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित करते हैं
* सकारात्मक ग्रह ऊर्जा को प्रवर्धित करते हैं
* ये प्राकृतिक एवं सुरक्षित होते हैं
* मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक संतुलन प्रदान करते हैं
* कर्मिक अवरोधों को धीरे-धीरे हटाने में सहायक होते हैं

इसी कारण आधुनिक अंक ज्योतिष और ऊर्जा उपचार में क्रिस्टल का विशेष महत्व है।

अंक, ग्रह और क्रिस्टल का विस्तृत विवेचन

अंक १ — सूर्य ऊर्जा स्वरूपः आत्मबल, नेतृत्व, आत्मसम्मान, पहचान

सूर्य असंतुलित होने पर —

* आत्मविश्वास की कमी
* अहंकार या अधिकार संबंधी समस्याएँ
* पिता अथवा उच्च अधिकारियों से मतभेद

उपयुक्त क्रिस्टल

* सूर्यकांत मणि
* सिट्रीन
* रूबी
* कार्नेलियन
* गार्नेट

लाभ

* आत्मबल एवं आत्मसम्मान में वृद्धि
* नेतृत्व क्षमता का विकास
* जीवन में स्पष्टता और दिशा

अंक २ — चंद्रमा ऊर्जा स्वरूपः मन, भावनाएँ, संवेदनशीलता, मातृत्व

चंद्र असंतुलित होने पर—

* मनोदशा में उतार-चढ़ाव
* भय एवं चिंता
* भावनात्मक अस्थिरता

उपयुक्त क्रिस्टल

* मोती
* रोज क्वार्ट्ज़
* चंद्रकांत मणि
* सेलेनाइट
* श्वेत कैल्साइट

लाभ

* मानसिक शांति
* भावनात्मक संतुलन
* अंतर्ज्ञान शक्ति में वृद्धि

अंक 3— गुरु (बृहस्पति) ऊर्जा स्वरूपः ज्ञान, विस्तार, धर्म, आस्था

गुरु असंतुलित होने पर—

* निर्णय में भ्रम
* अनुशासन की कमी
* मार्गदर्शन का अभाव

उपयुक्त क्रिस्टल

* सिट्रीन
* पीला कैल्साइट
* लैपिस लजूली
* सर्पेंटाइन

लाभ

* धन समृद्धि
* विवेकपूर्ण निर्णय क्षमता
* शिक्षा और ज्ञान में वृद्धि
* समृद्धि और विकास

अंक ४ — राहु ऊर्जा स्वरूपः अचानक परिवर्तन, रहस्य, नवीनता

राहु असंतुलित होने पर—

* भय और भ्रम
* अचानक हानि
* मानसिक अस्थिरता

उपयुक्त क्रिस्टल

* हैसोनाइट /गोमेद

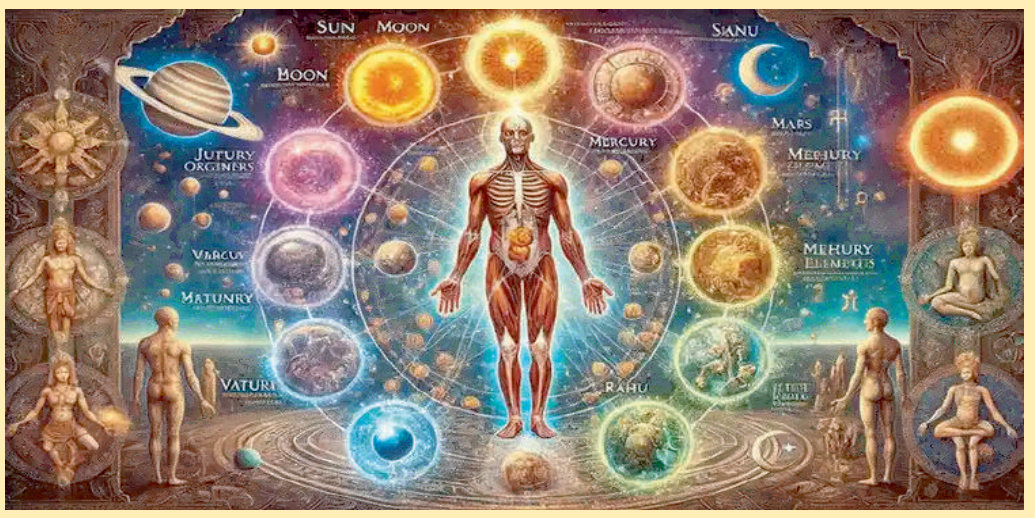

* लैब्राडोराइट
* स्मोकी क्वार्ट्ज
* काला टर्मोलाइन

लाभ

* सफलता
* मानसिक स्पष्टता
* नकारात्मक ऊर्जा से रक्षा
* मानसिक स्थिरता
* भय एवं भ्रम में कमी

अंक ५ — बुध ऊर्जा स्वरूपः बुद्धि, संवाद, व्यापार, तर्क

बुध असंतुलित होने पर—

* चंचल मन
* संवाद में बाधा
* निर्णय क्षमता कमजोर

उपयुक्त क्रिस्टल

* ग्रीन एवेंट्यूरिन
* पेरिडॉट
* अमेज़ोनाइट
* फ्लूराइट
* मालाकाइट

लाभ

* संवाद कौशल में सुधार
* मानसिक स्पष्टता
* व्यापार और अध्ययन में सहायता और वृद्धि

अंक ६ — शुक्र ऊर्जा स्वरूपः प्रेम, सौंदर्य, कला, सुख

शुक्र असंतुलित होने पर—

* संबंधों में तनाव
* अत्यधिक आसक्ति
* भोग विलास की प्रवृत्ति

उपयुक्त क्रिस्टल

* हीरा
* गुलाबी क्वार्ट्ज
* क्लियर क्वार्ट्ज
* ओपल
* कुंजाइट

लाभ

* संबंधों में मधुरता
* आत्मप्रेम का विकास
* धन समृद्धि
* रचनात्मक ऊर्जा में वृद्धि

अंक ७ — केतु ऊर्जा स्वरूपः आध्यात्म, वैराग्य, आत्मचिंतन

केतु असंतुलित होने पर—

* एकाकीपन
* दिशा भ्रम
* मानसिक अशांति

उपयुक्त क्रिस्टल

* जामुनिया
* स्मोकी क्वार्ट्ज़
* टाइगर्स आई
* कैट्स आई
* लैपिस लजूली
* लैब्राडोराइट
* लेपिडोलाइट

लाभ

* ज्ञान
* दिशा
* आत्म संतुलन
* पूर्वाभास
* आध्यात्मिक संतुलन
* मानसिक शांति
* भ्रम और भय में कमी

अंक ८ — शनि ऊर्जा स्वरूपः कर्म, अनुशासन, धैर्य, संघर्ष

शनि असंतुलित होने पर—

* कार्यों में विलंब
* अवसाद
* जीवन में कठोरता

उपयुक्त क्रिस्टल

* पाईराईट
* जामुनिया
* हेमेटाइट
* काला ओनिक्स

लाभ

* धन समृद्धि
* कर्मिक बोझ में कमी
* धैर्य और स्थिरता
* नकारात्मक प्रभाव से सुरक्षा

अंक ९ — मंगल ऊर्जा स्वरूपः साहस, शक्ति, क्रिया

मंगल असंतुलित होने पर—

* क्रोध
* आक्रामकता
* उतावले निर्णय

उपयुक्त क्रिस्टल

* रक्तमणि
* गार्नेट
* लाल जैस्पर
* लाल मूंगा

लाभ

* धन समृद्धि
* सफलता
* क्रोध नियंत्रण
* साहस और ऊर्जा में वृद्धि
* शारीरिक शक्ति का विकास

क्रिस्टल उपयोग की विधि

* कंगन या लॉकेट के रूप में धारण करें, ध्यान के समय हाथ में रखें।
* पूजा स्थल या शयनकक्ष में रखें।
* समय-समय पर जल, धूप या चंद्र प्रकाश से शुद्ध करें।

निष्कर्ष क्रिस्टल कोई चमत्कार नहीं, बल्कि ऊर्जा संतुलन के साधन हैं। जब अंक ज्योतिष, ग्रह ज्ञान और क्रिस्टल का समन्वय किया जाता है, तब व्यक्ति का जीवन अधिक संतुलित, शांत और उद्देश्यपूर्ण बनता है। यह व्यक्ति को केवल भौतिक ही नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक रूप से भी सशक्त करता है।

पिंकी कुंडू

सतयुग से कलियुग तकः भगवान विष्णु से प्रतिशोध लेने वाला एक जिद्दी दैत्य!

क्या आप जानते हैं उस असुर के बारे में, जिसका बैर भगवान विष्णु से एक युग में नहीं, बल्कि युगों-युगों तक चला? उसका नाम है - कालनेमि।

सतयुग की शुरुआत : प्रतिशोध की नींव हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु जैसे महाशक्तिशाली दैत्यों के काल में कालनेमि का जन्म हुआ। वह हिरण्याक्ष का पुत्र था। जब भगवान विष्णु ने वराह और नृसिंह अवतार लेकर उसके पिता और चाचा का वध किया, तो कालनेमि प्रतिशोध की आग में जल उठा। उसने कई प्रयास किए। यहाँ तक कि अपनी पुत्री वृंदा का विवाह महादेव के शत्रु जालंधर से किया, ताकि शिवजी से भी बदला ले सके। लेकिन भगवान विष्णु की लीला के आगे उसकी एक न चली।

एक श्राप और छः पुत्रों का रहस्य एक रोचक घटना में, ब्रह्माजी के मानस पुत्र मरीचि के छः पुत्रों को ब्रह्माजी का उपहास करने पर दैत्य योनि में जन्म लेने का श्राप मिला। उधर, कालनेमि ने ब्रह्माजी से छः अजेय पुत्रों का वरदान माँगा। वही श्रापित ऋषि पुत्र, कालनेमि के यहाँ जन्मे। लेकिन विधि का विधान देखिए! कालनेमि को अपने ही इन पुत्रों से बैर हो गया और उसने प्रतिज्ञा की कि अगले जन्म में वह स्वयं इनका वध करेगा।

द्वापर युग : कंस का अवतार अपने प्रतिशोध को पूरा करने के लिए द्वापर युग में कालनेमि ने मथुरा में 'कंस' के रूप में जन्म लिया। उसने अपनी ही बहन देवकी के उन पहले छः पुत्रों को मारा, जो पूर्वजन्म में उसी के पुत्र थे (मरीचि के श्रापित पुत्र)। इस तरह उसकी वह प्रतिज्ञा पूरी हुई। अंततः, देवकी की आठवीं संतान के रूप में भगवान श्रीकृष्ण अवतरित हुए और उन्होंने कंस का वध कर उसे मुक्ति दिलाई।

कलियुग का रहस्य? मान्यता है कि कालनेमि का प्रतिशोध अभी शांत नहीं हुआ है। कहा जाता है कि यह कलियुग स्वयं कालनेमि का ही एक रूप है, जो भगवान के अंतिम 'कल्कि अवतार' की प्रतीक्षा कर रहा है। लेकिन हम सभी जानते हैं कि अंत में जीत किसकी होगी!

पंचमुखी हनुमान यानी पाँच मुखों वाले हनुमान

पिंकी कुंडू

पंचमुखी हनुमान यानी पाँच मुखों वाले हनुमान जी का रूप हिन्दू धर्म में एक अत्यंत शक्तिशाली और पूजनीय रूप है।

आइए जानते हैं कौनसे हैं ये पाँच मुख, पंचमुखी स्वरूप का महत्त्व और पंचमुखी हनुमान जी का मंत्र; इस रूप में हनुमान जी ने पाँच मुखों और दस भुजाओं के साथ विभिन्न दिशाओं में राक्षसी शक्तियों का विनाश किया था।

पंचमुखी हनुमान के पाँच मुख

1. नरसिंह रूप पंचमुखी हनुमान का दक्षिण दिशा का मुख भगवान नरसिंह का है।इस रूप की भक्ति से सारी चिंता,परेशानी और डर दूर हो जाता है।

2. गरुड रूप पंचमुखी हनुमान का पश्चिमी मुख गरुड का है, जिसके दर्शन और भक्ति संकट और बाधाओं का नाश करती है।

3. अश्व रूप पंचमुखी हनुमान का पांचवा मुख आकाश की ओर दृष्टि वाला होता है। यह रूप अश्व यानी घोड़े के समान होता है। श्रीहनुमान का यह करुणामय रूप होता है, जो हर मुसीबत से रक्षा करने वाला माना जाता है।

4. वानर रूप पंचमुखी हनुमान का पूर्व दिशा में वानर मुख है, जो बहुत तेजस्वी है। इसकी उपासना या दर्शन से विरोधी या शत्रु पराजित हो जाता है।

5. वराह रूप पंचमुखी हनुमान का उत्तर दिशा का मुख वराह रूप होता है जिसकी सेवा-साधना अपार धन, दौलत, ऐश्वर्य, यश, लंबी आयु, स्वास्थ्य देती है।

पंचमुखी हनुमान जी का महत्व रामायण काल में जब रावण के भाई अहिरावण और महिरावण ने राम-लक्ष्मण को बंदी बना लिया था और वे उन्हें पाताल ले गए थे, तब उनसे युद्ध करने हेतु पाताल लोक में हनुमान जी का ये स्वरूप प्रकट हुआ था।

हनुमान जी ने पाँच दिशाओं में एक साथ युद्ध कर उन्हें हराने हेतु यह पंचमुखी रूप धारण किया।

पंचमुखी हनुमान जी की पूजा इनकी पूजा विशेष रूप से रक्षा, भूत-प्रेत बाधा, तंत्र-मंत्र निवारण और ध्यान व सिद्धि प्राप्ति के लिए की जाती है।

पंचमुखी हनुमान कवच, पंचमुखी हनुमान मंत्र, और उनके विशेष स्तोत्रों का पाठ किया जाता है।

पंचमुखी हनुमान मंत्र

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।

"नीम करोली बाबा - नारायण बाबा"

पिंकी कुंडू

करीब 95 साल पहले की बात है। राजस्थान के अलवर इलाके में एक गड़रिया भेड़ चराते हुए जंगल में चला गया। अचानक किसी ने उसे कहा कि यहाँ बकरियां चराना मना है। बातों-बातों में पता चला कि वो इलाके का तहसीलदार था। दोनों में बात होने लगी। पता चला कि बहुत कोशिश के बाद भी तहसीदार को बच्चे नहीं होते। तब गड़रिये ने उनसे कहा कि आप दौसा के बालाजी हनुमानजी के मंदिर जाकर बेटा मांग लो, मिल जायेगा ।

ना जाने क्यों तहसीलदार ने उस गड़रिए की बात मान ली। उन्होंने हनुमान जी से कहा कि अगर मेरा बेटा हो जायेगा, तो मैं उसे यहीं इसी मंदिर में सेवा के लिए छोड़ जाऊंगा। साथ ही इस बात का ज़िक्र उन्होंने अपनी पत्नी से भी नहीं किया।

मन्नत मांगने के एक साल के अंदर उन्हें बेटा नसीब हो गया, लेकिन बाप का प्यार अब आड़े आ गया। उन्होंने हनुमानजी से कहा कि मैं अपना वचन पूरा नहीं कर सकता। आपका ये ऋण मुझ पर रहेगा ।

वो बेटा बड़ा होने लगा, शिक्षा की उम्र तक आया, तो पिताजी ने उसे हरिद्वार के एक बड़े विद्वान प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के यहाँ पढ़ने भेज दिया। लड़के में अद्भुत क्षमता थी.. उसे रामायण कंठस्थ थी। बिना पढ़े ही वो रामायण का पाठ करने लगा तथा उसकी ख्याति दूर-दूर तक फ़ैल गयी और वो साधु सन्यासियों और बड़े-बड़े उद्योगपतियों के घर रामायण पाठ करने लगा।

जवान होने पर उसकी शादी भी हो गयी। एक दिन देश के बड़े उद्योगपति जुगल किशोर बिरला ने अखबार में विज्ञापन दिया कि दिल्ली के लक्ष्मी नारायण मंदिर यानी बिरला मंदिर में हनुमान जी को रामायण पढ़कर सुनानी है। उसके लिए उस व्यक्ति का टेस्ट खुद बिरला जी लेंगे। सो तय तारीख पर नारायण स्वामी अपनी पत्नी के साथ बिरला निवास पहुंच गए। बहुत से ओर लोग भी बिरला जी को रामायण पढ़कर सुना रहे थे। जब नारायण बाबा का नंबर आया, तो उन्होंने बिना रामायण हाथ में लिए पाठ शुरू दिया। जिस पर बिरला जी के अनुग्रह पर नारायण बाबा ने हारमोनियम पर गाकर भी रामायण सुना दी।

बिरला जी भाव विभोर हो गए और नारायण बाबा की नौकरी पक्की हो गयी। सस्ते ज़माने में 350 रुपए की पगार, रहने के लिए बिरला मंदिर में एक कमरा और इस्तेमाल के लिए एक कार भी नारायण बाबा को दे दी गयी। इससे उनका जीवन बेहद सुकून और आराम का हो गया। रूपया पैसा, शौहरत और देश के सबसे बड़े उद्योगपति से नज़दीकियां।

बिरला जी के एक गुरु थे, नीम करोली बाबा। बेहद चमत्कारी संत थे वो। जैसे ही वो वृन्दावन से दिल्ली आये, तो बिरला जी ने उन्हें प्रसन्न करने के लिए नारायण बाबा का एक रामायण पाठ रख दिया। बिरला जी ने नीम करोली बाबा से कहा कि एक लड़का है.. जो रामायण गाकर सुनाता है। नीम करोली बाबा ने कहा कि मुझे भी उस लड़के से मिलना है। जैसे ही नारायण बाबा कमरे में गये तो नीम करोली बाबा ने कहा कि तेरे बाप ने हनुमान जी से धोखा किया है। नारायण बाबा अपने पिता की खिलाफ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे, लेकिन तय हुआ कि अगर नीम करोली बाबा की बात सच्ची है, तो वो उन्हें गुरु रूप में स्वीकार कर लेंगे।

तभी के तभी नारायण बाबा अलवर रवाना हो गए और अपने पिता से कहा कि एक संत आपको हनुमान जी का ऋणी बता रहा है और आपको धोखेबाज भी। नारायण बाबा के पिता ने कहा कि वो संत हनुमान जी ही हो सकते हैं, क्योंकि ये बात सिर्फ उन्हें ही को पता है। पिता की यह बात सुनकर नारायण बाबा वापस चले आये और नीम करोली बाबा को अपना गुरु स्वीकार कर लिया।

नीम करोली बाबा ने आदेश दिया कि नारायण तेरा जन्म हनुमान जी की सेवा के लिए हुआ है.. इसीलिए छोड़ दे लाला की नौकरी। गुरु का यह आदेश मिलते ही नारायण बाबा ने नौकरी तुरन्त ही छोड़ दी और दिल्ली के मेहरौली इलाके में एक जंगल में एक गुप्त मंदिर में आश्रय ले लिया।

बिरला मंदिर से निकल कर नारायण बाबा ने सांप, भूतों और एक अनजाने जंगल में हनुमान जी की सेवा शुरू कर दी। नीम करोली बाबा ने आदेश दिया कि किसी से एक रूपया भी नहीं लेना है और हर साल नवरात्रे में लोगों का भंडारा करना है ।

बड़ी अजीबोगरीब बात है कि एक पैसा भी किसी से नहीं लेना और हर साल हज़ारों लोगों को खाना भी खिलाना है, लेकिन गुरु ने जो कह दिया, वो पत्थर पर लकीर है। बिना सोच के उन्होंने अपना यह काम शुरू कर दिया। नीम करोली बाबा ने बिरला से कहकर नारायण बाबा की पत्नी को घर चलाने के पैसे हर महीने दिलवा दिए, लेकिन नारायण बाबा को पैसे से दूर ही रखा।

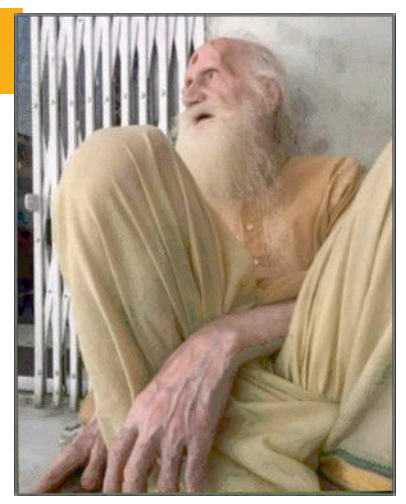

वैसे 1969 से आज तक इस मंदिर से हर साल दो बार नवरात्रे में हज़ारों लोग भंडारा खाकर जाते हैं और किसी को भी आज तक इस मंदिर में पैसे चढ़ाते नहीं देखा गया, लेकिन हाँ 'प्रसाद' पाते सबको देखा जाता है।

जिला व उपमंडल स्तर पर आज (सोमवार 19 जनवरी) को आयोजित होंगे समाधान शिविर

सुबह 10 से 12 बजे तक नागरिकों की समस्याओं का होगा त्वरित समाधान

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 18 जनवरी। जिले में आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से आज सोमवार को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। ये शिविर प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक संचालित होंगे।

जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त करेंगे। इस अवसर पर उपायुक्त नागरिकों की विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें एवं समस्याएं सुनेंगे तथा संबंधित अधिकारियों को मौके पर ही समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगे।

वहीं, उपमंडल स्तर पर समाधान शिविरों का आयोजन संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में किया जाएगा। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, आईएएस, बेरी में एसडीएम आईएएस अंकित कुमार चौकसे व बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में समाधान शिविर आयोजित होंगे, जहां नागरिकों की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान सुनिश्चित किया जाएगा।

उपायुक्त ने बताया कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी मंच हैं। उन्होंने कहा कि जिला मुख्यालय में समाधान शिविर प्रत्येक सप्ताह सोमवार एवं गुरुवार को नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी मौके पर उपस्थित रहते हैं, जिससे आमजन को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का समाधान उपलब्ध हो सके।

एग्री स्टैक फार्मर आईडी अभियान तेज, रविवार को भी किसानों ने बनवाई फार्मर आईडी

फार्मर आईडी से कृषि योजनाओं का लाभ प्रदान करना शासन प्रशासन का उद्देश्य : एसडीएम

झज्जर, 18 जनवरी। एसडीएम आईएएस अंकित कुमार चौकसे ने कहा कि डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के मार्गदर्शन में सरकार की डिजीटल पहल एग्री स्टैक के तहत किसानों की फार्मर आईडी बनाने का कार्य लगातार प्रगति पर है। इसी कड़ी में रविवार को सम्बन्धित विभागो के अधिकारियों और कर्मचारियों की टीमों ने विशेष अभियान चलाते हुए किसानों की एग्री स्टैक फार्मर आईडी जेनरेट की। रविवार यानी अवकाश के दिन आयोजित किए गए इस विशेष अभियान का उद्देश्य अधिक से अधिक किसानों को सुविधा प्रदान करना रहा, ताकि कार्यदिवसों में व्यस्त रहने वाले किसान भी इस महत्वपूर्ण पहल से जुड़ सकें। कृषि विभाग के अधिकारियों ने गांवों में किसानों को फार्मर आईडी बनवाने के लिए जागरूक किया।

एसडीएम अंकित कुमार चौकसे ने अभियान की समीक्षा करते हुए संबंधित टीमों को शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने के स्पष्ट निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि एग्री स्टैक फार्मर आईडी किसानों के लिए बेहद उपयोगी है, क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें सरकार की विभिन्न कृषि योजनाओं, सब्सिडी, बीमा, ऋण और अन्य लाभ सीधे व पारदर्शी तरीके से मिल सकेंगे। एसडीएम ने किसानों से भी अपील की कि वे समय निकालकर अपनी फार्मर आईडी अवश्य बनवाएं और कृषि से जुड़ी सरकारी योजनाओं में सक्रिय भागीदारी निभाएं। उन्होंने बताया कि रविवार को कैंप आयोजित करने का मुख्य मकसद यही है कि अधिकतम किसानों को कवर किया जा सके और कोई भी पात्र किसान इस सुविधा से वंचित न रहे। उन्होंने कहा कि आगामी दिनों में भी इसी तरह के विशेष कैंप आयोजित किए जाएंगे, ताकि सभी पात्र किसानों की एग्री स्टैक फार्मर आईडी निर्धारित समय सीमा में तैयार की जा सके।

दुल्हेड़ा गांव में जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम आज (19 जनवरी सोमवार) को डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे ग्रामीणों से सीधा संवाद

स्वास्थ्य जांच शिविर और योजनाओं की जानकारी के लिए लगेंगे विभागीय स्टॉल

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़ (झज्जर), 18 जनवरी। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की अनूठी पहल पर जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक माह आयोजित किए जाने वाले रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन इस बार आज (19 जनवरी सोमवार) को बहादुरगढ़ खंड के गांव दुल्हेड़ा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में किया जाएगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे। डीसी ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे और उनका मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करेंगे। यह जानकारी बहादुरगढ़ के एसडीएम आईएएस अभिनव सिवाच ने दी।

एसडीएम ने बताया कि इस अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हेतु स्टॉल लगाए जाएंगे तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य प्रशासन को गांव स्तर पर जनता से सीधे जोडने और उनकी समस्याओं का त्वरित निवारण करना है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से प्रशासन को जमीनी हकीकत समझने और योजनाओं के वास्तविक क्रियान्वयन की स्थिति जानने में मदद मिलती है।

उन्होंने ग्रामीणों से अपील की कि वे इस अवसर का लाभ उठाएं, अपनी समस्याएं और सुझाव प्रशासन के समक्ष रखें, ताकि गांव का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके।

वायु प्रदूषण को त्वरित रूप से नियंत्रित करना ग्रेप-4 का मुख्य उद्देश्य : डीसी

स्वास्थ्य सुरक्षा के दृष्टिगत सिटीजन चार्टर का पालन करें नागरिक

वायु प्रदूषण के गंभीर स्तर के चलते जिले में ग्रेप-4 की पाबंदियां लागू

बहादुरगढ़(झज्जर)। जिले में वायु गुणवत्ता के गंभीर श्रेणी में पहुंचने पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एवं आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के निर्देशानुसार ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान के चौथे चरण की पाबंदियां लागू हो गई हैं।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि ग्रेप-4 का मुख्य उद्देश्य वायु प्रदूषण को त्वरित रूप से नियंत्रित करना तथा आमजन के स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि इस दौरान प्रशासन, उद्योग, निर्माण एजेंसियों एवं नागरिकों की सामूहिक जिम्मेदारी है कि नियमों की पूर्ण एवं सख्त पालना सुनिश्चित की जाए।

डीसी ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में सतत निगरानी रखें, उल्लंघन पर त्वरित कार्रवाई करें तथा आवश्यक नियंत्रणात्मक कदम प्रभावी रूप से लागू करें। उन्होंने बताया कि ग्रेप चार के चलते जिला में निर्माण, तोड़फोड़ कार्यों पर रोक रहेगी व सीमेंट, रेत, फ्लाई ऐश जैसी निर्माण सामग्री की वाहनों में आवाजाही बंद रहेगी। वहीं सड़कों की साफ सफाई मशीनों से करनी होगी। सड़कों व पेड़ों पर पानी का छिड़काव व एंटी-स्मॉग गन का उपयोग बढ़ाना होगा। कचरा जलाने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा।

उद्योगः कोयला, लकड़ी से चलने वाले

उद्योग व थर्मल पावर प्लांट, स्टोन क्रशर व खनन संबंधी गतिविधियों पर रोक । इमरजेंसी सेवाओं को छोड़कर डीजल जनरेटरों पर रोक रहेगी।

नागरिक क्या करें

डीसी ने कहा कि विशेषकर बच्चे, बुजुर्ग व अस्वस्थ व्यक्ति अनावश्यक रूप से घर से बाहर निकलने से बचें।सार्वजनिक परिवहन, कार-पूलिंग व वैकल्पिक साधनों का अधिक उपयोग करें। आमजन निजी वाहनों का प्रयोग कम करें।

घर एवं कार्यालय में धूल नियंत्रण रखें, गीली सफाई (वेट क्लीनिंग) अपनाएं। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु मास्क का प्रयोग करें तथा चिकित्सकीय सलाह का पालन करें। प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों व एडवाइजरी का पालन करें।

नागरिक क्या न करें

डीसी ने बताया कि ग्रेप चार की पाबंधियों के चलते नागरिक खुले में कचरा, पत्तियां या किसी भी प्रकार का अवशेष न जलाएं। किसी भी प्रकार का निर्माण/ध्वस्तीकरण कार्य न करें। आपातकालीन/अनिवार्य सेवाओं को छोड़कर) डीजल जेन सेट का उपयोग ना करें। प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों में संलिप्त न हों।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने नागरिकों से अपील की कि वे प्रशासन का पूर्ण सहयोग करें, ताकि वायु गुणवत्ता में शीघ्र सुधार लाया जा सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि ग्रेप-4 प्रावधानों के उल्लंघन पर नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

'म्हारी माटी, म्हारे आखर'

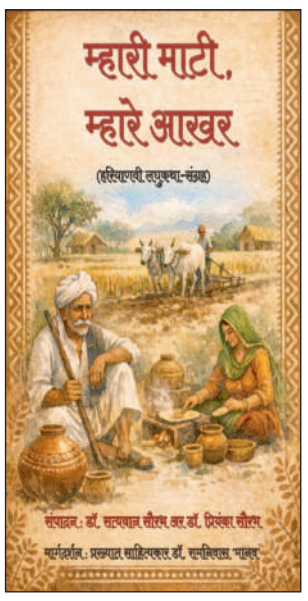

हरियाणवी बोली की लघुकथा भेज्जण खात्तर न्योता

हरियाणवी बोली अर हरियाणा कै लोक-जीवण पै आधारित लघुकथा-संग्रह खात्तर रचणाकाराँ तैं तीन-तीन लघुकथा भेजण की बिन्ती सै। ऐंह किताब म्हैं कुल इक्यावन लघुकथाकार हे शाम्यल करे जावैंगे।

नियम अर शर्त :

1. लघुकथा सुद्ध हरियाणवी बोली म्हैं होणी चहिएँ।
2. भेजी जाण आळी लघुकथाँ की सबद-सिम्मा 150 सबद सै।
3. लेखक 100 सबदाँ म्हैं अपणा संक्षिप्त परिचै साथ जरूर भेज्जैं।
4. चुणे गये लेखकाँ नै किताब की परती छपी कीमत तैं 30 परतीसत छूट म्हैं दी जावैंगी।
5. लेखक खात्तर किताब खरीदणा जरूरी कोन्या सै।

आण आळा लघुकथा-संग्रह हरियाणवी बोली, संस्किरती अर समाज की सच्ची तस्बीर दिखाण की एक कोशिश सै। इच्छुक रचणाकार तै नियमाँ कै हिसाब तैं अपणी लघुकथा भेज्जैं।

✉ ई-मेल (पता) :
satywansaurabh333@gmail.com

हरियाणा बजट 2026-27 के लिए 31 जनवरी तक सुझाव दे सकते हैं नागरिक : डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

मिस्ड कॉल, एआई-सहायक व ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आमजन दे सकता है बजट सुझाव, मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी स्वयं हितधारकों से कर रहे हैं संवाद

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 18 जनवरी। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा वित्त वर्ष 2026-27 के बजट निर्माण की प्रक्रिया में आमजन की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार का मत है कि बजट जनहित, विकास प्राथमिकताओं और नागरिकों की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार हो। इसी उद्देश्य से राज्य के प्रत्येक नागरिक को अपने सुझाव साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

डीसी ने बताया कि नागरिकों की सुविधा के लिए सुझाव देने के कई माध्यम उपलब्ध कराए गए हैं। नागरिक 7303350030 नंबर पर मिस्ड कॉल देकर 31 जनवरी तक अपनी राय दर्ज करा सकते हैं। इसके अतिरिक्त एआई-सहायक के माध्यम से thevoxai.in/haryanabudget लिंक पर संवाद करने की सुविधा भी उपलब्ध है। विस्तृत सुझाव देने के लिए नागरिक bamsharyana.nic.in/suggestion.aspx लिंक पर जाकर ऑनलाइन फॉर्म भर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी स्वयं हितधारकों से कर रहे हैं संवाद

डीसी ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी हरियाणा बजट 2026-27 को जनभागीदारी के साथ तैयार करने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रों के हितधारकों से निरंतर बैठकें कर रहे हैं। इन बैठकों में उद्योग, शिक्षा, व्यापार, कृषि, महिला उद्यमिता सहित अनेक वर्गों से प्राप्त महत्वपूर्ण सुझावों को गंभीरता से सुना जा रहा है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री ने 6 जनवरी को गुरुग्राम विश्वविद्यालय से इस जनभागीदारी कार्यक्रम का शुभारंभ किया था।

डीसी ने आगे बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा शुभारंभ किए गए एआई आधारित हरियाणा बजट जनभागीदारी पोर्टल के माध्यम से आम नागरिक, विशेषज्ञ और हितधारक राज्य के बजट निर्माण में सीधे भागीदारी कर रहे हैं। इस पोर्टल पर हरियाणवी, हिंदी और अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं में सुझाव देने की सुविधा उपलब्ध है, जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता सुनिश्चित हो सके।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिलावासियों से अपील की कि वे समय रहते अपने सुझाव साझा करें, ताकि बजट निर्माण की प्रक्रिया अधिक समावेशी और प्रभावी बन सके। उन्होंने कहा कि प्राप्त सभी सुझावों पर गंभीरता से विचार कर उन्हें बजट निर्माण में सम्मिलित किया जाएगा, जिससे हरियाणा के समग्र विकास को नई दिशा मिल सके।

विश्व को अस्थिर करता अमेरिका:- वेनेजुएला और ईरान के बाद अब ग्रीनलैंड पर ट्रंप की नजर- नाटो की अग्निपरीक्षा और यूरोपीय एकता की निर्णायक जीत-एक समग्र विश्लेषण

अंतरराष्ट्रीय कानून,बहुपक्षीय संवाद और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को प्राथमिकता देकर वैश्विक सहयोग का नया मॉडल बनाने की खास जरूरत

यूरोप की एकता ने यह साबित किया है कि यदि देश सामूहिक रूप से खड़े हों,तो सबसे शक्तिशाली राष्ट्र को भी पीछे हटने पर मज़बूर किया जा सकता है -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में जब विश्व बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है,तब भी अमेरिका की विदेश नीति में एक पुराना साम्राज्यवादी आग्रह बार-बार उभरकर सामने आता है।अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून, संयुक्त राष्ट्र चार्टर और संप्रभुता के सिद्धांतों को दरकिनार करते हुए सैन्य दबाव,आर्थिक प्रतिबंध और टैरिफ हथियार के रूप में इस्तेमाल करना अमेरिका की रणनीति का हिस्सा रहा है। वेनेजुएला में सत्ता परिवर्तन की कोशिशें, ईरान पर अधिकतम दबाव की नीति और अब ग्रीनलैंड को लेकर ट्रंप के आक्रामक बयान,यह सब मिलकर एक ऐसे अमेरिका की तस्वीर पेश करते हैं जो वैश्विक स्थिरता का संरक्षक कम और अस्थिरता का कारक अधिक बनता जा रहा है।ग्रीनलैंड हमेशा डेनमार्क और यूरोपीय संप्रभुता का सवाल रहा है,ग्रीनलैंड डेनमार्क के अधीन एक स्वायत्तशासी क्षेत्र है। इसका अर्थ यह है कि उसकी विदेश और रक्षा नीति डेनमार्क तथा यूरोपीय ढांचे से जुड़ी हुई है।जब ट्रंप ने ग्रीनलैंड पर कब्जे या उसे खरीदने जैसी बातों को सार्वजनिक मंच से दोहराया, तो यह केवल डेनमार्क ही नहीं, बल्कि पूरे यूरोप की संप्रभुता को चुनौती देने जैसा था।यूरोपीय देशों को यह एहसास हुआ कि यदि आज ग्रीनलैंड पर दबाव डाला गया, तो कल किसी और यूरोपीय क्षेत्र पर भी ऐसा ही प्रयास हो सकता है। यही कारण है कि इस मुद्दे पर यूरोप ने असामान्य रूप से एकजुट रुख अपनाया।ग्रीनलैंड का मामला नाटो के लिए भी एक निर्णायक परीक्षा बन गया। नाटो एक ऐसा सैन्य गठबंधन है जो सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत पर आधारित है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि जब गठबंधन का सबसे शक्तिशाली सदस्य ही अपने सहयोगी देशों पर दबाव डालने लगे तो नाटो की नैतिकता और विश्वसनीयता पर सवाल उठना स्वाभाविक है।यूरोपीय देशों ने स्पष्ट संकेत दिया कि नाटो का मतलब केवल अमेरिकी हितों की रक्षा नहीं, बल्कि सभी सदस्य देशों की संप्रभुता और सुरक्षा सुनिश्चित करना है।इस एकजुटता ने ट्रंप प्रशासन को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि ग्रीनलैंड को लेकर आक्रामक कदम उठाना आसान नहीं होगा। वेनेजुएला और ईरान के मामलों में जहां अमेरिका को सीमित विरोध का सामना करना पड़ा था, वहीं ग्रीनलैंड के मुद्दे पर यूरोप एक स्वर में खड़ा दिखाई दिया। डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड, नीदरलैंड और यूनाइटेड किंगडम सभी ने इस बात को स्पष्ट किया कि ग्रीनलैंड पर किसी भी तरह का दबाव अस्वीकार्य है।यूरोपीय एकता ने ट्रंप के उस आत्मविश्वास को झटका दिया, जिसके तहत वे मानते थे कि आर्थिक या सैन्य दबाव डालकर किसी भी देश को झुकाया जा सकता है।

साथियों बात कर हम वेनेजुएला और ईरानः हस्तक्षेप की पुरानी पटकथा को समझने की करें तो ग्रीनलैंड से पहले अमेरिका की नजर वेनेजुएला और ईरान पर रही है।वेनेजुएला में लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार को कमजोर करने,राष्ट्रपति को अपदस्थ करने और कथित अपहरण जैसी घटनाओं की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक चर्चा हुई। यह सब अंतरराष्ट्रीय कानूनों और किसी भी संप्रभु देश के आंतरिक मामलों में गैर- हस्तक्षेप के सिद्धांत के सीधे उल्लंघन थे।इसी तरह ईरान के खिलाफ लगातार प्रतिबंध, सैन्य धमकियां और क्षेत्रीय अस्थिरता फैलाने की नीति ने मध्य-पूर्व को लंबे समय तक संघर्ष के दलदल में धकेल दिया।इन दोनों उदाहरणों ने यह स्पष्ट कर दिया कि ट्रंप प्रशासन की विदेश नीति कूटनीति पहले नहीं, बल्कि दबाव पहले की अवधारणा पर आधारित थी।

ग्रीनलैंडः बर्फ से ढका द्वीप, लेकिन भू-राजनीति का गर्म केंद्र रहा।

साथियों बात अगर हम ग्रीनलैंड मुद्दे को समझने की करें तो यह भले ही जनसंख्या की दृष्टि से छोटा और भौगोलिक रूप से दूरस्थ क्षेत्र हो,लेकिन उसकी रणनीतिक अहमियत असाधारण है।यह दुनियाँ का सबसे बड़ा द्वीप है और आर्कटिक क्षेत्र में स्थित होने के कारण सैन्य, ऊर्जा, खनिज और वैश्विक व्यापार मार्गों के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण बन चुका है।जलवायु परिवर्तन और बर्फ के पिघलने के साथ आर्कटिक में नए समुद्री मार्ग खुल रहे हैं, जिससे यूरोप- एशिया-अमेरिका के बीच व्यापारिक दूरी कम हो सकती है। इसके साथ ही दुर्लभ खनिज, तेल और गैस जैसे संसाधनों तक पहुंच आसान हो रही है। यही कारण है कि ग्रीनलैंड अब केवल एक द्वीप नहीं, बल्कि भविष्य की वैश्विक शक्ति-राजनीति का केंद्र बन चुका है।

साथियों बात अगर कर हम अमेरिका की मंशाःआर्कटिक में वर्चस्व की होड़ को समझने की करें तो अमेरिका लंबे समय से ग्रीनलैंड में अपनी मौजूदगी बढ़ाने की कोशिश करता रहा है। वहां पहले से मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकाने और रडार सिस्टम इस बात का संकेत हैं कि वॉशिंगटन आर्कटिक को केवल भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि सामरिक युद्धक्षेत्र के रूप में देखता है।हालिया घटनाक्रम में अमेरिका ने ग्रीनलैंड को लेकर सैन्य और रणनीतिक गतिविधियां तेज करने के संकेत दिए। आधिकारिक तर्क यह दिया गया कि रूस और चीन जैसी उभरती ताकतों को संतुलित करने के लिए यह जरूरी है। लेकिन यूरोप ने इस तर्क को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया, क्योंकि यह संतुलन नहीं बल्कि प्रभुत्व स्थापित करने की कोशिश अधिक प्रतीत हुई।

साथियों बात अगर हम टैरिफ हथियारः- कूटनीति की जगह आर्थिक धमकी इसको समझने की करें तो ग्रीनलैंड के मुद्दे पर विरोध बढ़ता देख ट्रंप प्रशासन ने एक बार फिर टैरिफ को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।घोषणा की गई कि 1 फरवरी से डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, नीदरलैंड और फिनलैंड से अमेरिका भेजे जाने वाले सभी सामानों पर 10 प्रतिशत टैरिफ लगाया जाएगा।यह कदम स्पष्ट रूप से राजनीतिक दबाव बनाने के लिए था, ताकि यूरोपीय देश अमेरिका के रुख का समर्थन करने को मजबूर हों। हालांकि, इस बार यह रणनीति उलटी पड़ती नजर आई।,यूरोपीय संसद के सबसे बड़े राजनीतिक समूह ईपीपी के प्रमुख मैनफ्रेड वेबर ने ट्रंप की धमकियों को गंभीरता से लिया। उन्होंने कहा कि अमेरिकी दबाव और टैरिफ धमकियों से यूरोपीय संघ और अमेरिका के बीच हुए व्यापार समझौतों की आत्मा पर सवाल खड़े हो गए हैं।उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मौजूदा हालात में अमेरिकी उत्पादों पर शून्य प्रतिशत टैरिफ की योजना को फिलहाल रोकना पड़ेगा। यह बयान इस बात का संकेत था कि यूरोप अब केवल प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि प्रतिरोध की नीति अपनाने के लिए तैयार है।

साथियों बात अगर हम प्लान होल्ड पर:ट्रंप को क्यों पीछे हटना पड़ा इसको समझने की करें तो,यूरोपीय देशों के संगठित विरोध और संभावित व्यापार युद्ध की आशंका के चलते ट्रंप प्रशासन को ग्रीनलैंड योजना फिलहाल होल्ड पर डालनी पड़ी। हालांकि उन्होंने 10 प्रतिशत टैरिफ के साथ जून तक की मोहलत दी, लेकिन यह साफ हो गया कि ग्रीनलैंड पर सीधा कब्जा या खुला दबाव डालना आसान नहीं होगा।यह पहला अवसर नहीं था जब ट्रंप को अंतरराष्ट्रीय दबाव के आगे कदम पीछे खींचने पड़े हों, लेकिन यह निश्चित रूप से सबसे प्रतीकात्मक उदाहरणों में से एक है।

साथियों बात कर हम आर्कटिक राजनीति का भविष्यः टकराव या सहयोग? इसको समझने की करें तो ग्रीनलैंड विवाद ने आर्कटिक क्षेत्र की राजनीति को वैश्विक विमर्श के केंद्र में ला दिया है। सवाल यह है कि आने वाले वर्षों में आर्कटिक सहयोग का क्षेत्र बनेगा या टकराव का। यदि अमेरिका, रूस, चीन और यूरोप अपने-अपने हितों के लिए इस क्षेत्र को युद्धभूमि में बदलते हैं, तो इसका असर पूरी वैश्विक व्यवस्था पर पड़ेगा।दूसरी ओर,यदि अंतरराष्ट्रीय कानून, बहुपक्षीय संवाद और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को प्राथमिकता दी जाती है, तो आर्कटिक वैश्विक सहयोग का नया मॉडल बन सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि ग्रीनलैंड का मुद्दा केवल एक द्वीप तक सीमित नहीं है। यह उस व्यापक संघर्ष का प्रतीक है जिसमें एक ओर एकध्रुवीय प्रभुत्व की सोच है और दूसरी ओर बहुध्रुवीय,नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की मांग।यूरोप की एकता ने यह साबित किया है कि यदि देश सामूहिक रूप से खड़े हों, तो सबसे शक्तिशाली राष्ट्र को भी पीछे हटने पर मजबूर किया जा सकता है। वहीं अमेरिका के लिए यह एक चेतावनी है कि

इक्कीसवीं सदी में बल और दबाव की राजनीति अब बिना प्रतिरोध के स्वीकार नहीं की जाएगी। ग्रीनलैंड ने न केवल नाटो की अग्निपरीक्षा ली, बल्कि वैश्विक राजनीति को यह भी दिखा दिया कि भविष्य का विश्व संतुलन टैरिफ की धमकियों और कब्जे से नहीं बल्कि संवाद और सहयोग से ही संभव है।

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर में धूमधाम से मनाया गया भक्ति वेदांत नारायण स्वामी महाराज का आविर्भाव महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन ।सेवाकुंज गली स्थित श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर में प्रख्यात गौडीय संत श्रीमद् भक्ति वेदांत नारायण स्वामी महाराज का आविर्भाव महोत्सव संतों-विद्वानों व भक्तों की उपस्थित में अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः काल महाराजश्री की प्रतिमा का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य अभिषेक व पूजन-अर्चन किया गया ।साथ ही भजन संकीर्तन का भी आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजित संत-विद्वत संगोष्ठी में त्रिदण्डी स्वामी श्रील भक्ति वेदांत स्वामी मधुसूदन गोस्वामी महाराज (विश्वबन्धु) ने कहा कि हमारे सदगुरुदेव श्रीमद् भक्ति वेदांत नारायण स्वामी महाराज गौडीय सम्प्रदाय की बहुमूल्य निधि थे ।उन्होंने गौडीय सम्प्रदाय के संस्कृत व बांग्ला भाषा में लिखे 100 से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद किया ।बाद को इन ग्रंथों का विश्व की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने व प्रमुख समाजसेवी पंडित बिहारीलाल वशिष्ठ ने कहा कि श्रीमद् भक्ति वेदांत नारायण स्वामी महाराज की गौडीय सम्प्रदाय के लिए अनेकों देनें हैं ।उनके द्वारा मथुरा में श्रीकेशव गौडीय मठ और वृंदावन में श्रीरूप सनातन गौडीय मठ व श्रीकेशव गौडीय मठ आदि की स्थापना की गई।

भक्ति वेदांत दामोदर महाराज व भक्ति मयूर भिक्षु महाराज ने कहा कि श्रीमद् भक्ति वेदांत नारायण स्वामी महाराज अनेकानेक सद्गुणों की खान थे ।बरसाना के प्रख्यात संत व वाणीकार नारायण भट्ट ने महाराजश्री की विद्वत्ता व संतत्व से प्रभावित होकर उन्हें ₹योगाचार्य₹ की उपाधि से अलंकृत किया था।

आविर्भाव महोत्सव में भक्ति वेदांत साधु महाराज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, प्रोफेडर (डॉ.) राम वैद्य, बालशुक पुंडरीक कृष्ण महाराज, अच्युतानंद प्रभु, ब्रजराज दास, प्रेम प्रदीप दास, रविकुमार शर्मा, राजू व राधा नाथ दास आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

महोत्सव का समापन संत ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ ।भक्ति वेदांत स्वामी मधुसूदनाचार्य गोस्वामी महाराज ने सभी आगंतुक अतिथियों का अभिनंदन कर आभार व्यक्त किया।

आत्मनिर्भर एक प्रयास परिवार द्वारा कालिका गोशाला में सेवा कार्य

गऊ माता की सेवा ही सनातन संस्कृति की आत्मा हैं, गौ माता की जय : राजेश खुराना, गौ सेवक

गौमाता के रंभाने से समाप्त होती है नकारात्मक ऊर्जा, समाज से गौ संरक्षण का आह्वान

आगरा, संजय सिंह। समाजसेवा और गौसेवा के पावन उद्देश्य को समर्पित आत्मनिर्भर एक प्रयास परिवार द्वारा कालिका गोशाला में बीमार, चोटिल एवं असहाय गोमाताओं के लिए भूसा एवं गुड़ सेवा का सराहनीय आयोजन किया गया। इस सेवा कार्य के अंतर्गत गोशाला में रह रही कमजोर एवं उपचाराधीन गोमाताओं को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराया गया, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार हो सके। सेवा कार्यक्रम के दौरान संस्था के सदस्यों ने न केवल गोमाताओं को स्नेहपूर्वक आहार प्रदान किया, बल्कि उनके स्वास्थ्य की जानकारी भी ली तथा गोशाला प्रबंधन से आवश्यक सहयोग का आश्वासन दिया।

कालिका गोशाला में बीमार एवं चोटिल गोमाताओं को भूसा-गुड़ की सेवा करते हुए संस्था के चेयरमैन राजेश खुराना ने कहा कि गौसेवा भारतीय संस्कृति की मूल भावना है और गोमाता की सेवा करना मानवता की सच्ची सेवा है। गऊ माता की सेवा ही सनातन संस्कृति की आत्मा हैं, गौ माता की जय ।सनातन संस्कृति और भारतीय जीवन-दर्शन में गौमाता का स्थान सर्वोपरि है। गौ सेवा केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि मानव जीवन के कल्याण का आधार है। इस दौरान उन्होंने पद्मपुराण सहित विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के उद्धरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि गौ सेवा ही सनातन संस्कृति की आत्मा है। उन्होंने बताया कि पद्मपुराण के अनुसार मन, वचन या कर्म से गाय को पीड़ा पहुँचाने वाले व्यक्ति को दीर्घकाल तक कठोर दंड भोगना पड़ता है।

गौ सेवक राजेश खुराना ने कहा कि भगवान स्वयं प्रत्येक युग में गौ रक्षा और गौ सेवा के उद्देश्य से अवतार लेते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का अवतार भी इसी उद्देश्य से हुआ था। उन्होंने बताया कि भगवान राम के पूर्वज महाराज दिलीप महान गौभक्त थे, जिन्हें गौमाता की निष्ठापूर्वक सेवा के फलस्वरूप संतान प्राप्ति का सौभाग्य मिला। उन्होंने कहा कि गाय केवल दूध देने वाला पशु नहीं, बल्कि मानव की समस्त इच्छाओं की पूर्ति का साधन है। गौमाता की कृपा से संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। बाल्यावस्था में गाय दूध देकर जीवन का पोषण करती है और वृद्धावस्था में अपने रोम-रोम से आशीर्वाद प्रदान करती है।

श्री खुराना ने भगवान श्रीकृष्ण का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्हें गोविंद नाम गायों के मध्य निवास करने के कारण ही प्राप्त हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि गौमाता के शरीर में तैंतीस कोटि देवी-देवताओं का वास होता है, और केवल गौ सेवा व पूजा से समस्त देवी-देवताओं की सेवा का पुण्य प्राप्त किया जा सकता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जब सभी देवी-देवताओं ने गौमाता के शरीर में स्थान ग्रहण किया, तब विलंब से आने के कारण गंगा माता को भी गौमाता में ही स्थान लेना पड़ा। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि गौमाता के बिना गौरी-गणेश का पूजन अधूरा माना जाता है।

अपने वक्तव्य के अंत में राजेश खुराना ने कहा कि जिस स्थान पर गौमाता खड़े होकर प्रसन्नतापूर्वक रंभाती है, वहाँ की नकारात्मक ऊर्जा स्वतः समाप्त हो जाती है। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग से गौ सेवा, गौ संरक्षण और गौ सम्मान को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने का भावपूर्ण आह्वान किया।

इस अवसर पर उपस्थित स्वयंसेवकों ने संकल्प लिया कि भविष्य में भी ऐसे सेवा कार्य निरंतर किए जाएंगे, ताकि बीमार एवं असहाय गोमाताओं को सम्मानजनक जीवन मिल सके। गोशाला प्रबंधन ने आत्मनिर्भर एक प्रयास परिवार के इस नेक प्रयास की सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया और कहा कि यह सेवा कार्य समाज के अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणास्रोत बना हैं उन्होंने सभी ने एक स्वर में गौसेवा को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने का आह्वान किया। गऊ माता की जय।

इतिहास के कथित विकृतिकरण पर बहस तेज

जब तक सत्य सामने नहीं आएगा, तब तक समाज अपने अतीत पर गौरव नहीं कर सकता : संजीव कुमार सिंह

सच सामने आना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी सही इतिहास जान सके : संजीव कुमार सिंह

संजीव कुमार सिंह का मानना है कि लगभग 99 प्रतिशत हिंदू समाज को अपने ही इतिहास के कई महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी नहीं है।

नई दिल्ली। देश में एक बार फिर भारतीय इतिहास के लेखन और शिक्षण को लेकर गंभीर बहस छिड़ गई है। इतिहासकारों और सामाजिक संगठनों के एक वर्ग का दावा है कि भारत के मध्यकालीन इतिहास, विशेषकर हिंदू शासकों और मुगल काल से जुड़ी घटनाओं को लंबे समय तक तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया।

देश में एक बार फिर भारतीय इतिहास के लेखन और शिक्षण को लेकर गंभीर सवाल करते छेड़ते हुए सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया राष्ट्रीय नेता इंडियन नेशनल कांग्रेस AICC, एडवोकेट ठाकुर संजीव कुमार सिंह ने कहा कि हिन्दू राजाओं के स्वर्णिम और बलिदानी इतिहास को लेकर उठ रही यह बहस एक बार फिर यह महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करती है कि अतीत को किस दृष्टि से देखा और पढ़ाया जाए। उनका स्पष्ट कहना है कि सत्य से सामना किए बिना भविष्य का निर्माण संभव नहीं। ऐसे में, आज की पीढ़ी के लिए इतिहास की परतों को समझना और तथ्यों की निष्पक्ष पड़ताल करना पहले से कहीं अधिक आवश्यक माना जा रहा है।

इस गंभीर विषय पर एडवोकेट ठाकुर संजीव कुमार सिंह ने आगे कहा कि आज की पीढ़ी के लिए इस कथित विकृतिकरण की सच्चाई जानना अत्यंत आवश्यक है, ताकि इतिहास को संतुलित और तथ्यपरक रूप में समझा जा सके। उनका आरोप है कि लगभग 99 प्रतिशत हिंदू समाज को अपने ही इतिहास के कई महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी नहीं है। उनका मानना है कि जब तक सत्य सामने नहीं आएगा, तब तक समाज अपने अतीत पर गौरव नहीं कर सकता।

विवाह और गठबंधनों को लेकर विवाद

श्री सिंह का कहना है कि मध्यकालीन इतिहास में राजनीतिक विवाहों और गठबंधनों को गलत संदर्भों में पेश किया गया। विशेष रूप से अकबर और राजपूत राजकुमारियों से जुड़े विवाहों जैसे जोधा बाई, रूक्मवती बाई या पुरम बाई को लेकर लोकप्रिय पुस्तकों और फिल्मों में जो चित्रण किया गया, उसे वे ऐतिहासिक रूप से असत्य बताते हैं।

उनका मानना है कि "जोधा बाई" नाम से किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व के अस्तित्व को प्रमाणित करने वाले ठोस साक्ष्य नहीं मिलते, फिर भी इसे बार-बार स्थापित किया गया। इसके विपरीत, वे यह भी कहते हैं कि कुछ ऐसी घटनाएं, जिनमें मुगल सत्ता को राजनीतिक दबाव में समझौते करने पड़े, इतिहास की मुख्यधारा से बाहर कर दी गईं। उदाहरण के तौर पर, अकबर के काल में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप के पुत्र राणा अमर सिंह से संबंधित एक वैवाहिक समझौते को वे "विवाह नहीं, बल्कि युद्धविराम" बताते हैं, जिसका उल्लेख कई पुस्तकों में होने का दावा किया जाता है।

शिक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल

उन्होंने आगे कहा कि इस पूरे विवाद के केंद्र में आज़ादी के बाद की शिक्षा नीति भी है। आरोप लगाया जाता है कि स्वतंत्रता के बाद पाठ्यपुस्तकों के चयन और लेखन में राजनीतिक संतुलन साधने के प्रयास हुए, जिससे इतिहास में "काट-छांट" की गई और कई तथ्य या तो बदले गए या हटा दिए गए। उनका कहना है कि इसका असर पीढ़ियों तक पड़ा और छात्रों को एकतरफा इतिहास पढ़ाया गया।

फिल्मों और लोकप्रिय संस्कृति की भूमिका

इतिहास के कथित विकृतिकरण में फिल्मों और लोककथाओं की भूमिका पर भी सवाल उठ रहे हैं। कहा जा रहा है कि सिनेमा और लोकप्रिय कथाओं ने कुछ ऐतिहासिक दावों को इतना दोहराया कि वे जनमानस में "सत्य" के रूप में स्थापित हो गए, जबकि उनके ऐतिहासिक आधार पर विवाद मौजूद है।

सही इतिहास की मांग

उनका मानना हैं कि इन सभी मुद्दों के बीच एक स्वर उभर कर सामने आ रहा है "सत्य सामने आना चाहिए।" इतिहास के पुनर्मूल्यांकन की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है जब मूल स्रोतों, प्रमाणिक दस्तावेजों और निष्पक्ष शोध के आधार पर इतिहास को दोबारा देखा जाए। वे इसे केवल अकादमिक बहस तक सीमित न रखकर जनआंदोलन का रूप देने की बात कर रहे हैं, ताकि सही जानकारी समाज के हर वर्ग तक पहुंचे।

उनका यह भी सुझाव है कि यदि इस विषय पर तथ्यपरक और शोध-आधारित छावा जैसी फिल्में और दस्तावेजी प्रस्तुतियां बनाई जाएं, तो युवा पीढ़ी तक यह विमर्श अधिक प्रभावी ढंग से पहुंच सकता है।

आखिर में उन्होंने कहा कि जब तक सत्य सामने नहीं आएगा, तब तक समाज अपने अतीत पर गौरव नहीं कर सकता। सच सामने आना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी सही इतिहास जान सके। सम्पूर्ण सत्य से सामना किए बिना भविष्य का निर्माण संभव नहीं। ऐसे में, आज की पीढ़ी के लिए इतिहास की परतों को समझना और तथ्यों की निष्पक्ष पड़ताल करना पहले से कहीं अधिक आवश्यक माना जा रहा है।

धुरंधर गाली बाज : राम वल्लभ गुप्त "इंदौरी"

कल मैं भोपाल के पास भीम वाटिका जिसे स्थानीय भाषा में भीमबेटका कहते हैं उसके भ्रमण पर था भीम वाटिका 450 अथवा 500000 साल पहले जब पृथ्वी पर मानव का उदय हुआ था उस समय के मानव द्वारा शैल चित्रों की निर्माण स्थली है ।

जिस समय इन गुफाओं में शैल चित्रों चित्रों का चित्रण हो रहा था तब हम कल्पना करें कि मानव की भाषा क्या रही होगी ?

तब निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि उस समय कोई भाषा नहीं होगी इसलिए मानव ने इन शैल चित्रों की लिपि के माध्यम से भाषा उकेर दी थी ।

यह प्रश्न विचारणीय है कि गाली का भाषा से गहरा संबंध है

जो कालांतर में बोली थी ही वही भाषा के अस्तित्व रुप में आई होगी। तभी आदिमानव ने गाली का आविष्कार किया होगा।

मेरा जन्म भोपाल में हुआ था अतः मेरे आस-पास का वातावरण गाली बाजों का था सुबह उठने पर सब्जी वाला दूध वाला पानी वाला 1942 में घर-घर जल नहीं था सुबह पानी बड़े तालाब से है जल लेकर आता था कपड़े धोने वाला खाना बनाने वाला खानसामा सभी के *सभी प्रातः काल में गाली रूपेण संस्था की बुनियाद थे*।

जिस प्रकार पंछी प्रातः काल में ईश्वर का धन्यवाद करते हैं श्लोक पढ़ते हैं उसी प्रकार ये

सब लोग मां भाई बहन की गलियों के साथ अपने-अपनी सुबह का प्रारंभ करते थे ।

मेरे मामा का गांव नरसिंहपुर जिले में है मैं एक बार जब बस से जा रहा था तो मेरे बाजू में दो सज्जन बैठे हुए थे वे दोनों सज्जन तो गलियों की प्रतियोगिता करते हुए नजर आ रहे थे

मैं उनकी गलियों को अन्यथा में लेते हुए उनकी गलियों में आनंद ले रहे था ।

सोचा कि मैं इनको रोकूं सोचा कि ये गांव वाले हैं *यह उनकी मातृभाषा है*

*वे उनकी भाषा में चर्चा कर रहे थे

हर हर बात का प्रारंभ मां और बहन से कर रहे थे, यह तो हुई ग्रामीणों की चर्चा ।

अब हम शहर या नगर की चर्चा करें विगत

सप्ताह इंदौर में था पलासिया पॉइंट पर दो बाइक सवार आपस में भिड़ गए फिर क्या था दोनों के बीच में *जो गालियों की अमृत धारा बरसी उसमें मां-बाप भाई बहन सारे रिश्तेदार आ गए फिर भी गलियों का का पुराण थमने के बजाय बढ़ता गया और बात हांथा पाई पर आई और हांथा पाई मुठभेड़ में बदल गयी* अच्छा हुआ कि वहां पर ड्यूटी पर तैनात एक ट्रैफिक पुलिस वाला था उसने भी *इस गाली उच्चारण महायज्ञ में अपनी आहुति दे दी* । *उसने भी दोनों के के मां-बाप की गालियों के श्लोक पढ़े।* वे दोनों एक दूसरे की औकात की बात कर रहे थे पुलिस वाले ने कहा चलो तुम दोनों थाने चलो दोनों के पास ड्राइविंग लाइसेंस और हेलमेट भी नहीं था इसलिए दोनों को हवालात की हवा बाजी खिलाई

यह तो पुलिस पुराण की बात हुई ।

मैं शॉपिंग के मूड में था देख रहा था कोई अच्छा बड़ा सा माल मिल जाए तो शॉपिंग कर लूं लेकिन वहां भी भीड़ थी अतः मुझे निराशा हाथ लगी

वहां पर एक मल्टीप्लेक्स था *फिल्म *धुरंधर चल रही थी* सो टाकीज़ में जाकर बैठ गया फिल्म में भारत और पाकिस्तान के संबंधों को लेकर थी

मेरे बाजू में दो संभ्रांत महिलाएं बैठी हुई थीं उन्होंने फिल्म में जब धारा प्रवाह गलियों की प्रतियोगिता कार्यक्रम देखा तो एक वहीं सो गई और दूसरी ने खर्राटे लेना शुरू कर दिया प्रारंभ में मुझे यह कुछ अजीब सा लगा मैंनै भी सोचा कि इस दूसरी महिला की तरह मैं भी बाहर जाकर कुछ खा पी आऊं इससे कुछ समय कट जाए पूरी फिल्म के दौरान लगभग 5 बार में सिनेमा हाल के अंदर बाहर और अंदर होता रहा मध्यांतर में तो काफी देर तक मैं बाहर ही बैठा रहा चिंतन करता रहा आखिर लोग गलियों में व्यस्त मस्त मस्त क्यों दिखते हैं तो चिंतन की भाव धार से जो अमृत धारा निकालकर के आई वह यह थी कि जैसे लोग गुटखा खाना ,पान खाना, हमारी भारतीय सभ्यता का शुभ चिन्ह मानते हैं और इस प्रकार से लोग गलियां बककर अपना समय पास करते हैं उसी प्रकार लोग समय पास करने के लिए सिनेमा में आते हैं और बात छोटी सी हो लेकिन उसे बड़ी करना है समय पास करना है तो उसमें गलियों का मिश्रण करते जाते हैं करते जाते हैं ।

हमारे भारतीय लोग खैनी खाना, सिगरेट पीना, शराब पीना तो छोड़ नहीं सकते तो गालियां कैसे छोड़ेंगे? ये गलियां हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर है ।

शिक्षाविद, वरिष्ठ लेखक व साहित्यकार
राम वल्लभ गुप्त, 'इंदौरी'

अभिवावक और शिक्षक दोनों के समान योगदान से ही विद्यार्थी की प्रगति संभव : साध्वी ऋतंभरा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित वात्सल्य ग्राम के कृष्णा ब्रह्मरतन विद्यामन्दिर के वार्षिकोत्सव₹ अंकुरण₹ का शुभारम्भ पद्म विभूषित साध्वी ऋतम्भरा एवं मुख्य अतिथि जय कुमार वेस्टर्न रोडवेज, मुम्बई के संस्थापक द्वारा माँ शारदे के सम्मुख दीप प्रज्जलित करके किया गया ।सर्व प्रथम छात्राओं ने अभिनय के साथ गणेश वन्दना प्रस्तुत कर प्रथम देव का आह्वान किया।

साध्वी ऋतम्भरा ने कहा कि परिवार संस्कारों का उद्गम स्थल होता है। बच्चे को माँ द्वारा बचपन में जो भी संस्कार दिये जाते हैं, वह आजीवन प्रभावित रहते हैं। विद्यालय बच्चों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें स्वावलम्बी बनाकर आदर्श नागरिक बनाते हैं। समाज और देश के प्रति उत्तर दायित्वों से अवगत कराता है। शिक्षा मात्र ज्ञान का आधार ही नहीं अपितु वह व्यक्ति को जीवन जीना सिखाती है। अभिवावक और शिक्षक दोनों के समान योगदान से ही विद्यार्थी की प्रगति संभव है। कृष्णा ब्रह्मरतन विद्यालय के माध्यम से अभाव ग्रस्त परिवारों के बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारित किया जा रहा है। बच्चों ने मन मोहक प्रस्तुति देकर सबको मोह लिया है। इस के लिए शिक्षक एवं परिवार दोनों बधाई के पात्र है।

छात्र-छात्राओं ने मंचीय प्रस्तुति देते हुए योगासन के महत्व को दर्शाया ।तत्पश्चात जंगल की थीम पर नृत्य नाटिका का मंचन कर पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया ।साथ ही कत्थक और भरत नाट्यम ने भी अपनी छटा बिखेरी ।पन्ना धाय के नाटक को देखकर सभी भावुक हो गये ।हनुमान चालीसा का अभिनय के साथ गायन हुमा। ऑपरेशन सिन्दूर की प्रस्तुति देखकर दर्शक में जोश भर गया। चारों और भारत माता की जय के नारे गूंजने लगे ।कार्यक्रम का समापन महारास तथा वन्दे मातरम के साथ हुआ।

इस अवसर पर संजय भैया, सुमन लता, स्वामी सत्यशील, साध्वी शिरोमणि, जयभगवान अग्रवाल, महेश खण्डेलवाल, पूर्व ऊर्जा मंत्री रविकान्त गर्ग, ओम प्रकाश बंसल, सोहन कुमार झा, आर.पी. सिंह, नवीन मित्तल, राजेश कुमार पाण्डेय आदि की विशेष उपस्थिति रही ।सभी का आभार व्यक्त योगेन्द्र सिंह ने किया ।कार्यक्रम का संचालन श्रीमती विनीता एवं कु. राजनन्दिनी और आयशा ने किया।

दिल्ली जाइए, स्वर्ग का रास्ता दिल्ली होकर जाता है!

(व्यंग्य : संजय पराते)

आजकल हमारे देश में सब काम भगवान भरोसे चल रहा है। भगवान भरोसे इसलिए कि दुनिया के इस कोने में जितने भगवान हैं और अंधभक्त बनकर उसको मानने वाले लोग, दुनिया के किसी और कोने में नहीं मिलेंगे। धर्मप्रधान देश है, तो धत्कर्म भी होना ही है। वरना बताईए, किस देश का प्रधानमंत्री ऐसा बहुरूपिया होगा, जैसा हमारे देश का है। हाथ में त्रिशूल लिए, डमरू बजाते भोले शंकर का बाना धरे दुनिया के किसी और नेता का फोटो-वोटो बताईए! इतना धर्मभक्त प्रधानमंत्री, जो दिन के 18-18 घंटे इस देश के सांस्कृतिक स्वाभिमान को जगाने के काम में लगा हो, उसे एक ट्रेन के 3 घंटे रुकने के लिए कोसना कितनी बड़ी असभ्यता है! निश्चित ही, यह धर्म विरोधी विपक्ष का काम है, जो दीन-दुनिया के हर काम-धाम में प्रधानमंत्री को कोसने के मौके खोजते रहता है। अब बताईए भला, ट्रेन को सही समय पर चलाना ड्राइवर का काम है या प्रधानमंत्री का?

खबर केवल इतनी-सी है कि समस्तीपुर से सहरसा तक जाने वाली 63348 नंबर की ट्रेन 12:45 बजे समस्तीपुर से रवाना हुई। यह ट्रेन भगवानपुर देसुआ से 12:57 में खुली, लेकिन भगवानपुर से निकलने के बाद और अंगार घर स्टेशन पहुंचने से पहले, बीच रास्ते में ब्रेक वैन का एक्सल लॉक हो गया और चलती ट्रेन के पहिए रुक गए। इस तकनीकी खराबी के कारण वहां ट्रेन लगभग 3 घंटे खड़ी रही। फिर एक्सीडेंट रिलीफ ट्रेन (आर्ट) मौके पर पहुंची, जिस पर कैरिज एंड वैगन स्टाफ तथा यांत्रिकी विभाग के अधिकारी-कर्मचारी सवार थे। उन्होंने युद्धस्तर पर मरम्मत कार्य किया, खराबी दूर की, ठोक-बजाकर ब्रेक वैन का ठीक होना घोषित किया। फिर ट्रेन वहां से रवाना हुई। तब तक के लिए ट्रेनों का आवागमन दोनों ओर से पूरी तरह बंद रहा। केवल समयबद्धता बनाए रखने के उद्देश्य से राजधानी एक्सप्रेस को बरौनी जंक्शन होते हुए समस्तीपुर के रास्ते डाइवर्ट किया गया। इस पूरी घटना और कार्यवाही की जानकारी देते हुए रेलवे ने प्रेस विज्ञप्ति भी जारी की और यात्रियों को हुई असुविधा के लिए खेद व्यक्त किया है।

इस खबर को सकारात्मक ढंग से देखना चाहिए। देखिए, भगवान की कितनी कृपा बरस रही है। पहली बात तो यह कि इस ट्रेन की किसी और ट्रेन से भिड़ंत नहीं हुई। हमारे देश का विपक्ष मोदीजी की रेल को बदनाम करने के लिए आजकल यही काम करवा रहा है। लेकिन विपक्ष का ऐसा दांव यहां फेल हो गया और किसी भी तरह के जान-माल का नुकसान नहीं हुआ। जान बची, सो लाखों पाएं। सरकार की तिजोरी से भी मुआवजा के रूप में माल निकलने से बच गया। इस माल को देश के विकास के लिए अडानी को सौंपा जा सकता है। इससे अर्थव्यवस्था का इंजन आगे बढ़ेगा और चौथी से तीसरी सीढ़ी पर पहुंचने की हमारी रफ्तार तेज होगी। यह तो हुआ पहला दृष्टिकोण।

अब दूसरे सकारात्मक दृष्टिकोण पर आईए। इंजन के फेल होने या न होने पर मोदी सरकार का बस नहीं है। भगवानपुर में भगवान समाया हुआ है। भगवान और खासकर हिंदुओं का भगवान सर्वशक्तिमान है। हमारे भगवान के गॉड और अल्लाह से भी ज्यादा शक्तिमान होने की चर्चा आजकल गली-कूचों में चल रही है। हमारा भगवान यहां-वहां अपनी शक्ति प्रदर्शन के जरिए इसके नमूने भी दिखा रहा है। अच्छी तरह से समझ लीजिए कि हमारे मोदीजी ऐसे ही डमरू नहीं बजा रहे हैं। अब यह भगवानपुर में विराजमान भगवान की मर्जी है कि वह किस ट्रेन को आगे जाने दे या न जाने दे या आगे ले जाकर कहां रोके! सो, अंगारघर से पहले शीतलता देने उसने ट्रेन रोक दी, ताकि थके हुए यात्री ट्रेन से उतरकर पेड़ों की छांव में कुछ सुस्ता लें, कुछ सूसू-वुसू आदि भी कर लें। शरीर हल्का होने से मन भी हल्का हो जाता है और मन हल्का होने से ताजगी आती है। ट्रेन के खड़ी होने की खबर से पास के गांव के लोग कुछ भजिए-समोसे भी तलकर ले आते हैं, उससे सस्ते में ही कुछ को पेट पूजा का, तो कुछ को अपने चटोरेपन को संतुष्ट करने का भी मौका मिल जाता है। भारतीय रेल गरीबों का जितना खयाल रखती है, अमेरिकी रेल भी अपने अमीरों का उतना खयाल नहीं रखती होगी। भगवानपुर के साथ-साथ मोदीजी को इसके लिए धन्यवाद देना तो बनता ही है।

अब तीसरे सकारात्मक दृष्टिकोण पर आईए। ट्रेन का रुकना हमारे अंक ज्योतिष के सही होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। इस मामले में सब कुछ तीन पर टिका है और कहावत ऐसे ही नहीं बनी है, तीन तिग़ाड़ा, काम बिगाड़ा! ट्रेन रुकी किलोमीटर संख्या 75/3 पर। अंकों का योग होता है 15 और फिर इनका योग 6 होता है। ट्रेन नंबर है 63348 और इसके अंकों का भी अंतिम योग 6 होता है। ट्रेन चली 12:45 बजे याने 3 का योग। अटकी 12:57 पर -- फिर 6 अंतिम योग। गार्ड ब्रेक वैन का नंबर 198732, फिर 3 का योग। पूरा मामला 3 के मूलाधार पर टिका है। जहां मामला ही 3 की अशुभ संख्या का हो, वहां मोदीजी शंकर का रूप धरे या राम का, कुछ हो नहीं सकता -- होंहिहैं वोही जो राम रचि राखा। यह अंक ज्योतिष हैं, जिसके सामने पश्चिम का पूरा गणित फेल हैं। इस घटना ने हमारे सनातनी ज्ञान की बिना किसी तनातनी के फिर पुष्टि कर दी है। सनातन जिंदाबाद!

इधर सनातनी धीरेन्द्र शास्त्री ने सरकार को तीन के प्रकोप से बचने की सलाह दी है। धीरेन्द्र शास्त्री की महिमा जान लें कि वे अघोषित सरकार हैं। सरकार से भी बड़े सरकार, जिन्हें और जिनके चेलों-चपाटों को ढोने के लिए उच्च स्तर पर, गैर-कानूनी तरीके से विमानों का इंजाम किया जाता है। धीरेन्द्र शास्त्री की सलाह से सरकार कैसे करे इंकार! सो, रेलवे मिनिस्ट्री के निर्देश पर पूरा रेल महकमा तीन के प्रकोप को दूर करने में लगा है। एक-एक ट्रेन का नंबर देखा जा रहा है, किस स्टेशन पर कितने समय पहुंचती है और किस समय पर प्रस्थान करती है। ये सब नंबर और समय कहीं तीन के मूलाधार कर तो नहीं टिके हैं, टिके हैं, तो कैसे इसे बदला जाएं, आदि-इत्यादि। काम कोई छोटा-मोटा नहीं है, बाकायदा एक आयोग के गठन की मांग करता है। इसकी रिपोर्ट 2046 तक अपेक्षित होगी, ताकि दुर्घटना-मुक्त रेल के रूप में 2047 की पंद्रह अगस्त को हम विकसित भारत में प्रवेश कर सके।

सकारात्मक दृष्टिकोण का चौथा एंगल भी देखिए। दुर्घटना हुई नहीं कि हमारी रिलीफ ट्रेन तकनीज्ञों को लेकर पहुंच गई दुर्घटना स्थल पर। वरना पहले के राज में तो रिलीफ ट्रेन को पहुंचने में ही 13-13 घंटे लग जाते थे। पैसेंजर्स बोगियों से उतरकर जंगल-झाड़ियों में ही निबट लेते थे, लकड़ियां बटोरकर पूरे ट्रैक पर स्वाहा-स्वाहा की ध्वनि के साथ यज्ञ शुरू कर देते थे और रिलीफ ट्रेन का आह्वान करते थे। लेकिन इस बार ऐसा कोई मौका मोदीजी की ट्रेन ने पैसेंजर्स को नहीं दिया। रिलीफ टीम ने ट्रेन की बीमारी का भी तुरंत इलाज कर दिया, थमे हुए चक्कों में फिर जान डाल दीं। इससे यात्रियों की अटकी हुई सांस भी फिर से चलने लगी। वरना सोचिए, ठंड के दिन! और यात्री दोपहर से अगली सुबह तक कुछ अपनी किस्मत को कोसते, कुछ भारतीय रेल के चक्कों के पंक्चर होने को सराहते वही पड़े रहते न!!

असल में, मोदीजी हैं, तो मुमकिन है। उन्होंने भारतीय तकनीक को इतनी ऊंचाई तक पहुंचा दिया है कि नासा की नाक नीचे है और हम इतने ऊपर कि तीन का काट करने में भी सक्षम हैं। पहले होता यह था कि किसी दुर्घटना के इंतज़ार में बैठी-बैठी हमारी टीम इतनी उकता जाती थी, पस्त होकर सो जाती थी कि दुर्घटना के बाद उसे ही उठाने में घंटों लग जाते थे। अब उनको दुर्घटना का इंतज़ार नहीं करना पड़ता, छोटी-मोटी तो होते ही रहती है, बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएं भी खुद उनके पास चलकर आती है। वे ताक में बैठे ही रहते हैं कि दुर्घटना अब हुई कि तब हुई और होने से पहले ही अपना आर्ट दिखा देते हैं। अब भारतीय रेल जैसा कोई चुस्त रेल इस दुनिया में नहीं है कि चौबीसों घंटे किसी दुर्घटना के इंतज़ार में बैठे रहे और अपने हुनर का कौशल दिखाए!!

और पांचवीं बात ।ऐसी ही दुर्घटनाओं के सहारे हमारे देश के लोग थोड़ी-बहुत ज्यादा दुनिया भी देख लेते हैं, वरना तो उन्हें अपना परलोक सुधारने और इस जन्म में हिंदू धर्म को बचाने के झंझट से फुर्सत नहीं मिलती। लेकिन इसके लिए उन्हें किसी पैसेंजर ट्रेन में नहीं, राजधानी ट्रेन नंबर 20503 में सवार होना चाहिए, जिसके अंकों का मूलाधार 1 हो। हमारी कुशलता इसी से पता चलती है कि कितनी जल्दी दिल्ली पहुंचा जाएं। रुकने की फुर्सत नहीं है। दिल्ली पहुंचना है, तो बरौनी जंक्शन के भी मुफ्त में अतिरिक्त दर्शन हो जाएं, तो इसमें बुराई क्या है? स्वर्ग जाने के रास्ते की हर बाधा को दूर करना जरूरी है।

सब दिल्ली जाने की हड़बड़ी में है, क्योंकि जीवन का पूरा पुण्य वही समाया हुआ है। अब अगली बार से किसी पैसेंजर ट्रेन में भूलकर मत बैठना। बैठना है, तो राजधानी में बैठना। दिल्ली स्वर्ग है। मोदीजी का सेवा तीर्थ भी वही है, जहां से स्वर्ग की टिकट मिल रही है। इस पुण्य का लाभ कमाईये। जितनी जल्दी हो सके, दिल्ली जाइए। यात्री बनकर जाईए, विधायक-सांसद बनकर जाईए, मंत्री या उसके चमचे बनकर जाईए, राष्ट्रपति बनकर जाईए या उपराष्ट्रपति बनकर, या अडानी-अंबानी के वफादार नौकर बनकर जाईए, लेकिन दिल्ली जरूर जाएं। स्वर्ग का रास्ता दिल्ली से होकर जाता है।

(व्यंग्य-लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

आधुनिकता का मृगतृष्णा: आज की युवा पीढ़ी और कैंसर को दिया जा रहा मौन निमंत्रण

संजय कुमार बाटला

भारत में स्थिति और भी गंभीर है। यहाँ धूम्रपान और तंबाकू का सेवन मुख, फेफड़े और ग्रासनली (इसोफेगस) के कैंसर का प्रमुख कारण है। चिंता की बात यह है कि अब ये कैंसर 20–30 वर्ष के युवाओं में भी दिखने लगे हैं, जिनकी जड़ें किशोरावस्था में शुरू हुई धूम्रपान की आदतों में हैं।

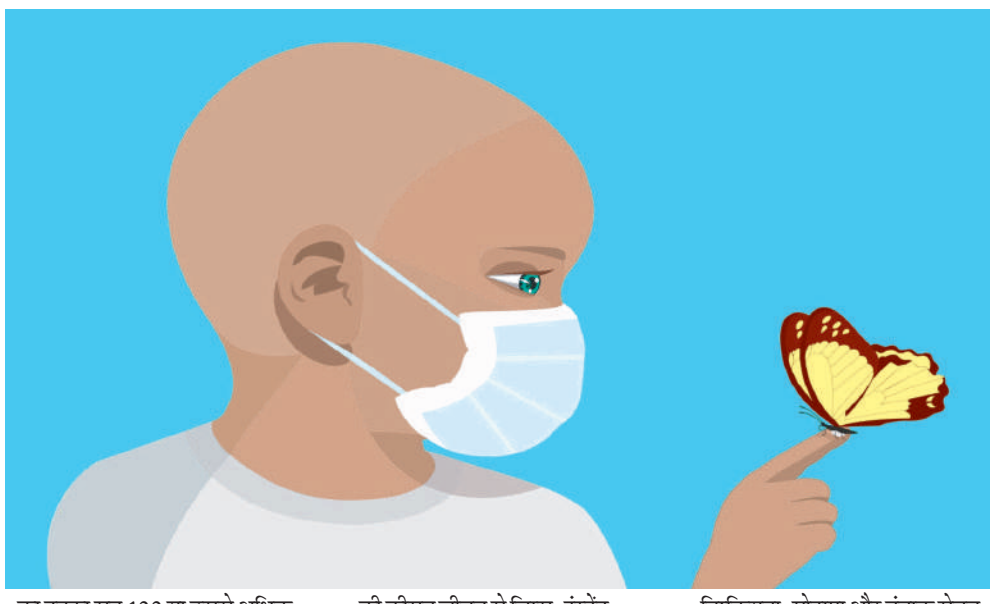

आज का युग तकनीक, सोशल मीडिया और त्वरित दिखावे का युग है। दुर्भाग्यवश, इसी चमक–दमक में "आधुनिक" कहलाने की होड़ ने एक खतरनाक भ्रम को जन्म दिया है।

सिगरेट पीना, हुक्का उड़ाना, रंग-बिरंगे शीतल पेय पीना और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड जंक फूड खाना—इन सबको आज़ादी, स्टाइल और प्रगतिशील सोच का प्रतीक मान लिया गया है। पर सच यह है कि यह आधुनिकता नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के विरुद्ध एक धीमा विद्रोह है, जो कैंसर जैसे प्राणघातक रोग को न्योता दे रहा है।

1. सिगरेट: धुएँ में लिपटी तबाही

सिगरेट केवल एक आदत नहीं, बल्कि रसायनों का ज़हरघोल मिश्रण है। इसके धुएँ में 7,000 से अधिक रसायन होते हैं, जिनमें कम से कम 70 सीधे कैंसर पैदा करने वाले (कार्सिनोजेनिक) हैं।

* ये रसायन डीएनए को नुकसान पहुँचाते हैं, शरीर में सूजन बढ़ाते हैं और कोशिकाओं को अनियंत्रित रूप से बढ़ने के लिए उकसाते हैं—यही कैंसर की शुरुआत है।

* भारत में स्थिति और भी गंभीर है। यहाँ धूम्रपान और तंबाकू का सेवन मुख, फेफड़े और ग्रासनली (इसोफेगस) के कैंसर का प्रमुख कारण है। चिंता की बात यह है कि अब ये कैंसर 20–30 वर्ष के युवाओं में भी दिखने लगे हैं, जिनकी जड़ें किशोरावस्था में शुरू हुई धूम्रपान की आदतों में हैं।

* हाल के वर्षों में विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि तंबाकू उद्योग परोक्ष विज्ञापन और आसान उपलब्धता के ज़रिये युवाओं को लक्षित कर रहा है, जो आने वाले समय में एक बड़े कैंसर संकट का संकेत है।

2. हुक्का: "सुरक्षित" समझा जाने वाला खतरनाक धोखा

हुक्का को अक्सर यह कहकर सही ठहराया जाता है कि "धुआँ पानी से छन जाता है" या "यह सिगरेट से हल्का है।" यह एक घातक मिथक है।

* वास्तविकता यह है कि एक घंटे का हुक्का सत्र 100 या उससे अधिक सिगरेटों जितना धुआँ शरीर में पहुँचा सकता है।

* हाल के स्वास्थ्य अपडेट्स (2024–2025) बताते हैं कि फ्लेवर्ड हुक्का तंबाकू में मौजूद रसायन फेफड़ों को और अधिक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इससे न केवल फेफड़े और मुँह का कैंसर, बल्कि गंभीर श्वसन रोगों का जोखिम भी कई गुना बढ़ जाता है।

* भारत में हुक्का कैफे युवाओं के बीच तेज़ी से लोकप्रिय हो रहे हैं, जिससे यह खतरा और गहराता जा रहा है। साझा पाइप और माउथपीस संक्रमण का अतिरिक्त जोखिम पैदा करते हैं।

3. मीठे शीतल पेय: मीठा ज़हर

कोल्ड ड्रिंक्स और एनर्जी ड्रिंक्स केवल प्यास नहीं बुझाते, बल्कि शरीर में मोटापा, इंसुलिन प्रतिरोध और दीर्घकालिक सूजन को बढ़ावा देते हैं—ये तीनों कैंसर के सिद्ध जोखिम कारक हैं।

* नवीन शोधों ने अत्यधिक शर्करा सेवन को कम उम्र में होने वाले कोलोरेक्टल कैंसर, मुख गुहा के कैंसर और कुछ मामलों में कैंसर के फैलाव (मेटास्टेसिस) से भी जोड़ा है।

4. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड: सुविधा की कीमत जीवन से

चिप्स, इंस्टेंट नूडल्स, पैकेज्ड बिस्किट और रेडी-टू-ईट स्नैक्स—ये सब आधुनिक जीवनशैली का हिस्सा बन चुके हैं। पर इनमें मौजूद कृत्रिम रंग, प्रिज़र्वेटिव, इमल्सीफायर और अत्यधिक नमक-चीनी आंतों के माइक्रोबायोम को बिगाड़ते हैं, मोटापा बढ़ाते हैं और कैंसरकारी यौगिक उत्पन्न करते हैं।

* 2025 तक के अध्ययनों में पाया गया है कि इन खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन करने वालों में:

* कम उम्र में प्रीकैंसरस पॉलीप्स

* स्तन, फेफड़े और पाचन तंत्र के कैंसर का जोखिम स्पष्ट रूप से अधिक है। विशेषकर युवा महिलाओं में यह खतरा और चिंताजनक रूप से बढ़ा हुआ पाया गया है।

5. कम उम्र में कैंसर: एक वैश्विक चेतावनी

दुनिया भर में 50 वर्ष से कम आयु के लोगों में कैंसर के मामलों में तेज़ वृद्धि देखी जा रही है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि यही जीवनशैली जारी रही, तो 2030 तक ऐसे मामलों में लगभग 40% तक की वृद्धि हो सकती है।

* इसके पीछे मुख्य कारण हैं—अस्वस्थ खान-पान, शारीरिक निष्क्रियता, मोटापा और तंबाकू सेवन, जो बचपन और युवावस्था से ही शुरू हो जाते हैं।

निष्कर्ष: आधुनिकता की नई परिभाषा

यह अत्यंत पीड़ादायक है जब जीवन के सबसे ऊर्जावान वर्षों में युवा कैंसर जैसी बीमारी से जूझते दिखाई देते हैं—और वह भी ऐसी आदतों के कारण जिन्हें रोका जा सकता था।

1. सच्ची आधुनिकता धुएँ के छल्लों में नहीं, बल्कि स्वस्थ श्वास में है।

2. सच्ची प्रगति रंगीन बोतलों में नहीं, बल्कि संतुलित आहार में है और

3. वास्तविक आज़ादी क्षणिक आनंद में नहीं, बल्कि दीर्घ और गुणवत्तापूर्ण जीवन में है।

अब समय आ गया है कि:

1. युवाओं को वैज्ञानिक और स्वास्थ्य-आधारित शिक्षा दी जाए

2. तंबाकू और जंक फूड के प्रचार पर सख़्त नियंत्रण हो और

3. सबसे बढ़कर, हर व्यक्ति स्वयं यह निर्णय ले कि वह अपने भविष्य के साथ समझौता नहीं करेगा।

चयन हमारे हाथ में है—आज जागरूक बनें, या कल भारी कीमत चुकाएँ।

रोबोटिक - असिस्टेड रैडिकल प्रोस्टेटेक्टॉमी (RARP) क्या है?

रोबोटिक - असिस्टेड रैडिकल प्रोस्टेटेक्टॉमी (RARP) प्रोस्टेट कैंसर के उपचार के लिए की जाने वाली एक अत्याधुनिक न्यूनतम इनवेसिव (Minimally Invasive) शल्य प्रक्रिया है।

इस सर्जरी में पूरा प्रोस्टेट ग्रंथि, इसके आसपास के कुछ ऊतक (जैसे सेमिनल वेसिकल्स) और आवश्यकता पड़ने पर पास के लिम्फ नोड्स को भी हटाया जाता है।

यह तकनीक पारंपरिक लैप्रोस्कोपिक सर्जरी को उन्नत रोबोटिक तकनीक के साथ जोड़ती है, जिससे सर्जरी अधिक सटीक, सुरक्षित और प्रभावी बनती है।

RARP कैसे की जाती है? RARP में सर्जरी प्रत्यक्ष हाथों से नहीं, बल्कि रोबोटिक प्रणाली की सहायता से की जाती है:

* पेट के नियंत्रे हिस्से में छोटे-छोटे की-होल (key-hole) चीरे लगाए जाते हैं।

* इन छिद्रों से रोबोटिक भुजाएँ, सूक्ष्म सर्जिकल उपकरण और हाई - डेफिनिशन 3D कैमरा डाला जाता है।

* सर्जन पास ही स्थित एक कंसोल (Console) पर बैठकर इन रोबोटिक भुजाओं को नियंत्रित करता है।

* सर्जन के हाथों की गतिविधियाँ मशीन द्वारा अत्यंत सूक्ष्म, कंपन-रहित (tremor-free) माइक्रो मूवमेंट्स में बदल जाती हैं।

इस प्रकार, प्रोस्टेट को पूरी तरह हटाने का लक्ष्य कम से कम शारीरिक क्षति के साथ प्राप्त किया जाता है।

RARP क्यों की जाती है? (उपयोगिता) मुख्य उद्देश्य:

1. स्थानीयकृत प्रोस्टेट कैंसर का इलाज या नियंत्रण, जब कैंसर केवल प्रोस्टेट तक सीमित हो।

२. कैंसर को शरीर में फैलने से रोकना और रोगी के जीवन की गुणवत्ता बनाए रखना।

अन्य प्रोस्टेट रोगों में इसका सीमित उपयोग संभव है, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य कैंसर उपचार ही है।

रोबोटिक-असिस्टेड सर्जरी के प्रमुख लाभ पारंपरिक ओपन प्रोस्टेटेक्टॉमी की तुलना में RARP के कई उल्लेखनीय फायदे हैं:

* न्यूनतम इनवेसिव प्रक्रिया

* कम दर्द

* छोटे निशान

* अस्पताल में कम समय

* जल्दी सामान्य जीवन में वापसी

* कम रक्तस्राव :- पेट में गैस भरने (Pneumoperitoneum) और सटीक उपकरणों के कारण रक्तस्राव काफी कम होता है।

* बेहतर दृश्यता और सटीकता 3D हाई-डेफिनिशन दृश्य से सर्जन को स्पष्ट और बड़ा दृश्य मिलता है। उपकरणों की गति मानव हाथों से अधिक लचीली और नियंत्रित होती है।

महत्वपूर्ण नर्सों की सुरक्षा Nerve - sparing techniques की मदद से:

* पेशाब पर नियंत्रण (Urinary Continence)

* यौन क्षमता (Erectile Function) को बेहतर ढंग से संरक्षित किया जा सकता है।

* कम शुरुआती जटिलताएँ बड़े अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि RARP में शुरुआती पोस्ट - ऑपरेटिव जटिलताएँ कम होती हैं।

जोखिम और सावधानियाँ हर बड़ी सर्जरी की तरह

RARP में भी कुछ संभावित जोखिम होते हैं:

* रक्तस्राव या संक्रमण

* आसपास के अंगों को क्षति

* अस्थायी या कभी-कभी स्थायी:

* मूत्र असंयम (Urinary Incontinence)

* स्तंभन दोष (Erectile Dysfunction)

इसके अलावा:

1. यह प्रक्रिया कई देशों में महंगी है।

२. लंबे समय के कैंसर नियंत्रण परिणाम सामान्यतः ओपन सर्जरी के समान होते हैं — खासकर अनुभवी सर्जन द्वारा किए जाने पर।

नवीनतम प्रगति और अत्याधुनिक विकास रोबोटिक प्रोस्टेट सर्जरी निरंतर विकसित हो रही है:

1. सिंगल-पोर्ट रोबोटिक सिस्टम

* पूरी सर्जरी एक ही छोटे चीरे से

* कम दर्द, कम संक्रमण

* कुछ मामलों में डे-केयर सर्जरी संभव

२. उन्नत फंक्शनल तकनीकें

* Retzius-sparing surgery

* Advanced nerve-sparing approaches

पेशाब नियंत्रण और यौन स्वास्थ्य की तेज़ और बेहतर रिकवरी

भारत में हालिया क्लिनिकल उपयोग से:

* जल्दी कंटिनेंस

* न्यूनतम जटिलताएँ

देखी गई हैं।

३. बढ़ता हुआ उपयोग क्षेत्र अब सावधानीपूर्वक चयनित मामलों में लोकली एडवांस्ड प्रोस्टेट कैंसर में भी उपयोग वास्तविक जीवन (real-world) परिणाम आशाजनक

4. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और सर्जिकल एनालिटिक्स

* रियल-टाइम सर्जिकल फीडबैक

* सर्जिकल वीडियो का विश्लेषण

* नर्सों की सुरक्षा और परिणामों की भविष्यवाणी सर्जन प्रशिक्षण और व्यक्तिगत उपचार योजना में क्रांति

5. हाइब्रिड और डुअल-रोबोट तकनीक अलग-अलग रोबोटिक प्रणालियों का संयुक्त उपयोग, अत्यधिक सटीकता और कम चीरे (हालाँकि अभी प्रयोगात्मक स्तर पर)

संक्षेप में Robotic - Assisted Radical Prostatectomy (RARP) है:

1. प्रोस्टेट कैंसर के लिए एक उन्नत न्यूनतम इनवेसिव सर्जरी

१. उच्च सटीकता, कम शारीरिक क्षति और तेज़ रिकवरी के लिए डिज़ाइन

३. कैंसर नियंत्रण में पारंपरिक सर्जरी के समान प्रभावी

4. निरंतर विकसित होती तकनीक, जिससे भविष्य में परिणाम और बेहतर होंगे

5. आने वाले वर्षों में रोबोटिक सर्जरी के कई चिकित्सा क्षेत्रों में मानक उपचार बनने की पूरी संभावना है।

कैंसर का चक्रव्यूह — आधुनिक विज्ञान से आयुर्वेद तक, क्या है इस लाइलाज डर की हकीकत?

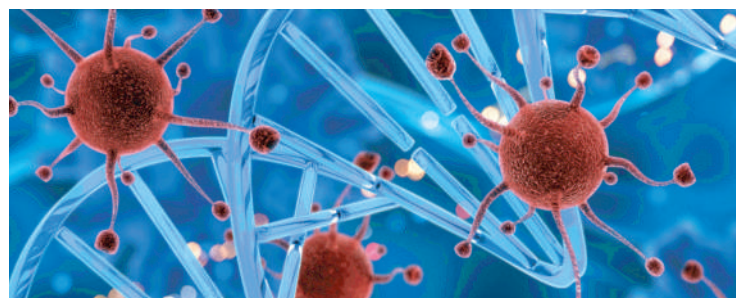

आज की दुनिया में 'कैंसर' सिर्फ एक बीमारी नहीं, बल्कि एक ऐसा शब्द है जो अच्छे - भले इंसान को अंदर तक झकझोर देता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि कैंसर कोई बाहरी दुश्मन नहीं, बल्कि हमारे अपने ही शरीर की बागी कोशिकाएं हैं?

चिकित्सा विज्ञान में हुई क्रांति और आयुर्वेद के प्राचीन ज्ञान ने आज इस बीमारी के प्रति हमारा नज़रिया बदला है।

अब सवाल सिर्फ इलाज का नहीं, शरीर को इलाज के योग्य बनाने का भी है।

कैंसर क्या है और क्यों होता है? (The Biological Breakdown) सरल शब्दों में कहें तो, कैंसर तब होता है जब शरीर की कोशिकाएं पुराने नियमों को तोड़कर अनियंत्रित रूप से बढ़ने लगती हैं। सामान्य स्थिति में कोशिकाएं मरती हैं और नई कोशिकाएं बनती हैं, लेकिन कैंसर में यह सेलुलर बैलेंस बिगड़ जाता है।

सेलुलर बैलेंस बिगड़ने के मुख्य कारण:

* जेनेटिक म्यूटेशन (DNA Damage): तंबाकू, रेडिएशन, रसायन

* जीवनशैली: प्रोसेस्ड फूड, मोटापा, शारीरिक निष्क्रियता

* कार्सिनोजेन्स: प्रदूषण, कीटनाशक, प्लास्टिक

* संक्रमण: HPV, Hepatitis B & C

ध्यान देने योग्य बात यह है कि

इनमें से ज़्यादातर कारण पोषण, इम्यूनिटी और डिटॉक्स सिस्टम से सीधे जुड़े हुए हैं।

किन अंगों में होता है सबसे ज्यादा खतरा? WHO के अनुसार:

पुरुषों में:

* फेफड़े

* मुंह

* प्रोस्टेट

महिलाओं में:

* स्तन

* गर्भाशय ग्रीवा

अन्य:

* आंत (Colon)

* लिवर

* ब्लड कैंसर

इन सभी में एक कॉमन फैक्टर है:

शरीर की प्रतिरोधक क्षमता और पोषण स्थिति।

क्या आयुर्वेद में है इसका उपचार? (The Truth of Ayurveda) आयुर्वेद कैंसर को 'अर्बुद' कहता है।

जहाँ आधुनिक चिकित्सा ट्यूमर को टारगेट करती है, वहीं आयुर्वेद इम्यूनिटी, अग्नि (Metabolism) और शरीर की रिकवरी क्षमता पर काम करता है।

सच्चाई: * एडवांस स्टेज में आयुर्वेद को अकेला इलाज मानना जोखिम भरा हो सकता हैं लेकिन एडजुवेंट थेरेपी के रूप में इसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है

आयुर्वेद + सही न्यूट्रिशन

= इलाज को सहने की शक्ति

= साइड-इफेक्ट्स से उबरने में मदद

प्रमुख जड़ी-बूटियाँ: हल्दी, गिलोय, अश्वगंधा, तुलसी (जो शरीर की सूजन, थकान और इम्यून स्ट्रेस को संतुलित करने में सहायक मानी जाती हैं)

आहार और सावधानियां: बचाव ही सबसे बड़ा इलाज (Diet & Nutrition Awareness) यहाँ सबसे ज़रूरी बात आती है — इलाज के साथ शरीर को रोज़ क्या मिल रहा है? और क्या खाएं?

* **क्रूसिफेरस सब्जियां:** ब्रोकली, पत्तागोभी

* **एंटीऑक्सीडेंट फल:** बेरीज, अनार, सिट्रस

* **साबुत अनाज:** फाइबर युक्त

* **ग्रीन टी:** पॉलीफेनोल्स से भरपूर

यह सब तभी असर करता है जब भोजन नियमित हो, मात्रा सही हो और शरीर उसे पचा सके।

क्या न करें? (Precautions)

* अत्यधिक चीनी और नमक

* प्लास्टिक में गर्म भोजन

* तंबाकू और शराब

ये तीनों इम्यून सिस्टम के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

दुर्लभ लेकिन सच

* हाथियों में कैंसर कम क्यों होता है? क्योंकि उनमें p53 जीन ज़्यादा होता है — जो कोशिकाओं की सुरक्षा करता है।

* 12–16 घंटे का नियंत्रित उपवास (Autophagy) शरीर की सफाई प्रक्रिया को सक्रिय करता है।

निष्कर्ष (सबसे ज़रूरी हिस्सा) कैंसर का सामना सिर्फ दवाओं से नहीं होता।

उसके लिए शरीर को चाहिए:

* ताकत

* पोषण

* संतुलन

* निरंतर मार्गदर्शन

1. आधुनिक विज्ञान की सटीकता,

2. आयुर्वेद की सुरक्षा, और

3. व्यक्तिगत न्यूट्रिशन प्लानिंग —

तीनों का तालमेल ही वास्तविक रास्ता है।

अगर आप या आपके परिवार में कोई इस स्थिति से जूझ रहा है... तो सिर्फ जानकारी पढ़कर रुकना काफ़ी नहीं, ज़रूरी है यह समझना:

* शरीर को अभी क्या चाहिए

* क्या चीज़ कमज़ोरी बढ़ा रही है

* और कैसे पोषण को इलाज का सहायक बनाया जाए

अगर आप चाहते हैं कि कोई आपको नियमों के भीतर, बिना झूठे वादों के, सही दिशा दिखाए, तो Nutrition & Health Coaching लेना एक समझदारी भरा कदम हो सकता है।

राउरकेला में स्थायी विज्ञापनों की आड़ में वर्षों से फल-फूल रहा भ्रष्टाचार : महानगर निगम की नई पहल स्वागतयोग्य, पर अधूरी : डॉ. राजकुमार यादव, सामाजिक कार्यकर्ता, राउरकेला (ओडिशा)

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला : राउरकेला महानगर निगम (RMC) द्वारा शहर सीमा के भीतर अस्थायी होर्डिंग, बैनर, पोस्टर, विज्ञापन वाहनों एवं अस्थायी प्रवेश द्वार (गेट) लगाने हेतु शुल्क निर्धारण एवं पूर्व अनुमति को अनिवार्य किए जाने का निर्णय निस्संदेह एक सकारात्मक कदम है। यह पहल शहर की सुंदरता, स्वच्छता और व्यवस्थित शहरी ढांचे को बनाए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा सकती है।

किन्तु इस निर्णय के साथ-साथ यह प्रश्न भी उतना ही प्रासंगिक है कि आखिर वर्षों तक नगर निगम की आंखों के सामने शहर भर में अनियंत्रित विज्ञापन कैसे लगते रहे? करोड़ों रुपये का राजस्व कहां गया? और किन लोगों की मिलीभगत से यह अवैध व्यवस्था फलती-फूलती रही?

स्थायी विज्ञापन : सौंदर्य बिगाड़ने के साथ राजस्व की खुली लूट

राउरकेला जैसे औद्योगिक एवं शैक्षणिक शहर में पिछले एक दशक से अस्थायी विज्ञापनों की बाढ़ देखी जा रही है। राजनीतिक दलों के पोस्टर, निजी कंपनियों के बैनर, कोचिंग संस्थानों के होर्डिंग, धार्मिक आयोजनों के प्रवेश द्वार, और प्रचार वाहनों का उपयोग बिना किसी स्पष्ट अनुमति प्रक्रिया के खुलेआम होता रहा है।

नगर के मुख्य चौराहों, सड़कों के डिवाइडरों, सरकारी भवनों की दीवारों, बिजली के खंभों और यहां तक कि स्कूलों एवं अस्पतालों के आसपास भी अवैध विज्ञापन लगाए जाते रहे हैं। इससे न केवल यातायात बाधित हुआ, बल्कि दुर्घटनाओं की आशंका भी बढ़ी और शहर की छवि एक अव्यवस्थित कस्बे जैसी बनती चली गई।

नियमों का कागजों तक सीमित रह जाना

नगर निगम अधिनियम और विज्ञापन उपविधियों के अनुसार किसी भी सार्वजनिक या निजी स्थान पर विज्ञापन लगाने से पूर्व अनुमति लेना और निर्धारित शुल्क का भुगतान करना अनिवार्य है। इसके बावजूद वर्षों तक इन नियमों का पालन नहीं हुआ।

प्रश्न यह है कि—

क्या महानगर निगम को इन अवैध गतिविधियों की जानकारी नहीं थी?

क्या निगरानी तंत्र पूरी तरह निष्क्रिय था?

या फिर यह सब कुछ एक सुनियोजित मिलीभगत का परिणाम था?

जमीनी हकीकत यही दर्शाती है कि यह तीसरा कारण अधिक प्रबल है।

**विज्ञापन ठेका : भ्रष्टाचार की जड़ - राउरकेला महानगर निगम में विज्ञापन प्रबंधन का कार्य सामान्यतः ठेका प्रणाली के माध्यम से संचालित होता है। नियमों के अनुसार प्रत्येक वित्तीय वर्ष में या निर्धारित अवधि के बाद पारदर्शी टेंडर प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए।

परंतु वास्तविकता यह है कि—

कई वर्षों से नए टेंडर जारी नहीं किए गए,

पुराने ठेकेदारों को ही नगन्य शुल्क व अनौपचारिक रूप से काम करने दिया गया,

और बिना किसी प्रतिस्पर्धा के करोड़ों रुपये के संभावित राजस्व से नगर निगम को वंचित किया गया।

विश्वसनीय सूत्रों एवं उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार, यदि विज्ञापन शुल्क का विधिवत संग्रह किया जाता, तो नगर निगम को प्रतिवर्ष कई करोड़ों रुपये तक की आय हो सकती थी। यह राशि सड़क मरम्मत, पेयजल आपूर्ति, नालों की सफाई, स्ट्रीट लाइटिंग और गरीब बस्तियों के विकास में लगाई जा सकती थी।

"बंदरबांट" का खुला खेल

वर्षों से देखने में आ रहा है कि कुछ चुनिंदा एजेंसियों और अधिकारियों के बीच एक अघोषित समझौता बना हुआ था।

विज्ञापन लगाने की छूट दी जाती रही,

मामूली राशि निजी तौर पर वसूली जाती रही,

और सरकारी रिकॉर्ड में वास्तविक आंकड़े कभी दर्ज ही नहीं हुए।

यह व्यवस्था पूरी तरह "बंदरबांट" पर आधारित थी, जिसमें नगर निगम का राजस्व कुछ व्यक्तियों की जेब में जाता रहा।

आम जनता को हुआ सीधा नुकसान

इस भ्रष्ट व्यवस्था का सीधा असर आम नागरिकों पर पड़ा

टूटी सड़कों की मरम्मत नहीं हुई, बरसात में जलजमाव की समस्या बढ़ती रही,

कचरा प्रबंधन बदहाल रहा,

और बुनियादी नागरिक सुविधाओं के लिए लोग संघर्ष करते रहे।

जब महानगर निगम के पास संसाधन होते हुए भी उनका उपयोग नहीं होता, तो यह सीधा-सीधा प्रशासनिक विफलता और भ्रष्टाचार का प्रमाण है।

नई शुल्क व्यवस्था : स्वागत योग्य, पर पर्याप्त नहीं

RMC द्वारा अब अस्थायी विज्ञापनों के लिए शुल्क तय करना एक सराहनीय कदम है। यह—

दृश्य प्रदूषण को नियंत्रित करेगा,

शहर को व्यवस्थित बनाएगा,

और राजस्व बढ़ाने में सहायक होगा।

परंतु केवल शुल्क तय कर देना ही पर्याप्त नहीं है। यदि पुराने भ्रष्ट तंत्र को समाप्त नहीं किया गया, तो यह नई व्यवस्था भी धीरे-धीरे उसी रास्ते पर चली जाएगी।

मेरी प्रमुख मांगें

एक सामाजिक कार्यकर्ता और जागरूक नागरिक के रूप में मैं निम्नलिखित मांगें पुरजोर तरीके से उठाता हूँ:

1. स्वतंत्र उच्चस्तरीय जांच

पिछले 10 वर्षों में विज्ञापन ठेके, शुल्क संग्रह और अनुमति प्रक्रिया की स्वतंत्र जांच कराई जाए। इसमें राज्य सतर्कता विभाग या किसी न्यायिक समिति को शामिल किया जाए।

2. लंबित टेंडरों का तत्काल प्रकाशन

विज्ञापन प्रबंधन हेतु पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी ई-टेंडर प्रक्रिया तत्काल शुरू की जाए, जिससे अधिकतम राजस्व प्राप्त हो सके।

3. दोषियों पर कठोर कार्रवाई

जो भी अधिकारी, कर्मचारी या निजी एजेंसियां राजस्व हानि और अवैध गतिविधियों में शामिल पाई जाएं, उनके विरुद्ध—

विभागीय कार्रवाई,

आर्थिक वसूली,

और आपराधिक मुकदमा दर्ज किया जाए।

4. डिजिटल ट्रैकिंग सिस्टम

सभी विज्ञापनों का डिजिटल पंजीकरण हो, जिसमें—

स्थान,

अवधि,

शुल्क,

और अनुमति संख्या सार्वजनिक पोर्टल पर उपलब्ध हो।

5. नागरिक निगरानी तंत्र

शहरवासियों के लिए एक हेल्पलाइन या मोबाइल ऐप बनाया जाए, जहां अवैध विज्ञापनों की शिकायत दर्ज की जा सके।

प्रशासन से अपेक्षा

महानगर निगम प्रशासन यदि वास्तव में राउरकेला को स्वच्छ, सुंदर और सुव्यवस्थित बनाना चाहता है, तो उसे केवल चेतावनी और अपील तक सीमित नहीं रहना चाहिए।

जरूरत है—

ईमानदार क्रियान्वयन की,

नियमित निरीक्षण की,

और राजनीतिक या आर्थिक दबाव से मुक्त निर्णय लेने की।

निष्कर्ष

राउरकेला महानगर निगम का हालिया निर्णय एक सही दिशा में उठाया गया कदम है, किंतु यह तभी सार्थक होगा जब इसके साथ-साथ वर्षों से चले आ रहे भ्रष्टाचार के नेटवर्क को पूरी तरह ध्वस्त किया जाए।

शहर की जनता अब जागरूक हो चुकी है। वे यह जानना चाहती हैं कि—

उनका पैसा कहां गया,

किसने लूटा,

और कब तक यह लूट जारी रहेगी।

यदि प्रशासन ने इस बार भी आंखें मूंद लीं, तो यह केवल व्यवस्था की विफलता नहीं, बल्कि जनता के विश्वास के साथ खुला धोखा होगा।

मैं, सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. राजकुमार यादव, यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि यह लड़ाई किसी व्यक्ति विशेष के विरुद्ध नहीं, बल्कि उस व्यवस्था के खिलाफ है जो जनता के हक पर डाका डालती रही है।

जब तक राउरकेला में पारदर्शिता, जवाबदेही और ईमानदारी स्थापित नहीं होती, तब तक यह आवाज उठती रहेगी—सड़कों पर भी और कलम के माध्यम से भी।

चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था में भारी कमी - डॉ राजकुमार यादव

राज्य और केंद्र सरकार की उदासीनता से राउरकेला उपेक्षित

राउरकेलाः ओडिशा का प्रमुख औद्योगिक केंद्र राउरकेला राज्य के राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देता है। नगर निगम और इस्पात नगरी क्षेत्र को मिलाकर यहां की आबादी 9 लाख से अधिक हो चुकी है, इसके बावजूद शहर आज भी बुनियादी चिकित्सा शिक्षा और उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित है। मौजूदा हालात में राउरकेला के लिए नया मेडिकल कॉलेज और अस्पताल अब विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुका है।

डॉ राजकुमार यादव के अनुसार- ₹अन्य जिलों को प्राथमिकता, राउरकेला की अनदेखी

राज्य के कई जिलों में नए मेडिकल कॉलेज और अस्पतालों की स्थापना की जा रही है, लेकिन राउरकेला को केवल घोषणाओं और अधूरे वादों तक सीमित रखा गया है। इसकी न्यायसंगत मांग को लगातार नजरअंदाज कर अन्य जिलों को प्राथमिकता दी जा रही है। इसका परिणाम यह है कि गंभीर रोगों के इलाज के लिए यहां के लोगों को लगभग 400 किलोमीटर दूर बड़े शहरों की ओर रुख करना पड़ता है जो निश्चित ही दुर्भाग्य का विषय है"

प्रधानमंत्री की घोषणा आज भी अधूरी

1 अप्रैल 2015 को अपने पहले राउरकेला दौरे के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेल (SAIL) द्वारा संचालित इस्पात जनरल अस्पताल (IGH) को सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल और मेडिकल कॉलेज में विकसित करने की घोषणा की थी।

इसके तहत इस्पात मंत्रालय द्वारा NBCC के माध्यम से लगभग 294.82 करोड़ रुपये की लागत से नया अस्पताल भवन तैयार किया गया, जिसका उद्घाटन 21 मार्च 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया।

बाद में दिसंबर 2022 में इस अस्पताल का संचालन और रखरखाव निजी संस्था अपोलो हॉस्पिटल्स को सौंप दिया गया।

1 मार्च 2023 से अपोलो ने प्रबंधन संभाला और 18 अक्टूबर 2023 से यह मल्टी-स्पेशियलिटी अस्पताल औपचारिक रूप से शुरू हुआ।

लेकिन प्रधानमंत्री की मूल घोषणा का सबसे अहम हिस्सा—पोस्ट ग्रेजुएट संस्थान सहित मेडिकल कॉलेज—आज तक धरातल पर नहीं उतर सका। अस्पताल तो निजी माध्यम से चालू हो गया, पर मेडिकल कॉलेज की योजना को पूरी तरह भुला दिया गया।

ESIC मेडिकल कॉलेजः उम्मीद से निराशा तक

2009 से ही कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) द्वारा राउरकेला में मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की मांग की जा रही थी।

2014 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने कुआरमुंडा डेयरी फार्म के पास लगभग 25 एकड़ भूमि पर ESIC मेडिकल कॉलेज की आधारशिला रखी थी।

लेकिन राउरकेला में परियोजना स्थापित करने के बजाय इसे भुवनेश्वर स्थानांतरित कर दिया गया। बाद में केंद्र सरकार की चिकित्सा शिक्षा से जुड़ी नीतिगत बदलावों के चलते यह परियोजना और भी अनिश्चितता में फंस गई।

श्रम मंत्रालय पर श्रमिकों की उपेक्षा का आरोप

केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने वित्तीय वर्ष 2026–27 में देश में 50 बेड वाले 10 नए मेडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा की है, जिसकी अधिसूचना 14 तारीख को जारी हुई।

इस सूची में भुवनेश्वर को शामिल किया गया, लेकिन राउरकेला को एक बार फिर नजरअंदाज कर दिया गया।

वास्तव में यह निर्णय पहले ही 27 जून को हुई ESIC की 196वीं बैठक में लिया जा चुका था।

इससे जिले के लगभग 2 लाख बीमाधारक श्रमिक एक बार फिर उपेक्षा के शिकार हो गए हैं।

नजरअंदाज किए गए व्यवहारिक प्रस्ताव

स्मार्ट सिटी राउरकेला में मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की स्थापना के कई व्यवहारिक विकल्प मौजूद हैं, जैसे—

NIT राउरकेला के माध्यम से मेडिकल कॉलेज की स्थापना

IIT खड़गपुर मॉडल पर मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च अस्पताल

रेलवे द्वारा बंडामुंडा अस्पताल का उन्नयन

जिला खनिज फाउंडेशन (DMF) फंड से मेडिकल कॉलेज की स्थापना

यदि रेलवे अपनी देशव्यापी उन्नयन योजना में बंडामुंडा अस्पताल को शामिल करे, तो पूरे क्षेत्र को इसका बड़ा लाभ मिल सकता है।

RGH का भविष्य संकट में

राउरकेला सरकारी अस्पताल (RGH) गरीब और मजदूर वर्ग के लिए एकमात्र बड़ा सहारा है।

यहां प्रतिदिन लगभग 2000 मरीज आते हैं, जबकि कुल बेड केवल 376 हैं। मरीजों को बरामदों में इलाज कराने और सोने के लिए मजबूर होना पड़ता है। आधुनिक उपकरणों की भी भारी कमी है।

कई बार मुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री द्वारा बेड बढ़ाने की घोषणा की गई, लेकिन आज तक यह वादा पूरा नहीं हुआ।

2 मार्च 2024 को लगभग 660 करोड़ रुपये की लागत से अस्पताल के विस्तार और नवीनीकरण की आधारशिला रखी गई, लेकिन जमीन की कमी के कारण परियोजना आगे नहीं बढ़ सकी।

16 मेडिकल कॉलेज बने, राउरकेला को एक भी नहीं

पिछले 10 वर्षों (2016–2026) में ओडिशा सरकार ने 12 नए सरकारी मेडिकल कॉलेज स्थापित किए, जिनमें शामिल हैं—

तालचेर, फुलबाणी, जाजपुर, भवानीपटना, केंदुझर, सुंदरगढ़, पुरी, बलांगीर, बालेश्वर, कोरापुट, बारिपदा आदि।

अब सरकार भद्रक, जगतसिंहपुर, ढेंकानाल और नबरंगपुर में 4 और मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना बना रही है।

विडंबना यह है कि इतने बड़े औद्योगिक और जनसंख्या वाले शहर राउरकेला को आज तक एक भी मेडिकल कॉलेज नहीं मिल पाया।

वहीं डॉ यादव ने कहा - राउरकेला की अनदेखी अब केवल प्रशासनिक चूक नहीं, बल्कि स्वास्थ्य अधिकारों का गंभीर हनन बन चुकी है। यदि राज्य और केंद्र सरकार ने शीघ्र ठोस निर्णय नहीं लिया, तो यह उपेक्षा आने वाले वर्षों में एक बड़े सामाजिक और मानवीय संकट का रूप ले सकती है।

देवयुग ने ब्रह्म बिंदु जीबन रख्या केलिए मैराथन ऑर्गनाइज़ किया

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : देवयुग ब्रह्म विन्दु 18 जनवरी को सुबह 6:30 बजे फॉरेस्ट पार्क से रथ रोड होते हुए लिंगराज मंदिर तक हेल्थ, ह्यूमैनिटी, वेलनेस और ब्लड डोनेशन अवेयरनेस के लिए एक मैराथन ऑर्गनाइज़ कर रहा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री बिस्वेश्वर टुडू, एकाम्र MLA बाबू सिंह, सेंट्रल MLA अनंत नारायण जेना, IPS सौमेंद्र प्रियदर्शी, सीनियर लीडर सुरेश राउतराय, मनमथ राउतराय, संजिब पाइकराय, बासुदेव भट्ट, प्रसन्ना बिशोयी, दुर्गा सामंन्तराय, मीरा परिडा, सत्यव्रत परिजा ने इवेंट में हिस्सा लिया और पार्टिसिपेंट्स को मेडल बांटे। इस मौके पर, देवयुग ब्रह्मा विन्दु मोबाइल एप्लीकेशन भी लॉन्च किया गया। यह एक ऑनलाइन ब्लड डोनेशन प्लेटफॉर्म है जिसे ब्लड डोनर्स और पेशेंट्स को समय पर जान रख्या मदद के लिए कनेक्ट करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। क्लोज़िंग सेरेमनी सुबह 9:00 बजे फॉरेस्ट पार्क में हुई। इस मौके पर, सभी पार्टिसिपेंट्स को मेडल देकर सम्मानित किया गया। कल्चरल प्रोग्राम में ओडिशा के मशहूर सिंगर ने म्यूज़िक परफ़ॉर्म करके सबका मनोरंजन किया। चीफ़ एंटरप्रेन्योर देवब्रत नायक की इस शानदार पहल की सबने तारीफ़ की।

नशे में धुत युवक की पागलपन भरी घटना से ट्रेन रुकी दी

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : शराबी ने ट्रेन की पटरी पर ड्रामा किया। राजमहल चौक के पास ट्रेन रोक दी। फालिकिया बस्ती में रहने वाले एक शराबी ने ऐसा ही नजारा देखा है। युवक ने ट्रेन रोकी और ट्रेन की पटरी पर सोता हुआ दिखा। सूचना मिलने पर RPF और GRP पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस की दो टीमों ने शराबी को गिरफ्तार कर लिया है। इस बीच, इस घटना ने रेलवे सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। यात्रियों की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं। युवक के गुस्से की वजह से अमृत भारत एक्सप्रेस को भुवनेश्वर स्टेशन के पास 6 मिनट तक रोकना पड़ा। रेलवे ने इस बारे में सफाई दी है। घटना सुबह 9:48 बजे हुई। युवक ने चलती ट्रेन के सामने आकर सुसाइड करने की कोशिश की। लोको पायलट ने अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल करते हुए इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन को रोक दिया। हालांकि, लक्ष्मीसागर इलाके का रहने वाला युवक शराब पीता हुआ पाया गया।

प्रगति ई विचार साहित्य महोत्सव 2026 का भव्य समापन

2,500 से अधिक दर्शकों की उपस्थिति, यादगार प्रस्तुतियाँ और अविस्मरणीय सांस्कृतिक अनुभवों के साथ

नई दिल्ली। प्रगति ई विचार साहित्य महोत्सव (PVLF २०२६) का पाँचवाँ संस्करण, एलटीजी ऑडिटोरियम, मंडी हाउस में दो दिनों तक चले साहित्यिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक आयोजनों के बाद भव्य रूप से संपन्न हुआ। भौतिक और वर्चुअल दोनों माध्यमों से २,५०० से अधिक दर्शकों की उपस्थिति के साथ, पी वी एल एफ २०२६ इस वर्ष दिल्ली के सबसे प्रभावशाली और पसंद किए जाने वाले साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों में से एक बनकर उभरा। इस वर्ष की थीम "द ब्रेकथ्रू एडिशन – परिवर्तनकारी संवादों के ५ वर्ष" रही, जिसने देशभर से नवोदित एवं स्थापित लेखक, प्रकाशक, कलाकार, युवा रचनाकार, विद्यार्थी और साहित्य प्रेमियों को एक साझा मंच पर एकत्रित किया। महोत्सव के दौरान सभागार खचाखच भरे रहे और कार्यक्रम के हर खंड को दर्शकों का भरपूर प्रेम और सहभागिता मिली।

पी वी एल एफ २०२६ का एक प्रमुख आकर्षण इंद्राणी मुखर्जी द्वारा प्रस्तुत और इंद्राणी मुखर्जी एंटरप्राइज के अंतर्गत मंचित नाट्य प्रस्तुतियों का दिल्ली में पहला प्रदर्शन रहा, जिसे विशेष रूप से इसी महोत्सव में प्रस्तुत किया गया। रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं से प्रेरित इन दो नाट्य प्रस्तुतियों को दर्शकों से स्टैंडिंग ओवेशन और व्यापक सराहना प्राप्त हुई, "चित्रांगदा" 17 जनवरी २०२६, "नायिका भूमिका" 18 जनवरी २०२६ को आयोजित हुई।

शास्त्रीय साहित्य की गहराई और समकालीन भावनात्मक अभिव्यक्ति के अद्भुत संगम के माध्यम से इन प्रस्तुतियों ने पहचान, नारीत्व, साहस और आंतरिक संघर्ष जैसे विषयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। इन नाट्य प्रस्तुतियों ने महोत्सव को एक गहरी सांस्कृतिक पहचान दी और साहित्य को पुस्तकों से आगे मंच और अनुभव तक विस्तारित किया।

महोत्सव की ऊर्जा को और बढ़ाते हुए, इंडिया म्यूज़िक कलेक्टिव द्वारा प्रस्तुत लाइव जैमिंग सेशन पी वी एल एफ २०२६ के सबसे यादगार अनुभवों में से एक रहा। यह सत्र पूरी तरह हाउसफुल रहा — सभागार की हर सीट भरी हुई थी और कई दर्शक खड़े होकर भी कार्यक्रम का आनंद लेते दिखाई दिए। दर्शकों ने गानों के साथ गुनगुनाते, तालियाँ बजाते और पूरे उत्साह के साथ संगीत में डूबकर सहभागिता की। इस जैमिंग सेशन ने साहित्य, संगीत और सामूहिक आनंद को एक साथ जोड़ते हुए दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी।

एक और विशेष आकर्षण रहा SOLH Wellness कॉर्नर, जहाँ विभिन्न आयु वर्ग के लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्ट्रेफी कियोस्क के माध्यम से लोगों के तनाव स्तर, तनाव के कारणों और उनसे निपटने के तरीकों को रियल-टाइम में समझा गया। दिलचस्प बात यह रही कि समग्र रूप से प्रतिभागियों के तनाव स्तर अपेक्षाकृत कम पाए गए, जो इस बात को दर्शाता है कि महोत्सव का वातावरण कितना सकारात्मक, आनंददायक और सुकून देने वाला था। यह वेलनेस कॉर्नर पी वी एल एफ २०२६ में मानसिक स्वास्थ्य और संस्कृति का एक अनूठा संगम बना।

इसके अतिरिक्त, महोत्सव में इंटरएक्टिव स्टॉल्स, फूड स्टॉल्स, छात्रों के लिए व्यावहारिक कार्यशालाएँ और संवादात्मक क्षेत्र भी मौजूद रहे, जिन्होंने सहभागिता, संवाद और सामुदायिक जुड़ाव को और सशक्त बनाया। इन सभी तत्वों ने पी वी एल एफ २०२६ को केवल एक साहित्यिक आयोजन नहीं, बल्कि एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक अनुभव बना दिया।

मीट एंड ग्रीट सत्र भी महोत्सव के प्रमुख आकर्षणों में शामिल रहे, जहाँ पाठकों, छात्रों और उभरते लेखकों को लेखकों, कलाकारों और वक्ताओं से सीधे संवाद करने का अवसर मिला। इन सत्रों ने व्यक्तिगत बातचीत, मार्गदर्शन और प्रेरणा के कई यादगार क्षण रचे।

इस संस्करण का एक महत्वपूर्ण स्तंभ रहा पी वी एल एफ जूनियर – यंग वॉयसेज़ पी वी एल एफ, जिसमें स्कूल के छात्रों ने कहानी कहने, कविता पाठ और स्पोकन वर्ड के माध्यम से मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस खंड ने युवा रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया और भविष्य के लेखकों एवं विचारकों को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का मंच दिया।

पी वी एल एफ २०२६ में अन्य प्रमुख गतिविधियाँ भी शामिल रहीं:लेखक ओपन माइक सत्र,थिएटर और लाइव म्यूज़िक सहित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ,साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संवाद सत्र,पी वी एल एफ लेखक एवं प्रकाशक उत्कृष्टता पुरस्कार,पाठकों, लेखकों और प्रकाशकों के लिए इंटरएक्टिव सेशंस,दोनों दिनों के दौरान महोत्सव का हर एक सत्र अत्यधिक सराहा गया। सभागार पूरे समय भरे रहे, चर्चाएँ जीवंत रहीं और दर्शकों की ऊर्जा सुबह से शाम तक बनी रही। उत्सव का माहौल जिज्ञासा, सीख, उत्सव और आनंद से भरपूर था। जिसने पी वी एल एफ २०२६ को सभी आयु वर्गों के लिए एक सुपर-डुपर हिट संस्करण बना दिया।

महोत्सव की सफलता में इसके प्रायोजकों और साझेदारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कोका कोला, आधिकारिक बेवरेज पार्टनर के रूप में, पूरे आयोजन के दौरान ऊर्जा और ताज़गी बनाए रखने में अहम सहयोगी रहा। प्रायोजकों, साझेदारों और सहयोगियों के सामूहिक सहयोग से पी वी एल एफ २०२६ का आयोजन सुचारू और प्रभावशाली ढंग से संपन्न हुआ।

फ्रंटलिस्ट मीडिया द्वारा क्यूरेट किया गया पी वी एल एफ, पाँच वर्षों में नवोदित लेखकों, सांस्कृतिक संवाद और सार्थक विचार-विमर्श का एक सशक्त मंच बन चुका है। फ्रंट लिस्ट मीडिया के संस्थापक एवं सीईओ कपिल गुप्ता के मार्गदर्शन और पूरी टीम के अथक प्रयासों से प्रगति ई विचार साहित्य महोत्सव २०२६ एक शानदार सफलता के रूप में संपन्न हुआ, जिसने आने वाले संस्करणों के लिए एक मजबूत मानक स्थापित किया।

ब्राह्मण विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित

समाज को जोड़े रखने के लिए वैवाहिक परिचय सम्मेलन जरूरी: धर्मेन्द्र भारद्वाज

स्वतंत्र सिंह भुल्लर, नई दिल्लीः मेरठ। अखिल भारतीय ब्राह्मण हीरोज़ संगठन (संगठन) द्वारा दुर्गा मंदिर, नौचंदी मैदान मेरठ में ब्राह्मण विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में लगभग डेढ़ सौ विवाह योग्य युवक-युवतियों ने भाग लिया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य धर्मेन्द्र भारद्वाज रहे। विशिष्ठ अतिथि विमल शर्मा (सभापति, जिला सहकारी बैंक), सुनील भराला (पूर्व दर्जा प्राप्त मंत्री), राजेन्द्र शर्मा (पूर्व विधायक), विशाल कौशिक (अध्यक्ष ई रिक्शा यूनियन) रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं० राजेश शर्मा और संचालन राजू शर्मा और त्रिनाथ मिश्रा ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर सभी अतिथियों का फूल-माला और मोमेंटो देकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर वैवाहिक परिचय पत्रिका का विमोचन भी किया गया। मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य धर्मेन्द्र भारद्वाज ने अपने अतिथि उद्बोधन में कहा कि समाज को जोड़े रखने के लिए वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित होते रहने जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि परिचय सम्मेलन समाज को जोड़े रखने का काम करते हैं। विशिष्ट अतिथि पं० सुनील भराला ने ब्राह्मण समाज के गौरवशाली इतिहास से सबको अवगत कराते हुए समाज के लोगों से आह्वान किया कि वे भगवान परशुराम का जीवन-दर्शन पढ़ें और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। पं० राजेन्द्र शर्मा पूर्व विधायक ने कहा कि ब्राह्मण समाज ने सदा ही समाज को जोड़ने का काम किया है और ऐसे आयोजनों से समाज को नई दिशा और दशा मिलेगी। कार्यक्रम के दौरान ब्राह्मण समाज के हित में काम करने वाले आशु शर्मा, सुमित प्रधान महादेव, महेश शर्मा, पुष्पेन्द्र शर्मा, रविदत्त शर्मा, वीरेन्द्र शर्मा पार्षद, सुमित शर्मा पार्षद, सुमित मिश्रा पार्षद, भरत शर्मा पार्षद पति, अरविन्द शर्मा, विशाल कौशिक, सुभाष शर्मा, हरीशचंद शर्मा, डॉ० गलेन्द्र शर्मा, अंकित शर्मा, जितेन्द्र शर्मा, प्रभात शर्मा, दीपक शर्मा, शशि कौशिक, ममता दीक्षित, रेखा शर्मा, राजरानी शर्मा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम सफल बनाने में सुरेशचंद शर्मा, अरविन्द शर्मा, रजनीश शर्मा, विनय शर्मा, नरेन्द्र शर्मा, विमल शर्मा, ब्रजेश शर्मा, पवन शर्मा, प्राची शर्मा, हिमा गौड़ कौशिक का विशेष योगदान

करमजीत सिंह रिंटू ने भवानी नगर में विकास कार्यों के उद्घाटन करके निर्माण करवाएं शुरु

अमृतसर, 18 जनवरी (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर चेयरमैन एवं विधानसभा उत्तरी क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू ने वार्ड नंबर 9 के क्षेत्र भवानी नगर में विकास कार्यों के उद्घाटन करके निर्माण कार्य शुरू करवाए। रिंटू ने कहा कि सभी विकास कार्य आने वाले दिनों में तेजी से पूरे करवाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लोगों को जिन-जिन समस्याओ से गुजरना पड़ रहा था, अब उन सारी समस्याओं का हल निकल जाएगा। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र की पहले सीवरेज समस्या का हल निकाला गया और अब गलियों का निर्माण शुरू करवा दिया गया है।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि उत्तरी विधानसभा क्षेत्र की सभी सड़कों का नवीनीकरण करने की पहले से ही मंजूरी ली हुई है। उन्होंने कहा कि टूटी हुई सड़कों का निर्माण पहले करवाया गया था। अब सर्दी का मौसम आने पर सड़कों को बनाने के प्रिमिक्स प्लॉट बंद है। उन्होंने कहा कि फरवरी महीने के अंत में प्रिमिक्स के प्लॉट शुरू होने पर शेष रहती सड़कों को बनवाने के कार्य शुरू करवा दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनकर उनका हल निकाला जा रहा है।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि जब से उत्तरी विधानसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी मिली है, तब से ही उत्तरी विधानसभा क्षेत्र प्रत्येक तरह के विकास कार्य करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों के लिए पंजाब सरकार की ओर से फंड की कोई भी कमी नहीं आ रही है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की पंजाब सरकार की लोगों के प्रति लाभकारी योजनाओं को लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। जिस कारण प्रतिदिन अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों के लोग आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं। इस अवसर पर आम आदमी पार्टी के वार्ड इंचार्ज शिवानी, साहिल सगगर और भारी संख्या में वार्ड के गणमान्य लोग मौजूद थे।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में हेमंत सोरेन पेशकरेगे एनर्जी ट्रांजिशन का ग्लोबल मांडल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांचीं स्विट्जरलैंड में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम और यूके की यात्रा के क्रम में विश्व स्तर पर ऊर्जा क्षेत्र के अग्रणी निवेशकों, प्रौद्योगिकी प्रदाताओं और ऊर्जा के क्षेत्र में नीति-निर्माण करने वाले संस्थानों के साथ झारखंड राज्य का संवाद कायम होगा। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल प्राकृतिक स्रोतों से उत्पादित की जाने वाली ऊर्जा, ग्रिड आधुनिकीकरण, ऊर्जा भंडारण, स्वच्छ ईंधन और औद्योगिक डीकार्बोनाइजेशन से जुड़े निवेश अवसरों को रेखांकित करेगा। दावोस और यूनाइटेड किंगडम में अपनी सहभागिता के माध्यम से, झारखंड एक मॉडल प्रस्तुत कर रहा है जो विश्वसनीय, समावेशी और वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक है। एक ऐसा मॉडल जो आर्थिक विकास को गति देता है और साथ ही प्रकृति की सीमाओं तथा आने वाली पीढ़ियों की आकांक्षाओं का सम्मान भी करता है

इससे पहले स्विट्जरलैंड में भारत के राजदूत मृदुल कुमार ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख में मुलाकात की। मुख्यमंत्री को उन्होंने वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम 2026 के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। मालूम हो कि झारखण्ड राज्य के 25 वर्ष पूरे होने के बाद यह पहला आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल है जो दावोस में आयोजित वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में भाग ले रहा है।

झारखंड में प्राकृतिक स्रोतों से उत्पादित की जाने वाली ऊर्जा की व्यापक संभावना है। यहां के प्रचुर प्राकृतिक संसाधन राज्य को एनर्जी ट्रांजिशन की दिशा में अग्रणी बनाएंगे। प्रतिनिधिमंडल बताएगा कि भारत ने जो नेट-जीरो टारगेट और ग्रीन इकोनॉमी की दिशा में दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाने का जो संकल्प लिया है उसे झारखंड दोहराएगा। झारखंड "प्रकृति के साथ सामंजस्य में विकास" की बात को अपने इस पहल से पुख्ता भी करेगा। यह दृष्टिकोण न सिर्फ भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं में झारखंड की ऐतिहासिक भूमिका को रेखांकित करता है, बल्कि एक टिकाऊ वैश्विक भविष्य के प्रति राज्य की जिम्मेदारी को भी दर्शाता है। झारखंड की यह पहल भारत–यूके के साझा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, उनसे निपटने के लिए नीतियों और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को भी प्रतिबिंबित करेग

युवा झारखंड विजन 2050 के लक्ष्य को साधने के लिए राज्य के समृद्ध विरासत के साथ तेजी से बदलते वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य के अनुरूप स्वयं को ढाल रहा है। जैसे-जैसे विश्व स्वच्छ ऊर्जा प्रणालियों की ओर अग्रसर हो रहा है, वैसे-वैसे झारखंड एक संतुलित मार्ग अपना रहा है। एक ऐसा मार्ग जो ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और रोजगार सृजन को सुनिश्चित करते हुए नवीकरणीय एवं कम-कार्बन ऊर्जा के विस्तार को बढ़ावा देता है। झारखंड सरकार का मानना है कि प्राकृतिक संसाधनों से उत्पादित ऊर्जा न्यायसंगत और समावेशी होनी चाहिए, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर रही है। झारखंड सरकार का मॉडल श्रमिकों के कौशल विकास, सामुदायिक भागीदारी और सभी को समान अवसर पर विशेष बल देता है।

अगर शिरोमणि कमेटी के प्रधान गुरु गोबिंद सिंह जी के सिपाही होते तो मुझे बेहद खुशी होती, लेकिन वे सुखबीर बादल के सिपाही हैं – मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान

अमृतसर,(साहिल बेरी)

आप ने 2027 के विधानसभा चुनावों के लिए मजीठा हलके से तलवीर सिंह गिल को उम्मीदवार घोषित किया

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुखिया के राज्य को फिर से बेअदबी और गुंडागर्दी के काले दौर में धकेलने के मंसूबों को लोग कभी कामयाब नहीं होने देंगे – मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान

मैंने श्री अकाल तख्त साहिब के सम्मान को राष्ट्रपति से भी ऊपर रखा – मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान

पहले की सरकारों में जनता का पैसा नेताओं द्वारा लूटा जाता था, लेकिन अब शानदार सड़कें बन रही हैं – मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने मजीठा में 20 वर्षों बाद 11.32 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली 23 ग्रामीण सड़कों का शिलान्यास किया,पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज मजीठा में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान 23 ग्रामीण लिंक सड़कों का शिलान्यास किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि पंजाब में अब डर, पर्ची सिस्टम (जबरन वसूली) और अकालियों की गुंडागर्दी का दौर खत्म हो चुका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के लोगों ने डराने-धमकाने वाली राजनीति को पूरी तरह नकार दिया है और विकास, जवाबदेही व जनकल्याण आधारित मॉडल को अपनाया है।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि अकालियों की सत्ता में वापसी का मतलब फिर से बेअदबी, निर्दोष लोगों पर गोलियां और दहशत का माहौल होगा। उन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद जनरल डायर को डिनर पर बुलाने को पंजाब के साथ विश्वासघात बताया और कहा कि लोग इसे कभी नहीं भूलेंगे।

मुख्यमंत्री मान ने कहा कि धार्मिक संस्थाओं को गुरुओं की सेवा करनी चाहिए, न कि किसी राजनीतिक परिवार की। उन्होंने कहा कि मुफ्त बिजली, सड़कों का नवीनीकरण और जनहितकारी प्रशासन ने अब संकीर्ण राजनीति की जगह ले ली है।

झारखंड के पर्यटन में निवेश को आकर्षित करायेगा मुख्यमंत्री का विदेश भ्रमण

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची ,चाहे प्रकृति प्रेमी हों, चाहे आध्यात्म की खोज, इतिहास में रुचि रखने वाले, रोमांच के शौकीन, सांस्कृतिक अनुभव चाहने वाले या सार्थक यात्राओं की तलाश में रहने वाले लोग। चिंतन हो या अन्वेषण, एकांत हो या सामूहिक अनुभव मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के नेतृत्व में झारखण्ड ऐसी ही यात्रा का आमंत्रण वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में दुनिया को देगा। ऐसा आमंत्रण जो आत्मीय और चिरस्थायी है। जोहार से अपने मेहमानों का स्वागत करने वाले युवा झारखण्ड ने पर्यटन के क्षेत्र में ऊंची छलांग लगाई है, देशी-विदेशी पर्यटकों का मनपसंद डेस्टिनेशन अब 25 वर्ष का युवा झारखण्ड बन रहा है और निवेश के माध्यम से पर्यटन के क्षेत्र में अनंत अवसरों के द्वार खोलने को युवा राज्य तैयार है।

झारखण्ड ऐसा गंतव्य जहां यात्रा किसी भव्य प्रदर्शन पर आधारित नहीं, बल्कि भूमि, लोगों और परंपराओं के साथ गहरे और स्थायी संबंधों पर केंद्रित है। घने वन, जलप्रपातों, जीवंत आदिवासी संस्कृतियों और ऐतिहासिक परिदृश्यों से युक्त राज्य आगंतुकों को विरोधाभास नहीं, बल्कि निरंतरता पर आधारित एक गहन और आत्मीय अनुभव प्रदान करता है। मुख्यतः छोटानागपुर पठार की भौगोलिक संरचना यहां के पर्यटन के स्वरूप को परिभाषित करती है। सड़कों के किनारे फैले जंगल, खुली घाटियों में बसे पारंपरिक गांव और चट्टानों से होकर बहती कल कल नदियाँ जो हुंडरू, दशम, जोन्हा और लोध जैसे छोटे बड़े जलप्रपात पूर्वी भारत के सबसे आकर्षक और मनमोहक जलप्रपातों का निर्माण करती हैं। ऐसे ही राज्य की राजधानी रांची को 'झरनों का शहर', श्रृंखलाबद्ध पहाड़ियों के घिरे नेतरहाट को 'पहाड़ों की रानी' और प्रकृति की गोद में बसे मैक्लुस्कीगंज को 'एंग्लो इंडियन का गांव' यूंही नहीं कहा जाता है।

अब हर सोमवार और शुक्रवार को सरकारी कार्यालयों में होगी जन-सुनवाई

परिवहन विशेष न्यूज

मुख्य सचिव, बिहार सरकार से प्राप्त निदेश के आलोक में जिला पदाधिकारी और पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा संयुक्त प्रेस ब्रीफिंग कर नई कार्य-योजना की जानकारी दी गई।

19 जनवरी 2026 से जिले के पंचायत स्तर से लेकर जिला स्तर तक के सभी कार्यालयों में सप्ताह के दो दिन विशेष रूप से जन-सुनवाई के लिए कार्य होगा।

नई व्यवस्था की मुख्य बातें:

प्रत्येक सप्ताह के सोमवार और शुक्रवार को सभी अधिकारी अपने कार्यालय में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहेंगे।

यह व्यवस्था ग्राम पंचायत, थाना, अंचल, प्रखंड, अनुमंडल और जिला स्तर के सभी सरकारी कार्यालयों पर लागू होगी।

आम नागरिक इन दो दिनों में सीधे अधिकारियों से मिलकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकेंगे।

जिला पदाधिकारी महोदय ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि निर्धारित दिनों पर अधिकारियों की उपस्थिति अनिवार्य है।

अधिकारी आगंतुकों से सम्मानपूर्वक मिलें और उनकी शिकायतों को संवेदनशीलता के साथ सुनकर त्वरित समाधान सुनिश्चित करें।

यदि कोई अधिकारी अपरिहार्य कारणों से अनुपस्थित रहता है, तो उनके द्वारा अधिकृत अन्य पदाधिकारी जनता की समस्याओं को सुनेंगे।

अतिरिक्त प्रभार वाले अधिकारियों को भी समय बांटकर अपने सभी संबंधित कार्यालयों में उपलब्ध रहने का निर्देश दिया गया है।

जन-सुनवाई के दौरान आने वाली जनता की सुविधा का भी विशेष ख्याल रखा गया है। सभी कार्यालयों को निर्देश दिया गया है कि वे आगंतुकों के लिए बैठने की समुचित व्यवस्था करें।

स्वच्छ पेयजल और शौचालय की सुविधा सुनिश्चित करें। एक 'शिकायत पंजी' संधारित करें ताकि शिकायतों के निवारण की मॉनिटरिंग की जा सके।

इस पूरी व्यवस्था की पारदर्शिता और सफलता सुनिश्चित करने के लिए जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी को नोडल ऑफिसर बनाया गया है। वे हर सोमवार और शुक्रवार को कार्यालयों में होने वाली जन-सुनवाई की फोटोग्राफी और रिपोर्ट संकलित कर सीधे जिला पदाधिकारी को सौंपेंगे।

सोशल मीडिया पर उठी पवन खेड़ा को राज्यसभा भेजे जाने की मांग

राज शेखर। नई दिल्ली।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राष्ट्रीय प्रवक्ता पवन खेड़ा को राज्यसभा उम्मीदवार बनाए जाने की मांग इन दिनों सोशल मीडिया पर तेज़ होती दिखाई दे रही है। ट्विटर (एक्स), फेसबुक, इंस्टाग्राम और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर कांग्रेस समर्थक, कार्यकर्ता और कई स्वतंत्र सामाजिक-राजनीतिक टिप्पणीकार लगातार यह सवाल उठा रहे हैं कि पार्टी को इस बार पवन खेड़ा जैसे मुखर और वैचारिक नेता को राज्यसभा भेजना चाहिए।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, हाल के महीनों में सामने आए कई अनौपचारिक सर्वे और आंतरिक आकलनों में पवन खेड़ा का नाम संभावित राज्यसभा उम्मीदवारों में सबसे आगे बताया जा रहा है। समर्थकों का कहना है कि मौजूदा राजनीतिक हालात में कांग्रेस को ऐसे नेताओं की ज़रूरत है जो संसद के उच्च सदन में न केवल सरकार से तीखे सवाल पूछ सकें, बल्कि संवैधानिक मूल्यों, लोकतंत्र और आम जनता के मुद्दों को मजबूती से उठा सकें।

पवन खेड़ा बीते एक दशक से कांग्रेस पार्टी के वैचारिक मोर्चे पर एक सशक्त आवाज़ के रूप में उभरे हैं। टीवी डिबेट्स में उनकी स्पष्ट और तथ्यों पर आधारित शैली, सरकार की नीतियों पर बेबाक आलोचना और विपक्ष की भूमिका को मजबूती से रखने का अंदाज़ उन्हें अन्य नेताओं से अलग पहचान देता है। पार्टी के भीतर भी उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में देखा जाता है, जो कठिन परिस्थितियों में भी संगठन की लाइन को मजबूती से सामने रखते हैं।

सोशल मीडिया पर चल रही मुहिम में यह तर्क प्रमुखता से उभरकर सामने आ रहा है कि पवन खेड़ा ने केवल स्टूडियो डिबेट्स तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि सड़क से लेकर संसद के बाहर तक पार्टी की लड़ाई को आवाज़ दी। चाहे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मुद्दा हो, संवैधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता का सवाल या फिर आम जनता से जुड़े आर्थिक और सामाजिक विषय—पवन खेड़ा लगातार मुखर रहे हैं।

इस चर्चा को और गहराई तब मिली जब समर्थकों ने पवन खेड़ा के उस पुराने बयान को फिर से साझा करना शुरू किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि "तपस्या में कहीं न कहीं कमी रह गई थी।" उस वक्त उनके इस कथन को राजनीतिक विनम्रता और आत्ममंथन के रूप में देखा गया था। आज उनके समर्थक मानते हैं कि उन्होंने अपनी राजनीतिक तपस्या को और अधिक मजबूत किया है और अब वह अनुभव, संघर्ष और वैचारिक परिपक्वता के उस मुकाम पर हैं, जहां उन्हें राज्यसभा जैसे मंच पर देश की आवाज़ बनना चाहिए।

पार्टी कार्यकर्ताओं का यह भी कहना है कि राज्यसभा में पवन खेड़ा की मौजूदगी कांग्रेस को बौद्धिक और वैचारिक मजबूती देगी। उनका मानना है कि जिस तरह से सत्तारूढ़ दल संसद के भीतर आक्रामक रणनीति अपनाता है, उसके जवाब में कांग्रेस को भी ऐसे वक्ताओं की ज़रूरत है जो तथ्यों, तर्कों और संवैधानिक मूल्यों के आधार पर प्रभावी हस्तक्षेप कर सकें।

हालांकि, कांग्रेस नेतृत्व की ओर से राज्यसभा उम्मीदवारों को लेकर अब तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। लेकिन जिस तरह से सोशल मीडिया पर पवन खेड़ा के समर्थन में लगातार आवाज़ बुलंद हो रही है, उससे यह साफ़ है कि यह केवल डिजिटल शोर नहीं, बल्कि पार्टी के भीतर और बाहर मौजूद एक व्यापक भावना का प्रतिबिंब है।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि आने वाले दिनों में राज्यसभा उम्मीदवारों को लेकर होने वाले फैसलों में इस जनभावना का असर ज़रूर देखने को मिल सकता है। फिलहाल इतना तय है कि पवन खेड़ा को राज्यसभा भेजे जाने की मांग ने राजनीतिक गलियारों में नई बहस छेड़ दी है और यह मुद्दा आने वाले समय में और अधिक सुर्खियों में रहने वाला है।

विधायक डॉ अजय गुप्ता की पत्नी स्व. रेणू गुप्ता की आत्मिक शांति के लिए हुई श्रद्धांजलि सभा: अलग-अलग वर्ग के लोगों ने पारिवारिक सदस्यों संग जताया शोक

अमृतसर,16 जनवरी (साहिल बेरी)

केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र अमृतसर से विधायक डॉ अजय गुप्ता की धर्मपत्नी रेणू गुप्ता का 13 जनवरी की रात को अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर प्रभु चरणों में विलीन हो गई थी।स्व. रेणू गुप्ता की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए श्रद्धांजलि सभा आज शुक्रवार को दोपहर 2:00 बजे से 3:00 बजे तक मालिबू गार्डनस, वेरका-मजीठा बायपास रोड अमृतसर में संपन्न हुई। श्रद्धांजलि सभा में हजारों की संख्या में लोगों ने पारिवारिक सदस्यों के साथ शोक व्यक्त किया।

श्रद्धांजलि सभा में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान द्वारा भेजा गया शोक संदेश पढ़ा गया। आज प्रार्थना सभा में आम आदमी पार्टी के पंजाब इंचार्ज व दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया, आम आदमी पार्टी पंजाब के कार्यकारी प्रधान एवं विधायक शैरी कलसी, विधायक डॉ इंद्रबीर सिंह निज्जर, विधायक जसबीर सिंह संधू, विधायक जीवनजोत कौर,विधायक कुंवर विजय प्रताप सिंह, पुलिस कमिश्नर अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर, मेयर जरनैल सिंह ढोट,कांग्रेसी पार्षद विकास सोनी,आप जिला प्रधान प्रभजोत सिंह बराड़ , आम आदमी पार्टी के पदाधिकारी नगर निगम, पावर कॉम, प्रशासनिक,पुलिस, सिविल अधिकारियों और राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने गहरा दुख व्यक्त किया है।

विधायक डॉ अजय गुप्ता के घर आकर पंजाब सरकार के कैबिनेट मंत्री एवं आम आदमी पार्टी के पंजाब प्रधान अमन अरोड़ा, कैबिनेट मंत्री हरभजन सिंह ई टी ओ,कैबिनेट मंत्री डॉ राजकुमार वेरका, पूर्व कैबिनेट मंत्री अनिल जोशी, पूर्व पूर्व चीफ पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी डॉ नवजोत कौर सिद्धू, पूर्व विधायक सुनील दत्ती, पूर्व डिप्टी स्पीकर प्रोफेसर दरबारी लाल, डिप्टी मेयर अनीता रानी के पुत्र तरुणवीर कैंडी, पार्षद जितेंद्र सिंह मोती भाटिया, पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ राजकुमार वेरका, पूर्व कैबिनेट मंत्री अनिल जोशी, पूर्व पूर्व चीफ पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी डॉ नवजोत कौर सिद्धू, पूर्व विधायक सुनील दत्ती, पूर्व डिप्टी स्पीकर प्रोफेसर दरबारी लाल, डिप्टी मेयर अनीता रानी के पुत्र तरुणवीर कैंडी, पार्षद इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू व अन्य गणमान्य लोगों ने शोक व्यक्त किया।

बरेली ट्रेड यूनियंस फेडरेशन के 22 वर्ष पूरे 'नई श्रम संहितायें: मजदूर वर्ग पर हमला' विषयक विचार गोष्ठी

मजदूर विरोधी श्रम संहिताओं के खिलाफ संघर्ष का ऐलान

भूपेंद्र सारस्वत,'सारथी')

केंद्र की मोदी सरकार ने 21 नवंबर 2025 को चार लेबर कोड्स लागू कर दिए हैं। देशभर की दस बड़ी केंद्रीय ट्रेड यूनियंस ने इनका खुला विरोध किया है। इसी क्रम में बरेली ट्रेड यूनियंस फेडरेशन द्वारा 18 जनवरी को रोटरी भवन में सुबह 11 बजे से विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता बी टी यू एफ के अध्यक्ष मुकेश सक्सेना ने की। कार्यक्रम की शुरुआत प्रगतिशील सांस्कृतिक मंच द्वारा प्रस्तुत जोशीले गीतों से हुई।

गोष्ठी की शुरुआत में बी टी यू एफ के महामंत्री संजीव मेहरोत्रा ने बरेली ट्रेड यूनियंस फेडरेशन के 22 साल पूरे होने पर इसके इतिहास और शहर में की गई गतिविधियों, विरोध प्रदर्शनों और सामाजिक सरोकार के विषय में बताया। उन्होंने कहा फेडरेशन ने अपनी स्थापना के बाद से ही मजदूरों- कर्मचारियों के मुद्दों पर बरेली शहर में व्यापक एकता बनाने की लगातार कोशिश की है। आज जब श्रम संहिताओं को लागू कर मज़दूरों/कर्मचारियों के हितों पर हमला किया जा रहा है तब हमें और व्यापक एकजुटता कायम कर संघर्ष को आगे बढ़ाना होगा।

बी टी यू एफ के उपाध्यक्ष ध्यान चन्द्र मौर्य ने मजदूर आंदोलनों और श्रम कानूनों के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जब मजदूर वर्ग राजनीतिक तौर पर सजग था और संघर्ष कर रहा था तो उसके हित में कई कानून बने। यहां तक कि अंग्रेजों के दौर में भी उन्हें मजदूर हितों के कानून बनाने को मजबूर किया गया। लेकिन मौजूदा मोदी सरकार मजदूर हित में बने श्रम कानूनों को खत्म कर, नई श्रम संहिताओं को लागू कर, मज़दूरों को फिर से गुलामी के दौर में धकेलना चाहती है। हमें मजदूर वर्ग की व्यापक एकता कायम कर इसका मुकाबला करना होगा।

मुख्य वक्ता आल इंडिया इंश्योरेंस इम्प्लाइज एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष अमान उल्ला खान, जो बैंगलोर से पधारे थे, ने अपने लंबे संबोधन में चार लेबर कोड्स की कड़ी खिलाफत की। उन्होंने इनके लागू होने से संगठित और असंगठित क्षेत्र के कामगारों को होने वाली दुश्वारियों को समझाया। उन्होंने कहा इन संहिताओं में मजदूरों के लिए यूनियन बनाना और हड़ताल करना लगभग असंभव बना दिया गया है। काम के घंटे बढ़ाने और न्यूनतम वेतन को गिराने की कोशिश की गई है। आने वाले समय में पूरे देश में इन मजदूर विरोधी श्रम संहिताओं का मुखर विरोध होना ही है। इसके लिए हमें इस विषय की जानकारी होना जरूरी है। जिस तरह किसानों ने लंबी लड़ाई के बाद काले कृषि कानूनों को वापस कराया। उसी तरह देश के मजदूरों- कर्मचारियों को भी लंबी लड़ाई की तैयारी करनी होगी। इसी कड़ी में देश के 50 करोड़ मेहनतकश 12 फरवरी को सड़क पर उतर कर इन चार लेबर कोड्स का कड़ा प्रतिरोध करेंगे।उन्होंने कहा रास्ता हमें ही निकालना होगा, उन्होंने कहा सरकार पूंजिपतियों पर वेल्थ टैक्स और इन्हेरेंट टेक्स लगाना चाहिए।

गोष्ठी में सर्व श्री डॉ अंचल अहेरी,गीता शांत, जितेंद्र मिश्रा, नवींद्र कुमार, सलीम अहमद, रजनीश तिवारी, राजेंद्र सिंह, हरि शंकर, के पी सिंह, अरविंद देव सेवक, कैलाश, टी डी भास्कर, मिशन पाल सिंह आदि ने भी विचार रखे। गोष्ठी का संचालन बी टी यू एफ के उप महामंत्री ललित चौधरी ने किया।

गोष्ठी में देव सिंह, डॉ. मुनीश गंगवार, चरण सिंह यादव, मोहित देवल, हिमांशु सिंह, पुष्पा गंगवार, दिशा, निशा, रुचिका वर्मा, मो. फैसल, एड. यशपाल सिंह, एड. ऋषिपाल सिंह, सुरेंद्र प्रजापति, डॉ. रजनीश गंगवार, जगपाल भाटी, हरचरण लाल गंगवार, रवि कुमार, संदीप सिंह, मनोज गुप्ता, भगवान दास, उपेश मौर्य, जमुना देवी, रीना कोरी, अर्चना कुमारी, राशिदा सूरी, सौरभ शर्मा, सर्वेश मौर्य, राहुल गौड़, राकेश कन्नौजिया, दीपक मेहरा, हरगोविंद मौर्या, सुनील गौतम सहित कई अन्य साथी मौजूद रहे।

आप" सरकार के प्रयासों से गांव गुमटाला में 70 वर्षों बाद पहली बार पहुंचेगा सरकारी पीने का पानी: जसबीर सिंह संधू

अमृतसर (साहिल बेरी)

आम आदमी पार्टी के अमृतसर पश्चिमी हलके से विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू और नगर निगम अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया द्वारा वार्ड नंबर 2 के अंतर्गत आने वाले गांव गुमटाला में पीने के पानी की पाइपलाइन बिछाने के कार्य का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर वार्ड काउंसलर अमरजीत सिंह सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी मौजूद रहे।

इस मौके पर विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने कहा कि भारत को आज़ाद हुए 70 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन गांव गुमटाला जैसे इलाके अब तक सरकारी पीने के पानी की सुविधा से वंचित रहे। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों ने कभी भी इस बुनियादी समस्या की ओर ध्यान नहीं दिया, लेकिन "आप" सरकार ने सत्ता में आते ही जनता की मूलभूत जरूरतों को प्राथमिकता दी है। उन्होंने बताया कि 70 वर्षों के बाद पहली बार गांव में पानी की पाइपलाइन बिछाई गई है और जल्द ही इन्हें ट्यूबवेल से जोड़कर सरकारी पानी की सप्लाई शुरू कर दी जाएगी।

मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने कहा कि गांव गुमटाला के लोगों की यह बहुत पुरानी मांग थी, जिसे अब "आप" सरकार ने पूरा कर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि साफ और शुद्ध पीने का पानी हर नागरिक का अधिकार है और नगर निगम इस प्रोजेक्ट को तय समय सीमा में पूरा करने के लिए पूरी गंभीरता से कार्य कर रहा है। ट्यूबवेल से जोड़ने के बाद गांव के हर घर तक नियमित पानी की सप्लाई सुनिश्चित की जाएगी।

अंत में विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने कहा कि "आप" सरकार का मुख्य उद्देश्य जनता को बुनियादी सुविधाएं उनके दरवाजे तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि अमृतसर पश्चिमी हलके के हर वार्ड और गांव में विकास कार्य तेज़ी से करवाए जा रहे हैं और आने वाले समय में पानी, सड़क, सीवरेज और सफाई जैसे मुद्दों को और अधिक प्राथमिकता दी जाएगी। उन्होंने क्षेत्रवासियों को आश्वासन दिया कि "आप" सरकार जनता से किया गया हर वादा पूरी ईमानदारी से पूरा करेगी।

इस अवसर पर वरिंदरजीत सिंह बेदी पट्टी वाले,पश्चिमी हलके के संगठन इंचार्ज हरप्रीत सिंह बेदी, ब्लॉक प्रधान जनक राज जोशी, तरसेम कल्याण, लाड़ी सहोता, पीए माधव शर्मा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बृज यातायात एवं पर्यावरण समिति कड़ाके की ठंड में बांट रही कंबल

पिछले 15 दिनों से समिति लोगों को कड़ाके की ठंड में कंबल बांट रही है संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित

परिवहन विशेष न्यूज

बृज यातायात एवं पर्यावरण जनजागरूकता समिति रजि उत्तर प्रदेश की कंबल वितरित सेवा पिछले 1 जनवरी 2026 से 17 जनवरी 2026 तक लगातार गरीब और असहाय लोगों को कंबल वितरित किये जा रहे हैं । संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने बताया है कि हमारी संस्था इस कड़ाके की ठंड में लगातार कंबलों का वितरण लोगों को अलग-अलग स्थान पर किया जा रहा है । हमारी संस्था का स्लोगन है जिंदगी अनमोल है इससे बचना हम सबकी जिम्मेदारी इसी के अंतर्गत पूरे साल भर अलग-अलग तरह के कार्यक्रम लोगों की जरूरत के हिसाब से किए जाते हैं । महिला महिला प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा ने कहा हम लोग इस कड़ाके की ठंड में लोगों को लगातार अपनी संस्था के माध्यम से मदद कर रही है इसमें महिला टीम भी अपनी सहभागिता निभा रही है। । आज देर रात हमारी टीम ठंड से बचने के लिए जगह-जगह पर जाकर जरूरतमंद लोगों को कंबल दिए हैं यह हमारा अभियान लगातार जारी रहेगा ।

अमृतसर ग्रामीण पुलिस की बड़ी कार्रवाई — नशा तस्करी गिरोह का भंडाफोड़, 03 आरोपी गिरफ्तार, भारी मात्रा में हेरोइन और अत्याधुनिक हथियार बरामद

अमृतसर, 16 जनवरी (साहिल बेरी)

माननीय मुख्यमंत्री पंजाब एवं माननीय डीजीपी पंजाब द्वारा नशा माफिया को जड़ से खत्म करने के लिए जारी सख्त दिशा-निर्देशों के तहत, श्री संदीप गोयल, आईपीएस, डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस, बॉर्डर रेंज तथा श्री सुहेल मीर, आईपीएस, सीनियर सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस, अमृतसर ग्रामीण के नेतृत्व में अमृतसर ग्रामीण पुलिस द्वारा नशा तस्करी के खिलाफ एक बड़ी, निर्णायक और सुनियोजित कार्रवाई करते हुए एक अंतरराज्यीय नशा तस्करी गिरोह का पर्दाफाश किया गया है।

गिरफ्तार आरोपी:

अजुल अरोड़ा पुत्र अनिल अरोड़ा, निवासी बाग रामा आनंद, गली नंबर 3, स्टार बुटीक, घी मंडी, अमृतसर।

दिलप्रीत कौर पत्नी सुखजीत सिंह, निवासी बाबा दर्शन सिंह एवेन्यू।

प्रथम शर्मा पुत्र राजीव कुमार, निवासी गांव महल।

स्पेशल सेल अमृतसर ग्रामीण की टीम ने सबसे पहले आरोपी अजुल अरोड़ा को गिरफ्तार किया। इस संबंध में थाना लोपोके में मुकदमा नंबर 08 दिनांक 06.01.2026 धारा 21(सी), 25, 29, 61, 85 एनडीपीएस एक्ट तथा 25(8), 54, 59 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया।

गिरफ्तार आरोपी की तलाशी के दौरान उसके कब्जे से:

04 किलो 863 ग्राम हेरोइन

02 पिस्टल (9 एमएम)

10 जिंदा कारतूस

बरामद किए गए।

अजुल अरोड़ा से गहन पूछताछ के दौरान उसके अन्य साथियों के बारे में अहम जानकारियां सामने आईं, जिसके आधार पर पुलिस ने दिलप्रीत कौर और प्रथम शर्मा को भी गिरफ्तार किया।

इनकी गिरफ्तारी के बाद आगे की कार्रवाई में पुलिस ने:

02 PX5 पिस्टल

01 पंप एक्शन राइफल (12 बोर)

45 जिंदा कारतूस (12 बोर)

01 स्प्रिंगफील्ड राइफल

25 जिंदा कारतूस

04 जिंदा कारतूस (.30 बोर)

बरामद किए।

तफ्तीश के दौरान नामजद आरोपी:

अभिराज सिंह उर्फ अब्बी महल पुत्र सुखजीत सिंह, निवासी बाबा दर्शन सिंह एवेन्यू, घनूपुर, काले, छेहर्टा।

नंदनी शर्मा पुत्री राजीव कुमार, निवासी जट्टों के गुरुद्वारे के पास, गांव महल।

सतबीर सिंह उर्फ सत्ता नौशहरा (फरार)

कुल बरामदगी:

हेरोइन: 04 किलो 863 ग्राम

पिस्टल: 04 (02 पिस्टल 9 एमएम और 02 PX5 पिस्टल)

राइफलें: 02 (01 पंप एक्शन राइफल 12 बोर, 01 स्प्रिंगफील्ड राइफल)

जिंदा कारतूस: 84

10 (9 एमएम)

45 (12 बोर)

25 (स्प्रिंगफील्ड)

04 (.30 बोर)

वाहन: 02 (एक आई-20 और एक होंडा सिटी)

अपराधिक रिकॉर्ड:

सतबीर सिंह उर्फ सत्ता नौशहरा के खिलाफ विभिन्न धाराओं में 19 मुकदमे दर्ज हैं।

अभिराज सिंह उर्फ अब्बी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में 15 मुकदमे दर्ज हैं।

प्रथम शर्मा के खिलाफ दर्ज मुकदमा:

मुकदमा नंबर 166/25, धारा 21-बी/27-ए/29/62/85 एनडीपीएस एक्ट, थाना छेहर्टा।

नामजद और अन्य संभावित आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है। इस मामले के फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंक की गहराई से जांच जारी है। जांच के दौरान जो भी व्यक्ति नशा तस्करी से जुड़ा पाया जाएगा, उसके खिलाफ कानून के अनुसार सख्त से सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023